पुस्तिका दस

सितम्बर 2020

जनवरी 2011 से दिसम्बर 2011

सम्भव है

कुछ प्रस्थान बिन्दु मिलें।

सहयोग : पाँच–दस–बीस रुपये।

यूरोप में उथल-पुथल

– लन्दन में काम करता एक मजदूर

डगमग रुपये-पैसे की व्यवस्था, सरकारों पर बढते कर्ज, कटौतियों वाले कदम, आम हड़तालें, उग्र प्रदर्शन..... 2010 के अन्तिम महीनों में यूरोप में सामाजिक उथल-पुथल उस स्तर तक पहुँच गई जो कि 40 वर्ष के दौरान देखा नहीं गया था।

2008-अन्त में विश्व मण्डी हिल गई थी। यूरोप में सरकारों ने हमें बताया था कि यह अमरीका में बैंकों की ही समस्या थी जिन्होंने उन लोगों को सस्ती दर पर कर्जे दिये थे जो कि उन्हें लौटाने में असमर्थ थे। हम ने अमरीका में मध्यम वर्ग के लोगों को नौकरी तथा घर खोते और नतीजतन तम्बुओं में रहते देखा। मकान खाली रहे क्योंकि उन में रहने का खर्च उठाने वाले नहीं रहे। नई कारों के ढेर लग गये क्योंकि ऋण के बिना कोई उन्हें खरीद नहीं सकती-सकता था। और हम ने सोचा कि यह सिर्फ अमरीका वालों की समस्या थी।

संकट ने कुछ विश्व स्तर की कम्पनियों, विशेषकर वाहन उद्योग वालियों को जकड़ में ले लिया। अक्टूबर 2008 और फरवरी 2009 के बीच जर्मनी में करीब 8 लाख अस्थाई मजदूरों की नौकरियाँ छूटी पर साहबों के लिये इसे छँटनी कहना आवश्यक नहीं। यूनियनों की सहमति तथा सरकार से आर्थिक सहायता के द्वारा स्थाई मजदूरों की तनखा में कुछ कमी कर कम समय काम करवाया गया। फ्रान्स में नौकरी छूटने की क्षतिपूर्ति के लिये मजदूरों ने मैनेजरों को कार्यालयों में बन्द किया और फैक्ट्रियों को उड़ा देने की धमकियाँ दी..... पर सामान्यतः लगा कि संकट की पहली लहर से यूरोपवासी बच गये हैं।

2009 के दौरान यह साफ-साफ दीखने लगा कि अमरीकी बैंक ही नहीं, बल्कि यूरोप के सब बड़े बैंक भी कर्ज के धन्धे में शामिल थे। हमें कहा गया कि बैंकों के उच्च अधिकारी लालची थे पर अर्थव्यवस्था को बचाने के लिये सरकारों के लिये बैंकों को बचाना जरूरी था। यूरोप में सरकारों पर कर्ज बढे। सन् 2010 में यूनान की सरकार ने घोषणा की कि ऋण लौटाने में उसे कठिनाईयाँ होंगी। यूरोप के केन्द्रीय बैंकों ने यूनान सरकार को पैसे दिये। जर्मनी में हमें कहा गया कि यह यूनानियों की ही समस्या थी क्योंकि वे बहुत पहले, यानी 59 वर्ष की आयु में ही सेवानिवृत हो जाते हैं और सरकार को उन्हें पेन्शन देनी पड़ती है। जर्मनी में रेडियो-टी वी-अखबारों ने पूछा, ''यूनानियों के लिये हम भुगतान क्यों करे ?'' यूनान में रेडियो-टी वी-अखबारों ने जर्मनी सरकार और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष पर आरोप लगाये कि वे यूनान सरकार को कर्ज के बदले खर्च में कटौतियों के लिये ''मजबूर'' कर रहे हैं।

दुख की पंक्ति में अगले देश आयरलैण्ड और स्पेन थे। निर्माण, पर्यटन और अन्य क्षेत्रों के धराशायी होने से स्पेन में बेरोजगारी बढ कर 20 प्रतिशत हो गई। इस बार साहबों को सरकारों के भारी कर्जों को समझाने में अधिक कठिनाईयाँ हुई। सन् 2000 से आयरलैण्ड अर्थव्यवस्था में उछाल वाला देश था और वहाँ बेहतर वेतन पाने के लिये जर्मनी से काफी युवा गये थे। ऐसे में यूरोप में सरकारों को घोषणा करनी पड़ी की ऋण संकट सब सरकारों पर दुष्प्रभाव डाल रहा है और कि मुद्रा व्यवस्था के तौर पर यूरो खतरे में है। साहब लोग कहने लगे कि हम सब को पैसे बचाने होंगे और अधिक समय-अधिक आयु तक काम करना होगा। साहबों ने मजदूरों की उस पीढी को यह कहा जो यह मानेगी ही नहीं क्योंकि इन बीस वर्षों में हम ने तनखायें घटती देखी हैं, स्थाई नौकरियों का स्थान अस्थाई नौकरियाँ लेती आई हैं, काम का बोझ बढता रहा है — तो, अब हम गहराते संकट में क्यों हैं ?

2010 आते-आते यूरोप में सब सरकारों ने व्यय में कटौतियों की घोषणायें की : सेवानिवृति की आयु में वृद्धि, सरकारी क्षेत्र के वरकरों के वेतन में कमी, विश्वविद्यालयों में फीस वृद्धि, बेरोजगारी भत्ते में कटौती आदि। इंग्लैण्ड में सरकारी क्षेत्र में 5 लाख नौकरियाँ समाप्त करने की घोषणा जिससे 5 लाख अन्य नौकरियाँ खत्म होंगी; बेरोजगारों से भत्ते में ही (वेतन दिये बिना) काम करवाया जायेगा; विद्यालयों में गरीब छात्रों को यातायात, पुस्तकों आदि के लिये आर्थिक सहायता बन्द की जायेगी। आयरलैण्ड में सरकार ने न्यूनतम वेतन में 10 प्रतिशत कटौती की घोषणा की। कई सरकारों ने अपनी सीमाओं को प्रवासी मजदूरों के लिये अधिक सख्ती के साथ बन्द करने की घोषणायें की।

यूरोप में संसदों, कम्पनी मुख्यालयों और स्टॉक एक्सचेंजों (सट्टा बाजारों) की दुनियाँ में भय का माहौल है। बचत-कटौती वाले कदम सरकारों तथा यूरो मुद्रा की विश्वसनीयता में ''मार्केट'' के भरोसे की पुनः स्थापना के लिये हैं। लेकिन लगता है कि इन कदमों का परिणाम आम जन द्वारा सरकारों में भरोसा

खोना है। प्रदर्शनों, हड़तालों, पुलिस के संग टकरावों, सरकारी इमारतों पर आक्रमणों की तस्वीरों से समाचार भरे हैं।

सितम्बर के दौरान फ्रान्स में कई एक दिवसीय आम हड़तालें, स्पेन में 29 सितम्बर को आम हड़ताल, पुर्तगाल में 24 नवम्बर को आम हड़ताल, इंग्लैण्ड में 10 नवम्बर को छात्रों का विशाल प्रदर्शन, इटली में छात्रों ने 27 नवम्बर को अधिकतर बड़े शहरों को बन्द किया, आयरलैण्ड के इतिहास में 27 नवम्बर को सबसे बड़ा प्रदर्शन, यूनान में 15 दिसम्बर को एक और आम हड़ताल........

फ्रान्स में दस लाख से ज्यादा लोग सड़कों पर थे पर आम हड़ताल में वास्तविक हिस्सेदारी 20 प्रतिशत के करीब थी और वह भी सिर्फ सरकारी क्षेत्र में। संगठन के कुछ नये स्वरूप दिखे : भिन्न पेशों की संयुक्त आम सभायें, सड़कों और रेलपटरियों को जाम करना। खाली स्थानों पर दिन-भर मस्ती करते, खाते-पीते, बातें करते, संगीत के मजे लेते लोग। हड़तालें अलग-अलग क्षेत्रों के मजदूरों को साथ लाई लेकिन..... पेरिस में कूड़ा उठाने वाले सरकारी कर्मचारी हड़ताल पर थे जबकि कम्पनियों के कूड़ा उठाने वाले कर्मचारी हड़ताल में शामिल नहीं हुये। ऐसे में कुछ मजदूरों ने कूड़ा जलाने के ठिकानों के रास्ते रोके। कूड़े के ढेर लगे पर यह मजदूरों के बीच विभाजन से पार नहीं पा सका। सरकार ने काम पर नहीं लौटने पर जेल की धमकी दी।

स्पेन में युवा बेरोजगारों की बढती सँख्या और सरकारी क्षेत्र के कर्मचारियों के बीच विभाजन और भी चौड़ा लगता है। जब आम हड़ताल का आह्वान किया गया तब सरकारी कर्मचारियों पर विशेषाधिकार प्राप्त वरकर होने का आरोप सरकार ने लगाया। स्पेन की समाजवादी सरकार ने परिवहन, चिकित्सा, कूड़ा एकत्र करने वाले सरकारी विभागों में न्यूनतम आवश्यक कार्य जारी रखने पर जोर दिया, जुर्माने की धमकी दी। सरकारी क्षेत्र के वरकरों ने कुछ दिन धमकियों को अनसुना किया पर फिर यूनियन ने सरकार की माँग स्वीकार कर ली। वायुसेवा नियन्त्रकों ने हड़ताल की तो स्पेन सरकार ने वायु सेना बुला ली.....

इंग्लैण्ड में कटौतियों की घोषणा से हर किसी को आघात लगा था पर आम विरोध के लिये कोई आह्वान नहीं हुआ। कटौतियाँ स्थानीय स्तर पर लागू की जाती हैं : दक्षिण लन्दन स्थित एक विद्यालय के 200 अध्यापकों में से 16 को निकालना। यूनियन ने कहा कि वह "जबरन निकालना" स्वीकार नहीं करेगी पर यह कहने के अलावा उसने और कुछ नहीं किया यह कहते हुये कि वैधानिक परिस्थितियों में कुछ नहीं किया जा सकता। विद्यालय प्रबन्धन ने दबाव बनाया : कई वर्षों से पढा रहे हर शिक्षक को एक "परीक्षा" देनी होगी...... दबाव के परिणामस्वरूप 16 अध्यापकों ने "स्वेच्छा से सेवानिवृति" ले ली। मेरे कार्य क्षेत्र, कचरा एकत्र करने वाले 9 ट्रकों में से 2 ट्रक प्रबन्धन ने हटा दिये, बचे 7 ट्रकों और मजदूरों द्वारा अतिरिक्त काम करना..... 10 अस्थाई मजदूरों को बुलाना बन्द कर देंगे और यह खबर भी नहीं बनेगी। पर फिर एक छोटा आश्चर्य हुआ। छात्र यूनियन ने विश्वविद्यालय फीस बढाने के विरोध में 10 नवम्बर को प्रदर्शन का आह्वान किया। (पढाई पूरी करते-करते अधिकतर छात्र 7-15 लाख रुपये के कर्ज में हो जाते हैं)। पहलेपहल यह सामान्य प्रदर्शन लगा : कुछ नेताओं के भाषण, रूट पर हाँकते छोटे नेता, नारे। लेकिन फिर कई हजार छात्रों ने प्रदर्शन का आधिकारिक रास्ता छोड़ कर शासक पार्टी की इमारत को घेर लिया। खिड़कियाँ तोड़ी, कार्यालयों और छत पर कब्जा, ठण्ड में जगह-जगह आग जला कर उसके इर्द-गिर्द नाचना-गाना। पुलिस चकित थी, सरकार खार खाये। छात्र यूनियन प्रधान ने "उग्र अल्पसँख्या" पर आरोप लगाया। इस मामले ने विद्यालय तथा विश्वविद्यालय छात्रों को कुछ ताजगी दी। लेकिन फिर फीस वृद्धि के विरोध में दस-बीस हजार छात्रों वाले 30-40 विश्वविद्यालयों में 300-500 छात्र ही सक्रिय रहे.....परन्तु विद्यालय छात्रों पर नियन्त्रण मुश्किल। स्कूल छात्रों की आर्थिक सहायता में तो कटौती की ही गई है पर वैसे भी वे गुस्से में हैं। विद्यालय छात्र मुख्यतः इन्टरनेट और मोबाइल फोन के जरिये संगठित होते हैं — चाणचक्क प्रदर्शन की सूचना के लिये बनी वैब-साइट से 85,000 जुड़े। प्रदर्शन के दिन वे एक कक्षा से दूसरी कक्षा में जाते हैं, स्कूल गेट पर ताला लगा होने पर दीवार फान्द कर निकलते हैं, विश्वविद्यालय छात्रों को बुलाने जाते हैं। पुलिस उन से निपट नहीं पा रही क्योंकि कोई भाषण नहीं, कोई छुटभैया नेता हाँकने के लिये नहीं, कोई निर्धारित रूट नहीं। पहले प्रदर्शन के समय हजारों विद्यालय छात्रों को जमा देने वाली ठण्ड में 6-9 घण्टों के लिये खुले में बाड़ों में बन्द करने में पुलिस सफल रही थी। पुलिस को आशा थी कि आगे से वे नहीं आयेंगे। लेकिन अगली बार के प्रदर्शन के दौरान पुलिस के सामने आते ही कई हजार के समूहों में स्कूल छात्र भिन्न-भिन्न दिशाओं में दौड़ पड़े। वे लन्दन की मुख्य सड़कों पर दौड़े जो कि सामान्यतः कारों और खरीददारों के लिये आरक्षित होती हैं। जब छात्रों ने राजकुमार चार्ल्स की कार को देखा तो उस पर आक्रमण किया। विद्यालय छात्रों में से कुछ चिल्ला रहे थे, "हम लन्दन की गन्दी बस्तियों से हैं" जबकि कुछ विश्वविद्यालय छात्र हाथों में "मैं कूड़ा उठाने वाला नहीं बनना चाहता" लिखा लिये थे। राजनीतिक पार्टियों के नारों और झण्डों की बजाय गत्तों पर कुछ ऐसा लिखा देखा, "मैं चाहता हूँ कि कुछ

सुन्दर कहूँ, पर मैं कह नहीं सकती'', बड़े अक्षरों में ''यह कोई अच्छा साइन (लक्षण) नहीं है।''

स्थानीय परिषदों को अलग से घोषणा करनी हैं कि कहाँ पैसों की कटौती की जायेगी, कहाँ से मजदूरों को निकालना है। आजकल इन स्थानीय संसदों की मीटिंगों में विरोध करने वालों को व्यवधान डालने से रोकने के लिये इनकी सुरक्षा सैंकड़ों पुलिसवालों को करनी पड़ रही है। कुछ राजनीतिज्ञ कहते हैं, ''आप जनतन्त्र के खिलाफ कदम उठा रहे हैं।'' अखबार-रेडियो-टी वी ''जनतन्त्र के लिये कटौतियाँ स्वीकार करो। चुनी हुई सरकार है।'' वाली बातें अधिकाधिक कह रहे हैं।

इंग्लैण्ड में प्रदर्शनों की तस्वीरें यूरोप में घूमी। कुछ दिन बाद इटली में छात्रों ने सरकारी इमारतों पर कब्जे किये। मजदूर बस्तियों के लोगों ने पुलिस को दूर रखने में छात्रों की सहायता की। छात्र घोषणा कर रहे थे, ''लन्दन बुला रहा है और हम उत्तर दे रहे हैं।'' अगले सप्ताह छात्रों और मजदूरों ने यूनान में सरकारी इमारतों पर कब्जे कर लिये, पुलिस से भिड़न्तें होने लगी.....

बड़े प्रदर्शनों के बावजूद विभिन्न संसदों ने व्यय कम करने के पक्ष में मतदान किये हैं। बड़ा पैमाना और कुछ हद तक ''प्रतीकात्मक'' विरोध ''प्रतीकात्मक'' मतों को रोक नहीं पाये हैं। संघर्ष को स्वयं को दैनिक स्तर पर व्यक्त करने के लिये राहें ढूँढनी होंगी......... रेडियो-टी वी-अखबार और सामाजिक वैज्ञानिक चकित हैं : ''यह युवा लोग कौन हैं? और, यह इतने गुस्से में क्यों हैं? क्या यह फीस में वृद्धि अथवा पैसों में कमी मात्र के कारण हैं?''

यह एक पीढी है जिसने इस संकट में अपना यह भ्रम खो दिया है कि निजी प्रयास का परिणाम अच्छा भविष्य होगा। कई दशकों से विश्व-भर में माहौल व्यक्ति पर निजी दबाव का रहा हैः परीक्षायें, अल्प अवधि की नौकरियाँ, निजी कर्जे।

अमरीका में गिरवी रखे घर हों चाहे आन्ध्र प्रदेश में अति अल्प मात्रा वाले ऋण : उद्योग तथा सरकार के लगातार बड़े होते तन्त्र एक तरफ हैं और दूसरी तरफ है उन लोगों का नीचे गिरता जीवन स्तर जिन लोगों का काम इन तन्त्रों को गतिशील रखता है। ऋण (अच्छे) भविष्य की बदहवास आशा की एक अभिव्यक्ति हैं : जब मुनाफा-बिक्री गड़बड़ होते हैं तब मैनेजमेन्ट-मार्केट-राजनीतिज्ञ समय पाने के लिये कर्जे लेते हैं। वे आशा करते हैं कि अधिक टैक्नोलॉजी-अधिक उत्पादन-कम मजदूर-तनखाओं में कमी भविष्य में ''सम्पन्नता'' वापस लायेंगी और कर्जे तब तक धन्धे को चालू रखेंगे। जबकि, साहबों के इन ''पुनर्गठनों'' के कारण बेरोजगारी बढ र ही है, वेतन घट रहे हैं और तनखा में कमी की पूर्ति के लिये कर्जे लेने को मजदूर मजबूर हो रहे हैं। मजदूरों द्वारा लिये जाते ऋण का एक हिस्सा शुद्ध आवश्यकता है, जबकि कर्ज का दूसरा भाग निजी आशा का है कि निकट भविष्य में बेहतर नौकरी मिल जायेगी ; कि शिक्षा पूरी करने के बाद बच्चे को अच्छी नौकरी मिल जायेगी। निर्भरता की एक अभिव्यक्ति हैं कर्जेः ये हमें दौड़ाते रहते हैं, ब्याज की दरें हमें अधिक तेज दौड़ाती रहती हैं, ये व्यवस्था को चालू रखते हैं हालांकि हर चीज — थके शरीर, पीड़ित-दुखी मित्रतायें, प्रदूषित प्रकृति — रुकने के लिये चीख रही है।

इस पैमाने पर पिछली बार व्यवस्था को डगमगाते देखा गया था तब संकट ने यूरोप में सरकारों को मानवों तथा उद्योग के व्यापक विनाश को मजबूर किया था (1939-1945 की महा मारकाट)। वह-यह साहबों की राह थी-है......... हमें एक अलग राह तलाशनी होगी। यूरोप में कुछ संघर्ष हमें आशा प्रदान करते हैं। ''रोज की दौड़-भाग'' में संकट द्वारा पैदा ''जबरन रुको-और-जाओ'' व्यवधान डाल रहा है। यह हमें साथ ला सकता है एक भिन्न समाज, बिना रुपये-पैसे वाले समाज को ढूँढने-पाने-बनाने में, जहाँ हम मिल कर तय करें कि क्या चाहिये और कैसे उसे प्राप्त करना है।■

कार्यस्थलों पर

★ ***मेदान्त दी मेडिसिटी मजदूर :*** '' झाड़सा रोड़, राजीव चौक पर स्थित जमीन से नीचे 4 मंजिल और ऊपर 16 मंजिल के 1250 बिस्तर वाले अस्पताल में हाउसकीपिंग, जनरल ड्युटी असिस्टेन्ट, सेक्युरिटी गार्ड, ड्राइवर, नाई, धोबी को ठेकेदारों के जरिये रखा है। हाउसकीपिंग में कहने को 8-8 घण्टे की तीन शिफ्ट हैं, अधिकतर वरकर रोज 16 घण्टे डयुटी करते हैं, तनखा 4348 रुपये और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। जनरल ड्युटी असिस्टेन्ट्स और सेक्युरिटी गार्डों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। जनरल ड्युटी असिस्टेन्ट 500 के करीब हैं और इन्हें 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 7500 रुपये देते हैं। सरकारी त्यौहार वाले दिन 8 घण्टे ड्युटी का दुगुनी दर से भुगतान करते हैं और 4 घण्टे का सिंगल रेट से। एक ठेकेदार के जरिये रखे गार्डों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 6700 और दूसरे के गार्डों को 6200 रुपये देते हैं — ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि काट कर। दो कैन्टीन हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों वाली कैन्टीन में बहुत दिक्कत है — 20 रुपये में 4 से ज्यादा रोटी नहीं देते, सब्जी एक ही बार देते हैं, पेट नहीं भरता। बारह घण्टे की ड्युटी में एक कप

चाय भी नहीं देते। डॉक्टर, टैक्निशियन, नर्स कम्पनी ने स्वयं रखे हैं। नर्स की तनखा 14000, टैक्निशियन की 22000, जुनियर डॉक्टर की 50000 रुपये। इनकी दिन में 6-6 और रात में 12 घण्टे की शिफ्ट हैं। एक नर्स एक शिफ्ट में तीन बिस्तरों पर मरीजों की देखभाल करती है। मरीज द्वारा अकेले कमरा लेने की फीस 5000 रुपये प्रतिदिन है और एक कमरे में दो की 3000 + 3000 रुपये। अस्पताल में जगह-जगह कैमरे लगा रखे हैं।''

★ ***शिवम् ऑटोटेक श्रमिक :*** '' 58 किलोमीटर पत्थर, एन एच 8, बिनौला स्थित फैक्ट्री में तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 750 मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। सितम्बर 1999 में आरम्भ हुई फैक्ट्री में अधिकतर मजदूर स्थाई थे पर तनखा बहुत कम थी, जबरन ओवर टाइम पर रोकते थे, गाली देते थे, अपमानित करते थे.... 2005 में होण्डा घटना के होते ही मैनेजमेन्ट ने फैक्ट्री में हवन करवाया और तनखा में 900 रुपये बढाये.... असन्तोष जारी रहा और 1100 रुपये चन्दा (500+500+100) दे कर स्थाई मजदूरों ने एटक यूनियन बनाई। एक मजदूर को मुर्गा बनाने पर पाँच दिन की हड़ताल हुई तब यूनियन और मैनेजमेन्ट के बीच तीन वर्षीय समझौता हुआ। तीन किस्तों में 2700 रुपये वेतन वृद्धि, जबरन रोकना बन्द, गाली बन्द, ग्रुप इन्सेन्टिव स्कीम आरम्भ..... और ठेकेदार के जरिये रखे मजदूर बढायेंगे। आरम्भ में स्थाई मजदूर सन्तुष्ट पर फिर असन्तोष.... अब आधे मजदूर ठेकेदार के जरिये रखे हैं और उनकी तनखा 4348 तथा 5600 रुपये है जबकि स्थाई मजदूरों की 10000-19000 रुपये। डर। हर वर्ष यूनियन चुनाव होते हैं, गुटबाजी है, 7 यूनियन लीडर काम नहीं करते अथवा नाममात्र का करते हैं। हर महीने स्थाई मजदूर 20 रुपये चन्दा देते हैं। फैक्ट्री में यूनियन कार्यालय बनाने की माँग नहीं मान कर कम्पनी हर महीने यूनियन को 2000 रुपये देती है। इनसेन्टिव स्कीम मीठी गोली निकली। यहाँ ***हीरो होण्डा, बॉश, माइको*** के हिस्से-पुर्जे बनते हैं।''

★ ***हरसूर्या हैल्थकेयर श्रमिक :*** ''110-111 उद्योग विहार फेज-4 स्थित फैक्ट्री में 900 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में आई वी कैनुला बनाते हैं। जबरन ओवर टाइम और भुगतान सिंगल रेट से.... बहुत अधिक निर्धारित उत्पादन के कारण हाथों में सूईयाँ बहुत चुभती हैं — प्राथमिक उपचार के बाद टेप लगा कर काम करो, मशीन बन्द नहीं होनी चाहिये...... 12 घण्टे में दो बार ही शौचालय जा सकते हो और वह भी रजिस्टर में समय दर्ज कर, 5 मिनट से ज्यादा होने पर डाँट-फटकार.... कैन्टीन में घटिया भोजन की थाली 16 रुपये में, भीड़ बहुत अधिक, खाना खाते समय बैठने के लिये जगह नहीं, भोजन अवकाश के आधे घण्टे में मुश्किल से भोजन करना, एक-दो मिनट देरी पर डाँट-फटकार..... जगह-जगह कैमरे लगा रखे हैं..... तनखा देरी से.... .गालियाँ..... इन परेशानियों से पार पाने के लिये तीन महीने से यूनियन बन रही है। ऐसे में गाली देना बन्द हो गया है पर कम्पनी ने कैजुअल वरकरों को ठेकेदार के जरिये रखे मजदूर बना दिया है..... और फार्म भरने से पहले ठेकेदार इस्तीफा लिखवा रहा है। यूनियन प्रधान ने इसका विरोध किया तो 11 दिसम्बर को उसे निलम्बित कर दिया। इस पर उत्पादन ढीला हो गया है और कम्पनी एक-एक कर मजदूर निकालने लगी है। इधर मैनेजमेन्ट ने दो बन्दूक वाले खड़े कर दिये हैं।''

★ ***होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर मजदूर :*** '' प्लॉट 1 व 2 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर, गुड़गाँव स्थित फैक्टी में 17 दिसम्बर, शुक्रवार को ए-शिफ्ट में 2 बजे के करीब चाणचक्क स्कूटर लाइन बन्द कर मजदूरों का झुण्ड फैक्ट्री के अन्य विभागों में गया और हर स्थान के मजदूर जुड़ते गये। इस दौरान ड्युटी के लिये पहुँचे बी-शिफ्ट के मजदूर भी ए-शिफ्ट के मजदूरों से जुड़ गये। बी-शिफ्ट में उत्पादन आरम्भ ही नहीं हुआ। रात 11½ बजे कम्पनी ने अचानक रविवार की जगह शनिवार को साप्ताहिक अवकाश की घोषणा की। शनिवार को ड्युटी के लिये सुबह 5½-6 बजे ए-शिफ्ट के मजदूर बस स्टापों पर पहुँचे और बसें नहीं आई तब आपस में फोन द्वारा अवकाश बदलने की जानकारी मिली। रविवार, 19 दिसम्बर को ए-शिफ्ट में सुबह 6½ बजे उत्पादन आरम्भ हुआ और लगातार 27 दिसम्बर तक चला जिसके बाद वार्षिक रखरखाव के लिये 2 जनवरी तक उत्पादन बन्द कर दिया गया...... ***शुक्रवार,*** 17 दिसम्बर को ठेकेदार के जरिये रखे एक मजदूर ने स्कूटर लाइन पर सहकर्मियों को सेक्युरिटी गार्डों द्वारा अपमानित करने की बात बताई। मजदूरों ने तत्काल लाइन बन्द कर दी। स्थाई मजदूर, कैजुअल वरकर, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर संग-संग..... स्कूटर लाइन-मोटरसाइकिल लाइन-वैल्ड शॉप-मशीन शॉप-पी आई विभाग...... पूरी फैक्ट्री के मजदूर संग-संग। ए-शिफ्ट मजदूरों के साथ बी-शिफ्ट मजदूर जुड़ गये। ऐसा सन् 2005 के बाद पहली बार हुआ। फैक्ट्री के अन्दर 1800 स्थाई मजदूर और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 6500 मजदूर एकत्र हो गये। आठ हजार मजदूरों में चाणचक्क आये इस उफान से मैनेजमेन्ट हक्का-बक्का। नियन्त्रण के लिये.... शान्त रहें, यूनियन प्रधान बाहर है, 5 बजे आयेगा..... कम्पनी के सुरक्षा

प्रमुख ने माफी माँगी और कहा कि गार्ड को निकाल दिया है, वरिष्ठ मैनेजमेन्ट अधिकारी ने कहा कि आपके लिये जयपुर से आया हूँ...... मजदूरों के दिलों में जो भरा पड़ा था वह निकला — तुम्हारी माफी नहीं चाहिये, गार्ड को पेश करो..... जयपुर से आये हो चाहे जापान से, वर्ष पूरा होने पर ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को 15 दिन निकालना बन्द करो। सवा तीन बजे बसें चली तो ए-शिफ्ट के काफी स्थाई मजदूर चले गये। यूनियन प्रधान 4½-5 बजे पहुँचा और मजदूरों के माफिक सब हो जायेगा कह कर काम शुरू करने को कहा। स्थाई मजदूर पीछे हटे पर ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों ने भेदभाव-दुभान्त के बारे में यूनियन द्वारा कुछ नहीं करने पर प्रधान को खरी-खरी सुनाई। कम्पनी तालाबन्दी कर देगी के सुर्रे ने स्थाई मजदूरों को और पीछे धकेला पर ठेकेदारों के जरिये रखे ए तथा बी शिफ्ट के मजदूर काबू में नहीं आये। यूनियन प्रधान के बार-बार कहने पर भी मजदूरों ने काम आरम्भ नहीं किया तो प्रधान नाराज हो कर चला गया। बी-शिफ्ट में काम आरम्भ नहीं हुआ — ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के बिना उत्पादन हो ही नहीं सकता। तब तक 'मैनेजमेन्ट मुर्दाबाद' और 'यूनियन जिन्दाबाद' के नारे लगा रहे मजदूरों ने 'यूनियन मुर्दाबाद' के नारे लगाये। ऐसे में रात 11½ बजे कम्पनी ने शनिवार को साप्ताहिक अवकाश की घोषणा की। काफी मजदूर पूरी रात फैक्ट्री में रहे। ए-शिफ्ट मजदूरों वाली बसों के नहीं पहुँचने और 150-200 पुलिसवालों के फैक्ट्री में आने के बाद शनिवार को 11½ बजे मजदूर फैक्ट्री से निकले। काँप गई कम्पनी ने कोई नोटिस नहीं लगाया। हिल गई कम्पनी ने खुल कर किसी मजदूर के खिलाफ कार्रवाई नहीं की सिवाय एक स्थाई मजदूर को भड़काने के नाम पर निलम्बित करने के। ठेकेदारों के जरिये रखे 170 मजदूरों की सूची बनने तथा गुपचुप एक-एक करके निकालने की चर्चा.... जब हजारों मजदूर एकत्र थे तब कई बार यह बात उठी थी कि दिसम्बर 2004 में भी ऐसी ही स्थिति बनी थी तब ठेकेदार के जरिये रखे जो 5 मजदूर आगे हो कर बोल रहे थे उन्हें समझौता वार्ता के लिये कम्पनी गाड़ी में बैठा कर ले गई थी पर फिर उन मजदूरों का कुछ पता नहीं चला इसलिये इस बार जो आगे आ कर बोल रहे हैं उनको बचाने के लिये चौकस रहना.....''■

चिन्हित नहीं होना, टारगेट नहीं बनना

चीन के ग्वांडोंग प्रान्त में वाहनों के हिस्से-पुर्जे बनाने वाली ***डेन्सो*** फैक्ट्री के मजदूर। जुलाई-आरम्भ में एक दिन शिफ्ट आरम्भ होने पर काम करने लगने की बजाय मजदूर फैक्ट्री में घूमने लगे। आठ घण्टे घूमते रहे। प्रबन्धकों ने कार्य आरम्भ करने को कहा पर किसी मजदूर ने ऐसा नहीं किया। अगले दिन भी मजदूरों ने यह दोहराया। यूनियन ने मजदूरों से काम आरम्भ करने का अनुरोध बार-बार किया। मजदूरों ने काम शुरू नहीं किया। कोई नारेबाजी नहीं, कोई भाषण नहीं, कोई हिंसा नहीं। मजदूरों ने किसी को भी नेता पेश नहीं किया। मजदूरों ने अपनी बातें बताने के लिये कम्प्युटर अथवा मोबाइल फोन का प्रयोग नहीं किया क्योंकि सरकार ऐसे में कहने-बताने वाले का पता लगा सकती है। कागजों पर अपनी बातें लिख कर चिपकाई। हताश मैनेजमेन्ट ने यूनियन को चुनाव करवाने को कहा ताकि कोई तो हो जिससे सौदेबाजी की जा सके। मौन, शान्त मजदूरों ने किसी को नहीं चुना। कम्पनी ने तनखा बढाई। मजदूरों ने काम आरम्भ किया।

फरवरी 2011

बढती उथल-पुथल

✶ऊँच-नीच। सीढियाँ-पिरामिड ऊँच-नीच के। तने अथवा शिथिल तन और मरे मन। चढना सफलता और फिसलना असफलता। तनावों में वृद्धि। भय और असहायता....ईश्वर-अल्लाह-भाग्य की छतरी। अनिश्चितता और असुरक्षा का छाते जाना।

✶सभ्यता-प्रगति-विकास। पशुओं को नाथना, मनुष्यों में दास-दासी। पीड़ा और हवस धुरियाँ बनी। ''मैं'' का उदय..... जन्म ही पतन-जीवन ही शाप-जन्म से मुक्ति-मोक्ष एक छोर और अमर होना-अमृत की खोज दूसरा छोर। प्रकृति का दोहन, दासों-भूदासों-दस्तकारों-किसानों-मजदूरों का शोषण। अंश द्वारा सम्पूर्ण पर प्रभुत्व की, मानव योनि द्वारा प्रकृति पर प्रभुत्व की यात्रा। पहुँच गये हैं : 1. व्यक्ति का होना अथवा नहीं होना का बराबर-सा हो जाना; 2. पृथ्वी पर सब जीवों का अस्तित्व विनाश की कगार पर।

ऐसे में उथल-पुथल, बढती उथल-पुथल आशा की किरण है। जो कुछ परोसा गया है, जो कुछ परोसा जा रहा है उसे जाँचने-परखने, उसकी चीर-फाड़ की गति तीव्र हो रही है, पैमाना व्यापक हो रहा है। करोड़ों लोगों के तन-मन-मस्तिष्क हलचल में हैं। सम्पूर्ण पृथ्वी सामाजिक मन्थन का अखाड़ा बनी है। अनुभवों व विचारों का आदान-प्रदान हर किसी के लिये और भी अधिक आवश्यक हो गया है।

अपहरण के खतरे वास्तविक हैं। चुटकियों में समाधान वाले नुस्खों का व्यापक प्रभाव है। व्यवहार, हाँ व्यवहार ही इन्हें आजमा कर ठुकरायेगा। तीव्र से तीव्रर होती उथल-पुथल किसी को भी अब अधिक समय नहीं देगी। लाखों-करोड़ों ने एक समय जिन्हें समाधान माना था उन्हें समस्या पा कर छिटकने में देर नहीं लगायेंगे। बेशक, नादानी की कीमत रक्त में अदा करनी होगी। लेकिन इस सब से डरने की बजाय अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान बढा कर इनकी सम्भावनायें घटाना बनता है।

●शस्त्र और शास्त्र का ऊँच-नीच, सभ्यता से निकट का रिश्ता है। दोहन-शोषण के लिये मानसिक दासता और दमन का बहुत प्रयोग हुआ है। प्रगति-विकास से जुड़ा विज्ञान शोषण की मात्रा में छलाँगों के संग बढते विरोध से निपटने के लिये शस्त्रों और शास्त्रों की बाढ लाया है। लाठी से डर लगता है..... और आधुनिक पुलिस-सेना-गुप्तचर तन्त्र के बावजूद हजारों-लाखों-करोड़ों लोग विरोध में सामने आ रहे हैं। और, यह किसी क्षेत्र-किसी देश-किसी धर्म-किसी शासन स्वरूप के दायरे तक सीमित नहीं हैं।

● आज विश्व-भर में मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन का बोलबाला है। अपनी व परिवार की मेहनत से मण्डी के लिये उत्पादन करने वाले, दस्तकारों और किसानों की सँख्या उल्लेखनीय है।

— अमरीका, कनाडा, पश्चिमी यूरोप में दस्तकार-किसान समाप्त-से हो गये हैं। यह क्षेत्र मजदूरी-प्रथा का शिखर है। आज यहाँ नौकरी नहीं मिलती...... अमरीका सरकार ने बेरोजगारों की बहुत बड़ी सँख्या, 28 लाख लोगों को जेलों में बन्द कर रखा है। अमरीका में दिवालिया हुये बैंकों की सँख्या 2009 में 140 थी और 2010 में 157— इधर जनवरी में 14 बैंक फेल हो चुके हैं। यूरोप में कर्जों में डूबी, दिवालियेपन की कगार पर खड़ी सरकारों के नौकरियों में और कटौती के प्रयास लाखों मजदूरों तथा छात्रों को विरोध में सड़कों पर ला चुके हैं। जापान में बच्चों द्वारा आत्महत्यायें.

— दक्षिणी अमरीका, अफ्रीका, एशिया में करोड़ों दस्तकार और किसान हैं। इन पचास वर्षों में इन क्षेत्रों में करोड़ों मजदूर भी हो गये हैं। इधर उत्पादन तथा अन्य क्षेत्रों में इलेक्ट्रोनिक्स के प्रवेश ने बड़ी सँख्या में नौकरियाँ समाप्त की हैं। इलेक्ट्रोनिक्स ने दस्तकारों और किसानों की सामाजिक मौत, सामाजिक हत्या की गति भी तेज कर दी है। लाखों दस्तकारों-किसानों द्वारा आत्महत्या करना, हजारों द्वारा सरकारों के खिलाफ हथियार उठाना, सैंकड़ों का आत्मघाती बम बनना....चीन में पुलिस से भिड़ते मजदूर, बंगलादेश में फैक्ट्रियों को आग लगाते मजदूर..

●ऐसे में तीव्रतर गति से हालात बद से बदतर होंगे। इसलिये उथल-पुथल बढ़ेगी। अलग-अलग क्षेत्रों और भिन्न-भिन्न समय के अनुभव तथा विचार हमें विरासत में मिले हैं। वर्तमान की हलचलों और आने वाली उथल-पुथलों के दौरान अपने व्यवहार को अधिक कारगर बनाने के लिये अपनी विरासत को जानना-समझना आवश्यक है। इस सन्दर्भ में, हमारे विचार से, कुछ महत्वपूर्ण बातें यह हैं :

— नेता, पार्टी, झण्डा, सीमा बदलना गौण बातें हैं। सिंहासन खाली करो..... की जगह सिंहासनों को तोड़ना बनता है। थानेदार

कौन हो की बजाय थानेदारी नहीं चाहिये। जिन जन उभारों में जेलें तोड़ी गई, अदालतें समाप्त की गई, पुलिस और सेना भंग की गई उन जन उभारों में ही राहें कुछ खुली। राजसत्ता को, सरकारों को ध्वस्त करना मुक्ति का प्रस्थान-बिन्दू है। यूँ भी, पुलिस और सेना की वर्दी में अधिकतर किसानों, मजदूरों की सन्तानें हैं।

— बेरोजगारी से त्रस्त..... नौकरी में जलालत, अधम चाकरी। सिकुड़ते रोजगार, घटती नौकरियाँ, बढती बेराजगारी हमारे सम्मुख हैं। इसलिये उथल-पुथल के दौरान काम का अधिकार माँगना बेहूदी बात है। मिल कर उत्पादन करना और बाँट कर खाना, मजदूरी-प्रथा के उन्मूलन की दिशा में प्रारम्भिक कदम हैं।

— भ्रष्टाचार और रिश्वत। रुपये-पैसे के महत्व के साथ इनका निकट रिश्ता है। मण्डी और रुपये-पैसे एक-दूसरे के पूरक हैं। लाभ, हानि और होड़ मण्डी के चरित्र में हैं। काला पैसा अथवा सफेद पैसा की बातें कानून अनुसार शोषण अथवा कानून से परे शोषण जैसी चर्चा है। जैसे कानून हैं ही शोषण के लिये, वैसे ही रुपये-पैसे मण्डी के पूरक हैं। होड़ की बजाय सहयोग और खरीद-बिक्री की बजाय उपहार उथल-पुथल के दौरान महत्वपूर्ण कदम होते हैं।

—लाभ और हानि। क्या फायदा ? यह बातें ऊँच-नीच में आमतौर पर और मण्डी-मुद्रा के दबदबे में खासकरके हम सब को लहुलुहान करती हैं। मतलब हो तब मिलना.... छिछले-सतही-क्षणिक रिश्ते। लाभ और हानि का मकड़जाल हर सम्बन्ध को कामकाजी-औपचारिक रिश्ते में सिकोड़ रहा है। लाठी-गोली के सम्मुख आना, हानि-लाभ की दीवारों को फाँदना हर उथल-पुथल का चमत्कारी पहलू है। बिना मतलब के मिलना, अच्छा लगता है इसलिये मिलना — जन उभार के समय इसका व्यापक पैमाना नई समाज रचना की राहों को चौड़ा करता है।

— रफ्तार पर ब्रेक...... उथल-पुथल घड़ी की सूईयों को थाम देती है। नौकरी-चाकरी में जुटे समय नहीं है वालों के चेहरे चमकने लगते हैं। समय काटे नहीं कटता वाले बेरोजगारों के चेहरे दमकने लगते हैं। समय का अभाव-अकाल और समय का बोझ बनना वर्तमान के चरित्र में हैं। सम्बन्ध के लिये समय प्राथमिक आवश्यकता है। समय के अभाव में कटुता की फसल.....सम्बन्ध बनाने से बचना, सम्बन्ध से डरना। अकेलेपन की महामारी....... तीव्र से तीव्रतर होती गति और बढती चमक-दमक का दूसरा पहलू समय का अकाल है। जन उभार में समय का ठहर जाना हँसी-खुशी-उल्लास की व्यापक झलक दिखा कर नई समाज रचना की इच्छा को उभारता है। बहुत गहरे से प्रेम और उल्लास की हूक उठ रही है..... सब घड़ियों को संग्रहालयों में रखने का समय आ गया है।

— गति का उत्पादन मुख्यतः मजदूरों के तन और मन को लहुलुहान करता है। गति का उपभोग हर किसी को धार पर धरता है — सड़कें ही, भारत सरकार के क्षेत्र में ही प्रतिवर्ष एक लाख से ऊपर हत्यायें और 12-15 लाख को गम्भीर रूप से घायल कर रही हैं। गति का उत्पादन व उपभोग अकेले ही पृथ्वी को उलट-पलट रहा है, पर्यावरण प्रदूषण..... और, तीव्र गति मनोरोगों की महामारी लाई है। ऐसे में उथल-पुथल के दौरान चक्कों का ठहर जाना सोचने-विचारने के लिये अवसर प्रदान करता है । मनुष्यों के बीच मधुर सम्बन्धों और प्रकृति के संग सौहार्दपूर्ण रिश्तों के लिये कितनी और कैसी गति चाहिये.....

— कब, कहाँ, कौनसी बात उथल-पुथल की लहर को उभार देगी यह कोई नहीं जानता-जानती। इस सम्बन्ध में शोषण-नियन्त्रण-दमन तन्त्र की तैयारियाँ धरी रह जाती हैं। लेकिन, नियन्त्रण की पुनः स्थापना के लिये विकल्प का जुगाड़ रखना बड़े तन्त्रों की सामान्य क्रिया बन गई है। काबू से बाहर होने लगे तो उथल-पुथल का समर्थन कर उसे नई सरकार बनाने की दलदल में धकेल देना..... इधर जन उभार तेजी से क्षेत्र-देश की सीमाओं को लाँघने लगे हैं। "मजदूरों का कोई देश नहीं होता" और मण्डी-मुद्रा आधारित ऊँच-नीच वाली व्यवस्था की सत्ता-शासन के लिये जनतन्त्र बेहतरीन साँचा है की समझ को डेढ सौ से ज्यादा वर्ष हो गये हैं। सीमाओं और सरकारों को मिटाने की दस्तकों को अनसुना करना एटम बमों वाले युद्ध की तैयारी को मौन समर्थन देना है।

आईये, छवि को ढोने की बजाय जीवन जीने के पथ पर कदम बढायें। आईये, उथल-पुथल में उभर कर सामने आते मिल कर कदम उठाने, आपस में सहयोग करने, हानि-लाभ के कुँये से बाहर निकलने, सम्बन्धों को समय देने को अपने दैनिक जीवन की सामान्य क्रियायें बनायें।■

नोएडा में : *जे पी सी मजदूर :* "ए-45 सैक्टर-83, नोएडा स्थित फैक्ट्री में 300 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में कपड़ों की रंगाई-छपाई करते हैं। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। ई.एस.आई. व पी. एफ. 50 मजदूरों की ही, और इन 50 को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 5500 रुपये। बाकी 250 मजदूरों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 4500 रुपये। इन 250 की तनखा से भी ई.एस.आई. व पी.एफ. के 500 रुपये काटते हैं पर इन्हें ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और छोड़ने पर इन्हें फण्ड के पैसे नहीं मिलते। तनखा देरी से, 15 तारीख के बाद। पीने का पानी खराब। शौचालय गन्दे।.....

मार्च 2011

बदल सकते हैं यह सब हम

आज विचार और व्यवहार में, कथनी और करनी में बहुत ज्यादा फर्क आ गया है। सामान्य तौर पर "मैं सच कह रही हूँ – मैं झूठ नहीं बोल रहा" कहने की अपमानजनक स्थिति में हम अपने को अधिकाधिक पाते हैं। हालात ऐसे बने हैं कि आज प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन सौ बार मरती-मरता है।

स्थितियाँ काफी समय से खराब हैं। वक्त के साथ यह बद से बदतर होती आई हैं। हमारे पूर्वजों ने पृथ्वी के हर क्षेत्र में हालात बदलने के बहुत प्रयास किये हैं। हमारे समय में यह कोशिशें और व्यापक तथा तेज हो गई हैं। ट्युनिशिया, मिश्र, अल्जीरिया, यमन, बहरीन, लीबिया नवीनतम क्षेत्र हैं जहाँ आबादी का बड़ा हिस्सा जान की बाजी लगा कर हालात को बदलने के लिये आगे आया है।

परिणाम, हाँ परिणाम निर्णायक होते हैं। हमारे पूर्वजों ने जिन्हें समस्याओं का समाधान समझा वे आमतौर पर अधिक विनाशकारी समस्यायें साबित हुई हैं। इन्हें जानना, इन पर मनन करना जरूरी है। इन्हें नहीं दोहराना...

हम ऐसे दौर में हैं जहाँ एक शब्द के कई अर्थ हैं, परस्पर विरोधी अर्थ भी हैं। एक अनुभव के कई सबक, परस्पर विरोधी सबक हमारे सामने तने खड़े हैं। अनुभवों की भरमार सहायक है पर अनुभवों के अर्थ-सबक सिरदर्द हैं......

सूचनाओं की, ज्ञान की, विज्ञान की बाढ किसी को भी, कभी भी भ्रमित कर सकती है। सत्य और असत्य का, हित और अहित का घालमेल हो गया है। विश्व-भर में लोगों के बीच बहुत व्यापक आदान-प्रदानों के बिना इन सब से पार नहीं पाया जा सकता।

● हर किसी का हर समय वास्तविकता के किसी न किसी पहलू से वास्ता पड़ता है। हकीकत का न तो प्राकृतिक हिस्सा और न ही सामाजिक भाग स्थिर है। वास्तविकता हर समय बदलती रहती है।

● वास्तविकता जटिल है। हमारे द्वारा अपनी समस्याओं को प्रकृति के दायरे में देखना हमें प्रकृति पर विजय के अभियानों में ले जाता है। कुदरत को फतह करने की कोशिशों के विनाशकारी परिणामों को अब कोई भी अनदेखा नहीं कर सकती-सकता।

● वास्तविकता के सामाजिक हिस्से में समस्याओं की अनदेखी नहीं हुई है। विश्व के कोने-कोने में सामाजिक हलचलें हुई हैं, उथल-पुथल हुई है। लेकिन, सामाजिक धरातल पर परिवर्तन के प्रयास स्थानीय, क्षेत्रीय दायरों में आरम्भ हो कर आमतौर पर इन दायरों में सिमट जाते रहे हैं।

● वास्तविकता का सामाजिक भाग विश्व-भर में पसरता आया है। इधर सम्पूर्ण संसार को लपेटे में ले कर यह अधिकाधिक गुँथता हुआ घनिष्ठ हो कर एक जैसा-सा हो गया है। हमारी समस्यायें, हमारी सामाजिक समस्यायें विश्व संकट के रूप में इधर सौ-सवा सौ वर्ष से हमारे सामने हैं।

इन सब तथ्यों को ध्यान में रखते हुये और जो है उसको बदलने के लिये, हमारे विचार से, कुछ महत्वपूर्ण बातें यह हैं :

—कोई भी व्यक्ति सम्पूर्ण नहीं है और न ही कोई व्यक्ति शून्य है। व्यक्ति का वास्तविकता के जिस पहलू से वास्ता रहता है उसके बारे में उस व्यक्ति से ज्यादा कोई नहीं जानता-जानती। ऐसे में कोई धाराप्रवाह बोलती है और कोई काब्बा है, हकलाता है की बात गौण है। कोई किसी बोली-भाषा का प्रयोग करती है तो कोई अन्य किसी का इस्तेमाल करता है यह गौण है। स्त्री होना अथवा पुरुष होना का इस सन्दर्भ में महत्व नहीं है। रंग, आयु, क्षेत्र की भिन्नतायें तथा पढे और अनपढ के भेद गौण हैं। जटिल वास्तविकता, गतिशील वास्तविकता की मोटा-मोटी समझ के लिये विश्व के पाँच-छह अरब लोगों के बीच आदान-प्रदान बढाने आवश्यक हैं।

—बदलने के लिये समझना है। यह समझ पाँच-छह अरब लोगों की सक्रिय साझेदारी पर निर्भर है। इसके लिये एक नई भाषा की जरूरत है, उस भाषा की आवश्यकता है जो प्रत्येक व्यक्ति को महत्व देती हो। इस सन्दर्भ में अधिकतर लोगों के महत्व को नकारने वाली जापानी-चीनी-अरबी-हिन्दी-जर्मन-अंग्रेजी भाषाओं का मात्र तकनीकी उपयोग बचता है।

—समस्यायें आज हिमालयी आकार ग्रहण कर चुकी हैं। जब यह काफी छोटी थी तब भी किसी एक के काबू में नहीं आई। और हाँ, हर व्यक्ति बहुत आसानी से कंकड़ उठा सकती-सकता है। पाँच-छह अरब लोगों द्वारा कंकड़ उठाना पीड़ा के हिमालय का आसानी से नामो-निशान मिटा सकता है।

—उत्पादन और वितरण ने जबरन आज पृथ्वी के सब

निवासियों को जोड़ दिया है। जबरन जोड़ना अनेक समस्यायें उत्पन्न करता है पर यह सब मनुष्यों के बीच आदान-प्रदान का आधार भी प्रदान कर रहा है। बाधायें लाँघने के लिये धैर्य की, बहुत धीरज की आवश्यकता है..... कार्यस्थल पर, निवासस्थल पर मजबूरी वाले सम्बन्धों को नये रिश्तों में बदलना कठिन नहीं है। शिफ्ट-विभाग-फैक्ट्री-औद्योगिक क्षेत्र-सरकारी सीमाओं के अन्दर और बाहर सम्बन्धों के नये ताने-बाने आज सम्पूर्ण पृथ्वी को आसानी से अपने में समेट सकते हैं। इस पैमाने पर अनुभवों तथा विचारों का आदान-प्रदान सामाजिक मन्थन से ऐसे परिणामों की अच्छी सम्भावनायें लिये है जो समस्याओं के ऐसे समाधान प्रदान करेंगे कि मनुष्यों की पीड़ा का अन्त हो, मानवों के प्रकृति के संग सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण बनें।■

फैक्ट्री रिपोर्ट

★ ***कॉनसेप्ट क्लोथिंग मजदूर :*** '' प्लॉट 433 सैक्टर-37 स्थित फैक्ट्री में ओवर टाइम भुगतान दुगुनी दर से कह कर भर्ती किया और जनवरी में यह सिंगल रेट से कर दिया..... यह कह कर कि तनखा बढा देंगे। तनखा नहीं बढाई है। दिसम्बर माह की पे-स्लिप नहीं दी, बोले कि जनवरी में दे देंगे। सात जनवरी को भोजन अवकाश तक पे-स्लिप नहीं दी तो मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। काम बन्द हुये एक घण्टा हो गया तो साहब बोले कि काम शुरू करो, अभी देते हैं। तीन बजे जो पे-स्लिप बाँटी उसमें ओवर टाइम, ई.एस.आई., पी.एफ. का जिक्र ही नहीं...... मजदूर भड़के, मैनेजर की पिटाई। पुलिस आई.... कहा कि 12 जनवरी को पे-स्लिप व तनखा देंगे। मजदूरों ने कहा कि ओवर टाइम सिंगल रेट से करने से गुजारा और मुश्किल हो गया है इसलिये तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि मत काटो.... बोले कि जनवरी से भर्ती वालों की नहीं काटेंगे। लेकिन, जनवरी की तनखा 12 फरवरी को दी तो ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटे थे। ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और छोड़ने पर फण्ड के पैसे कुछ मजदूरों को मिलते हैं, कुछ को नहीं मिलते। छूटने के समय किसी ने 5 मिनट पहले कार्ड पंच कर दिया तो परसनल वाले आधे दिन की अनुपस्थिति लगा देते हैं। दो दिन छुट्टी करने पर कार्ड रोक कर नया कार्ड बनाते हैं — नई भर्ती दिखाना हेराफेरी का एक और जरिया बना है। नौकरी छोड़ने पर इस्तीफा लिखवा कर हफ्ता-पन्द्रह दिन किये काम के पैसों के लिये महीने के आखिरी शनिवार को बुलाते हैं...... 26 फरवरी वाले शनिवार को ऐसे 40-50 मजदूर आये, रात 8 बजे 2-3 को पैसे दिये और बाकी को फिर आने को कहा। चक्कर कटवा कर कई मजदूरों के 5-10 दिन किये काम के पैसे खा जाते हैं। फैक्ट्री में भोजन करने के स्थान का प्रबन्ध नहीं है — सीढियों पर, कूड़े की बगल में खाना खाते हैं। मजदूरों के पीने का पानी खारा है।''

★ ***होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर वरकर:*** ''प्लॉट 1 व 2 सैक्टर-3 आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री के बाइक प्लान्ट के व्हीकल क्वालिटी मोटर साइकिल (वी क्यू एम सी) विभाग में दो शिफ्टों में 900 लोग काम करते हैं। कनवेयर से बाइकें उतरते ही यहाँ उनके नुक्स ढूँढने, ब्रेक-स्पीडोमीटर-इंजन क्षमता जाँचने, सुधार करने के पश्चात अन्तिम जाँच के लिये भेजते हैं जहाँ से गाड़ियाँ बिकने के लिये जाती हैं। यहाँ 50-60 स्थाई, 20 कम्पनी कैजुअल और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे लगभग 800 मजदूर हैं। वी क्यू एम सी में तीन छोटी कनवेयर भी हैं — एक शिफ्ट में एक कनवेयर पर 5 स्थाई (2एग्जेक्युटिव, 3 लाइन लीडर), 2 कम्पनी कैजुअल, ठैकेदारों के जरिये रखे 40 मजदूर रहते हैं। पूरी फैक्ट्री में अधिकतर कार्यस्थलों पर स्थाई का कार्य मुख्यतः काम करवाना है। स्कूटर प्लान्ट हो चाहे बाइक प्लान्ट, उत्पादन का काम आमतौर पर ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर करते हैं। इधर इंजिनियरिंग की डिग्री वालों को ही साढे तीन लाख रुपये वार्षिक में स्थाई कर रहे हैं। तीन ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की बेसिक 4700, मकान भत्ता 1050, उत्पादन भत्ता 850 और इनके जोड़ में से 509 रुपये पी.एफ. के तथा 108 रुपये ई.एस.आई. के काट लेते हैं। पूरी फैक्ट्री में सीधे-सीधे उत्पादन में, हार्ड प्रोडक्शन में 1800 स्थाई और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 6500 मजदूर हैं। और फिर, अन्तिम जाँच के बाद बाइक-स्कूटर को पार्किंग अथवा लॉजिस्टिक में पहुँचाने के लिये चौथे ठेकेदार के जरिये रखे 400 मजदूर..... सफाई के लिये पाँचवें ठेकेदार के जरिये रखे 400-500 वरकर...... तीन कैन्टीनों में छठे ठेकेदार के जरिये रखे 150-200 मजदूर..... सुरक्षा के लिये सातवें ठेकेदार के जरिये रखे 300 गार्ड...... यातायात में कई ठेकेदारों के जरिये रखे 60 बसों के लिये 120 चालक-परिचालक, 50-60 कारों के लिये 50-60 ड्राइवर, हर रोज 6000 बाइक-स्कूटर को फैक्ट्री से ले जाने के लिये 100-200 ट्रकों पर 400 चालक-खलासी..... इधर बी-शिफ्ट मजदूरों के लिये हर सोमवार को रात 11½ से 1½ बजे तक ओवर टाइम कार्य अनिवार्य है। वैसे, रात 11½ से अगली सुबह 6½ तक वाली सी-शिफ्ट हर रोज होती है और इसमें 500-600 मजदूर ओवर टाइम पर होते हैं, ए व बी शिफ्टों में गाड़ियों पर छूट गये काम को करते हैं।''

★ ***एरिस फैशन श्रमिक :*** ''234 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में स्टाफ ही स्थाई है, मजदूरों को निकालते रहते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. सिर्फ स्टाफ की हैं, मजदूरों की नहीं हैं।''

एटम बमों से अधिक खतरनाक हैं परमाणु बिजलीघर

✶ बिजली का उत्पादन कैसे होता है ? बिजली का उपभोग कैसे होता है ? बिजली का बढता उत्पादन और उपभोग क्या अच्छी बात है ? अधिकाधिक ऊर्जा की आवश्यकता क्यों है? क्या बिजली चाहिये ? कितनी बिजली चाहिये ? कैसी बिजली चाहिये ? कितना-कुछ बिजली के लिये दाँव पर लगायेंगे ? बिजली रूप में ऊर्जा क्यों चाहिये?

✶ गति का उत्पादन कैसे होता है ? रफ्तार का उपभोग कैसे होता है ? बढती स्पीड का उत्पादन और उपभोग क्या अच्छी बात है ? अधिकाधिक गति की आवश्यकता क्यों है ? क्या तेज गति चाहिये ? कितनी तेज रफ्तार चाहिये? कैसी स्पीड चाहिये ? कितना-कुछ तीव्र गति के लिये दाँव पर लगायेंगे ? गति क्यों चाहिये?

✶ चमक-दमक का उत्पादन कैसे होता है ? चमक-दमक का उपभोग कैसे होता है ? बढती चमक-दमक का उत्पादन और उपभोग क्या अच्छी बात है ? अधिकाधिक चमक-दमक की आवश्यकता क्यों है? क्या चमक-दमक चाहिये ? कितना-कुछ चमक-दमक के लिये दाँव पर लगायेंगे ? चमक-दमक क्यों चाहिये?

प्रश्न तकनीकी कम और सामाजिक ज्यादा हैं। इन दो सौ वर्षों पर केन्द्रित रहेंगे।

●हॉर्स पावर । पाँच-दस-बीस हॉर्स पावर की मोटर...... भारतीय उपमहाद्वीप से आरम्भ होती तो घोड़े की बजाय बैल के आधार पर चार-आठ-सोलह ''बैल ऊर्जा'' होती। मानव तथा पशु माँसपेशियों के अतिरिक्त भाप-कोयला, पैट्रोल, बिजली ऊर्जा के स्वरूप। इन दो सौ वर्ष में समस्याओं के तकनीकी समाधानों की भरमार रही है।

●छुट-पुट समस्याओं, क्षेत्र-विशेष की समस्याओं को तकनीकी समाधानों ने इन दो सौ वर्षों में विकराल बना दिया है, विश्व-व्यापी बना दिया है। पृथ्वी पर जीवन विनाश के कगार पर पहुँच गया है।

इसलिये ''क्या बिजली चाहिये ?'' का प्रश्न आज पागलपन के तौर पर नकारा नहीं जा सकता।

—प्रकृति के दोहन और मनुष्यों के शोषण से सभ्यता आरम्भ हुई। आज हम सभ्यता के प्रगति और विकास के दौर में हैं।

—पक्के मकान, सड़कें, बिजली, रोटी, मनोरंजन, सुरक्षा प्रगति और विकास के झुनझुने हैं।

—निवास को सीमेन्ट-स्टील-पेन्ट ने बीमारियों का घर बना दिया है। सड़कें कत्लेआम के अखाड़े बनी हैं। भोजन का उत्पादन जहर का उत्पादन बन गया है। मनोरंजन औजार है थके-हारे-टूटे तन और मन को बहलाने-बहकाने का। सुरक्षा के उपाय इतने कारगर हो गये हैं कि इनका प्रयोग पृथ्वी पर कई बार जीवन को नष्ट कर सकता है। दवा स्वयं ही बीमारी है। बिजली......

बिजली सुविधा है अथवा आफत? बिजली आदर्श है अथवा मजबूरी? विचार करना बनता है।

✶ सूर्योदय से सूर्यास्त...... दास-भूदास रात को सोते थे। सौ-सवा सौ वर्ष पहले बिजली का उत्पादन इतना कम था कि फैक्ट्रियों में सूर्यास्त के बाद काम नहीं हो सकता था। आज से सौ-सवा सौ वर्ष पहले कारखानों में काम करने वाले मजदूर रात को आराम करते थे। बिजली के उत्पादन में वृद्धि ने रात को रात नहीं रहने दिया। आज वाहन उद्योग में हों चाहे वस्त्र उद्योग में, या फिर कॉल सेन्टर में..... कारखानों-कार्यालयों-यातायात आदि-आदि में दुनिया-भर में करोड़ों लोग रात को भी काम में जुतते हैं। रात को जागना तन और मन को अतिरिक्त पीड़ा पहुँचाने के संग-संग नई बीमारियाँ भी लिये है......

✶ कोयला से बिजली का उत्पादन..... बहुत प्रदूषण जो कि दिखता भी है। डीजल से बिजली उत्पादन..... महँगा भी और बहुत प्रदूषण जो कि दिखता भी है। गैस से बिजली.... बहुत प्रदूषण। कोयला-डीजल-गैस के भण्डार समाप्ति की तरफ हैं। बाँध बना कर जल से बिजली उत्पादन..... विस्थापन के लफड़े, रखरखाव के खर्चे, सीमित क्षमता, भूकम्प की सम्भावना बढाना। ऐसे में ''साफ-सुरक्षित-अनन्त काल'' वाली परमाणु बिजली तारणहार. .... जापान में परमाणु बिजलीघरों द्वारा मचाई जा रही तबाही इस नौका को भी कागजी दिखा रही है। सब सरकारें परमाणु बिजलीघरों में लगातार होते हादसों को छिपाती रही हैं पर चेर्नोबिल का बड़ा हादसा छिपाया नहीं जा सका था और उसने परमाणु बिजलीघरों की बीस वर्ष तक नकेल कस दी थी। इधर

परमाणु बिजलीघरों ने फिर से नाचना आरम्भ ही किया था कि जापान में परमाणु बिजलीघर कहर ढाने लगे.... परमाणु बिजलीघरों का कचरा तक बहुत खतरनाक है, हजारों वर्ष तक हानिकारक रहता है। परमाणु बिजलीघरों से खतरे किसी सीमा में नहीं बँधे हैं, इनकी कोई समय सीमा-सी भी नहीं है। यह सम्पूर्ण पृथ्वी को अपनी चपेट में लिये हैं, कई-कई पीढियों तक मार करते हैं......

विकल्पों की, वैकल्पिक ऊर्जा की छटपटाहटें समस्या के तकनीकी समाधान की नई कोशिशें मात्र लगती हैं।

अनजाने में गलत हो जाना एक सामान्य बात है। लेकिन सभ्यता-प्रगति-विकास में जानते हुये गलत करने की परम्परा है। आज यह चन्द लोगों तक सीमित नहीं है। आज जानते हुये गलत करना ने एक महामारी का रूप ले लिया है। इस-उस व्यक्ति-विशेष, संस्था-विशेष को दोष देना नादानी है अथवा अति काँइयापन है। मामला सामाजिक लगता है, सामाजिक मजबूरी का लगता है।

ऐसे में, बिजली की ही बात करें तो, यह हमारी मजबूरी है। आज बिजली, बड़ी मात्रा में बिजली की आवश्यकता हमारी मजबूरी है, विनाशकारी मजबूरी है। ऐसी मजबूरियों से पार कैसे पायें ?

इस सन्दर्भ में, हमारे विचार से, दुनिया के पाँच-छह अरब लोगों के बीच आदान-प्रदान बढाना प्राथमिक आवश्यकता है। विश्व में आज हर किसी का तन-मन-मस्तिष्क हलचल में है। कोई भी ऐसी प्रस्थापना नहीं है जिस पर प्रश्न नहीं उठ रहे हों। सभ्यता-प्रगति-विकास नये-पुराने ''पवित्रों'' को ढाल-तलवार बना रहा है सवालों के खिलाफ। जो रहा है और जो है के परिणाम बहुत दुखदायी हैं इसलिये देश-सेना-जनतन्त्र-धर्म-प्रगति-विकास वाले ''पवित्रों'' के हर पहलू पर प्रश्न-दर-प्रश्न उठाने अति आवश्यक लगते हैं। जारी सामाजिक मन्थन को इससे गति मिलेगी। मजबूरियों और जानते हुये गलत करने के पार जाने की राहें सामाजिक उथल-पुथल खोल रही हैं। नये समुदायों वाली नई समाज रचना में मजबूरियों और जानते हुये गलत करने से मुक्ति नजर आती है।■

फैक्ट्री रिपोर्ट

★ ***फ्लैश इलेक्ट्रोनिक्स मजदूर :*** ''प्लॉट 3 तथा 8 व 9 सैक्टर-27 बी स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में 12½ घण्टे की जनरल शिफ्ट के संग 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। सुबह 8 बजे काम आरम्भ करने वालों को रात 8 बजे बाद रात 1 बजे तक, अगली सुबह 5 तक रोक लेते हैं। हर रविवार को भी दिन में 8-10 घण्टे काम अनिवार्य। उत्पादन के लिये बहुत ज्यादा दबाव — फोरमैन, सुपरवाइजर, मैनेजर कैजुअल वरकरों में हैल्परों को बहुत गाली देते हैं और जनरल मैनेजर थप्पड़ भी मार देता है, उत्पादन के लिये जनरल मैनेजर ने एक स्थाई मजदूर को भी थप्पड़ मारे..... 20 टन से 1000 टन की 60-70 पावर प्रेस हैं। अधिकतर प्रेसें पुरानी हैं और सुरक्षा उपकरण किसी में नहीं हैं। ज्यादातर पावर प्रेसों को हैल्परों से चलवाते हैं। प्रेसों पर भी 12 घण्टे बाद 17 घण्टे, 21 घण्टे तक रोक लेते हैं। दिन में दबाव के कारण अधिक एक्सीडेन्ट होते हैं। व्हील टूटने, माल निकालने की तेजी में पैडल दबना, सुपरवाइजर की डाँट..... एक-दो-तीन उँगली, अँगूठा, दोनों हाथ की उँगली कट जाती हैं। हर महीने 2-4 मजदूरों के हाथ कट जाते हैं। हाथ कटने पर कम्पनी ई.एस.आई. नहीं ले जाती, एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरती, सैक्टर-16 में प्रायवेट अस्पताल में ले जाती है। पावर प्रेसों की डाई 50-80 किलो की हैं और इन्हें हाथों से उठाना पड़ता है। हाथ दब जाते हैं, पैर कुचल जाते हैं। सुपरवाइजर उल्टे मजदूर को कहते हैं कि तुम्हारी लापरवाही के कारण चोट लगी। उपचार के दौरान जो दिहाड़ी छूटती हैं उनके पैसे कम्पनी नहीं देती। उँगली-अँगूठे कटने का मुआवजा भी कम्पनी नहीं देती। प्रारम्भिक उपचार के बाद कोई मजदूर ई.एस.आई. जाता है तो वहाँ रिपोर्ट माँगते हैं जिसे प्रायवेट वाले डॉक्टर देते नहीं और फैक्ट्री जाने पर ई.एस.आई. कार्ड ले कर कहते हैं कि जाओ अब ई.एस.आई. में इलाज करवाओ..... महीने में ओवर टाइम के 100 से 225 घण्टे, भुगतान सिंगल रेट से और गडबड़ कर हर महीने कुछ कैजुअलों के 400-500 रुपये खा जाते हैं। हाजिरी में भी गड़बड़ी करते हैं। जुलाई से देय डी.ए. अक्टूबर से देना शुरू किया और इधर जनवरी से देय महँगाई भत्ता फरवरी की तनखा में भी नहीं दिया है — कैजुअलों को एरियर देते ही नहीं। दिसम्बर 10 और जनवरी 11 में कैजुअलों को पे-स्लिप दी पर उन में ओवर टाइम का जिक्र नहीं, ई.एस.आई. सँख्या नहीं, पी.एफ. नम्बर नहीं..... इधर फरवरी में पे-स्लिप नहीं दी। सात महीने पर कैजुअल वरकर का ब्रेक कर देते हैं और दो महीने बाद फिर भर्ती कर लेते हैं — कई मजदूर फैक्ट्री में काम करते रहते हैं पर दो महीने उनकी तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि नहीं काटते। यहाँ 100 स्थाई मजदूर और 1000-1200 कैजुअल वरकर दुपहिया तथा तिपहिया वाहनों के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। कैजुअलों में 300-350 ऑपरेटर और 700-800 हैल्पर हैं। कैजुअलों में ऑपरेटरों को 12 घण्टे में चाय के लिये 15 रुपये, 17 घण्टे पर 30 रुपये और 21 घण्टे पर 50 रुपये रोटी के लिये कम्पनी देती है। कैजुअलों में हैल्परों को 12 घण्टे,

17 घण्टे, 21 घण्टे लगातार काम के दौरान एक कप चाय भी कम्पनी नहीं देती, रोटी के लिये एक पैसा भी नहीं देती। बदरपुर में फ्लैश इलेक्ट्रोनिक्स की ऑटो मीटर बनाने वाली फैक्ट्री है और फरीदाबाद में डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल एस्टेट में चौथी फैक्ट्री बन गई है।''

✶ ***शाही एक्सपोर्ट कामगार :*** ''15/1 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में मुख्य समस्या उत्पादन-उत्पादन-उत्पादन है। निर्धारित उत्पादन बहुत ज्यादा है। फीडर हर घण्टे हर वरकर का उत्पादन लिख कर सुपरवाइजरों को देते हैं। प्रतिघण्टा टारगेट पूरा नहीं किया तो सुपरवाइजर चिल्लाते हैं, नौकरी से निकालने की धमकी देते हैं। सिलाई में, फिनिशिंग में, सब जगह टारगेट निर्धारित हैं। उत्पादन पूरा करने का तनाव...... गलती भी नहीं चाहिये — हर वरकर का हर पीस में कोड जिससे पकड़ सकें — इसका तनाव...... 16-17 मार्च को धागे काटने वालों से भोजन अवकाश से पहले का निर्धारित उत्पादन पूरा नहीं हुआ तो उन्हें भोजन करने का समय नहीं दिया, काम में लगाये रखा। सैकेण्ड फिनिशिंग में दूसरी मंजिल पर चद्दरों की छत के तले बहुत ज्यादा काम के दबाव तथा गर्मी के कारण 18 मार्च को धागे काटने वाली एक महिला मजदूर 2-2½ बजे बेहोश हो गई..... मई-जून में क्या होगा? पिछले वर्ष एक रोज यहाँ 50 मजदूर बेहोश हुये थे। उत्पादन के फेर में 5 मार्च को एक सुपरवाइजर ने प्रेसमैन को गाली दी तो प्रेसमैनों ने घेर कर सुपरवाइजर को गिरा दिया। प्रोडक्शन मैनेजर ने निर्धारित उत्पादन नहीं करवा पाने पर 12 मार्च को फिर एक सुपरवाइजर को थप्पड़ मारा। आजकल सिलाई में ओवर टाइम कम लगता है जबकि फिनिशिंग में महिला मजदूरों का रोज 2 घण्टे और पुरुष मजदूरों की 3 मार्च से 18 मार्च के दौरान प्रतिदिन सुबह 9 से रात 1 बजे तक ड्युटी। फरवरी में कम्पनी ने 3 रविवार को ओवर टाइम करवाया। भुगतान दुगुनी दर से करते हैं पर ओवर टाइम को पे-स्लिप में दिखाते नहीं। साढे दस घण्टे तक काम में चाय के लिये कोई समय नहीं देते। रात 1 बजे तक रोकते हैं तब 25 रुपये रोटी के लिये देते हैं और 7½ से 8½ का समय बाहर रेहड़ी पर खाने के लिये देते हैं। फैक्ट्री में कैन्टीन है पर भोजन नहीं बनता, चाय भी नहीं बनती। यहाँ काम करते दो हजार मजदूरों में ज्यादा सँख्या महिला मजदूरों की है। कम्पनी एक-एक मिनट का हिसाब रखती है, एक मिनट देरी से पहुँचने, छूटते समय एक मिनट पहले कार्ड पंच करने पर महीने में 50-80 रुपये काट लेते हैं।''

✶ ***एडिगियर इन्टरनेशनल मजदूर :*** ''प्लॉट 150 सैक्टर-4 आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ काम आरम्भ होता है और साँय 6 बजे कार्ड पंच कर छुट्टी करना दिखाते हैं जबकि कार्य चलता रहता है। रात पौने आठ से 9 तक भोजन अवकाश के बाद रात 1 बजे तक काम, अगली सुबह 5 बजे तक काम। जनवरी, फरवरी, 18 मार्च तक 650 सिलाई कारीगर, 100 कटिंग वाले तथा 350 फिनिशिंग विभाग वरकर दिन-रात एक किये थे। सिलाई कारीगरों ने एक दिन रात 8 तक तो दूसरे दिन रात 1 बजे तक काम किया और हर रविवार को सुबह 9½ से साँय 5 तक। फिनिशिंग में 80 महिला मजदूरों ने रोज सुबह 9½ से रात 8 तक और प्रत्येक रविवार को सुबह 8 से साँय 6 तक काम किया। फिनिशिंग में पुरुष मजदूरों ने जनवरी में रोज रात एक बजे तक, 14 बार अगली सुबह 5 बजे तक और हर रविवार को सुबह 9½ से रात 8 बजे तक काम किया। प्रेसमैनों ने तो जनवरी में 26 बार सुबह 9½ से अगली सुबह 5 बजे तक काम किया। सुबह 5 बजे छूट कर 4½ घण्टे बाद 9½ से फिर काम में लगना। यही सब फरवरी में। अत्याधिक काम से 19 में से 3 प्रेसमैन बीमार पड़ गये और होली के बाद 11 ही काम पर लौटे हैं। होली के बाद 300 सिलाई कारीगर, 100 फिनिशिंग विभाग वरकर और 40 कटिंग वाले भी नहीं लौटे हैं। ***एडिडास, रीबोक, पूमा, बेनाटॉन, जमूरी*** आदि द्वारा माल की भारी माँग है और इधर मजदूरों की बहुत कमी है। कम्पनी ओवर टाइम दिखाती ही नहीं और भुगतान सिंगल रेट से करती है। फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है। रात 1 बजे तक पर रोटी के लिये मात्र 25 रुपये और अगली सुबह 5 बजे तक पर सिर्फ 40 रुपये देते हैं.... नाइट लगवाते हैं तब रोटी के लिये कम से कम 50 रुपये और फुल नाइट लगवाते हैं तब 100 रुपये तो होने ही चाहियें। मजदूर अब ओवर टाइम के लिये मना कर रहे हैं और तनखा बढाने की कह रहे हैं ताकि नये मजदूर काम करने आयें। काम का इतना ज्यादा दबाव और तनखा देरी से, जनवरी की 18 फरवरी को दी। फरवरी माह की तनखा 13 मार्च तक नहीं दी थी....... 14 मार्च को फैक्ट्री के अन्दर अपनी-अपनी जगह मजदूर गये और किसी भी विभाग में काम शुरू नहीं किया। आपस में बातें कर ली थी। अगले रोज, 15 मार्च को भी सब मजदूर अन्दर गये और बैठे — कोई हल्ला नहीं किया। जनरल मैनेजर और मैनेजिग डायरेक्टर ने 18 मार्च को तनखा देने का आश्वासन दिया तब 16 मार्च को कार्य आरम्भ किया। साहबों को बता दिया कि ऐसे ही तनखा में देरी रही तो कहीं और काम देखेंगे। इधर मार्च की तनखा 7 अप्रैल को देने की तैयारी है......'' ■

समय का अकाल....समय का काल

✶ऋतु, रात और दिन, चार पहर, 24 घण्टे, एक घण्टे में 60 मिनट, एक मिनट में 60 सैकेण्ड, सैकेण्ड में विभाजन — माइक्रो सैकेण्ड। समय का विभाजन क्या हमारे समय का विस्तार है ? समय का विभाजन क्या हमारे समय की मृत्यु है? काल मानी समय और काल मानी मृत्यु।

✶समय के विभाजन और काम के बीच निकट रिश्ता है। अधिक काम और समय का बढता विभाजन साथ-साथ चलते नजर आते हैं। काम तो पौराणिक कथाओं का रक्तबीज है — जितना करो उतना ही बढता जाता है। समय के विभाजन का बढता सिलसिला, अधिक से और अधिक होता काम क्या मानव जीवन का विस्तार है ? क्या समय का बढता विभाजन, अधिकाधिक होता काम मानव जीवन को, पृथ्वी पर समस्त जीवन को विनाश की कगार पर ले आया है ?

हमारी गतिविधियाँ कब काम में बदली यह धुँधलके में है, पशुपालन के प्रारम्भिक दौर में हो सकता है। कृषि ने काम को स्थापित किया। फैक्ट्री उत्पादन घड़ी लाया। व्यापक समाज में आज समय और काम की स्थिति की एक झलक के लिये यहाँ अपने को दिल्ली-गुड़गाँव-फरीदाबाद में फैक्ट्री मजदूरों के दायरे में सीमित रखेंगे।

● आठ घण्टे ड्युटी वाले मजदूरों की सँख्या घट रही है। जब काम कम बताते हैं तब 12 घण्टे की ड्युटी सामान्य होती जा रही है। काम है मानी नाइट लगना, फुल नाइट लगना यानी सुबह 9 से रात 1 बजे तक, अगली सुबह 5 बजे तक काम करना। महीने में 15-20 नाइट, 5-7 फुल नाइट लग रही हैं की चर्चा वहाँ काम करने के लिये मजदूरों को आकर्षित करने का कार्य करती है।

● इतने समय खटते हैं खुराकी, कमरे के किराये, कपड़े-लत्ते, घर-परिवार को कुछ पैसे देने, दवा-दारू, बाहर चाय-ठण्डा-नाश्ता, मोबाइल, कर्ज पर ब्याज के लिये। बात लालच की नहीं बल्कि 12-16-20 घण्टे तन को तान कर और मन को मार कर किसी तरह दलदल में ज्यादा धँसने से बचने की है।

● फैक्ट्रियों में स्थाई मजदूरों की सँख्या घट रही है। टेम्परेरी वरकरों की गिनती सत्तर प्रतिशत को पार कर गई है। दो-चार-छह महीने में नौकरी छूटना सामान्य हो गया है। अधिकतर मजदूरों के लिये 12-16-20 घण्टे काम और खाली होना - काम की तलाश में होना सामान्य बातें हो गई हैं।

● अपने मकान वाले मजदूरों की सँख्या घट रही है। किराये के कमरों में रहने वाले मजदूरों की सँख्या बहुत तेजी से बढ रही है। एक कमरे में 4-5 का रहना। कमरे में ही भोजन बनाना। पचास-सौ के साथ साँझा नल और शौचालय।

● वाहन उद्योग हो चाहे कपड़ा उद्योग, हर क्षेत्र में काम की रफ्तार बढ रही है, काम का बोझ बढ रहा है। इलेक्ट्रोनिक्स का उत्पादन यन्त्रों में प्रवेश सामान्य हो गया है।

● तेज रफ्तार और लम्बे समय तक लगातार काम के कारण कार्यस्थलों पर एक्सीडेन्टों की सँख्या बढ रही है। निवास से फैक्ट्री आने-जाने के दौरान दुर्घटनायें बढ रही हैं। रहने और कार्य करने के स्थान बीमार करते हैं।

वस्तुस्थिति का यह बहुत संक्षिप्त बयान भी डरा देता है। लाखों फैक्ट्री मजदूर क्यों झेल रहे हैं इन हालात को ?

बहुत महीन ताने-बाने हमें जकड़े हैं। आज और अभी की चिन्ता भ्रमित करती है जबकि

— हमारी नींद तक पूरी नहीं हो रही।

— मिलने-जुलने का समय नहीं है।

आज की तुलना में बहुत धीमी और बहुत कम क्षमता वाली भाप-कोयले के दौर वाली मशीनों पर काम करते हमारे पुरखों ने आठ घण्टे काम, आठ घण्टे आराम, आठ घण्टे मन अनुसार गतिविधि के लिये मिल कर कदम उठाये थे। सवा सौ वर्ष पहले.

इन सवा सौ वर्षों में काम की तीव्रता और क्षमता में वृद्धि चौंकाने वाली है। घड़ी इलेक्ट्रोनिक घड़ी बन गई है। परिणाम हैं : 1. आबादी के एक हिस्से का इस कदर काम के बोझ से दबना कि मरने तक की फुर्सत नहीं। 2. आबादी के दूसरे बढते हिस्से को फालतू बना देना, फालतू के ढेर में बदल देना।

फालतू के ढेर में धकेल दिये जाने का डर सर्वव्यापी और सर्व शक्तिशाली-सा बन गया है। अकेले-अकेले के हमारे प्रयास इसके सम्मुख असहाय हैं। अकेले-अकेले तो हम अपने-अपने तन-मन-मस्तिष्क को और अधिक तान ही सकते हैं.... इस कदर तन गये हैं कि खालीपन और अकेलापन महामारी बन गया है।

कारखाने वह स्थल हैं जहाँ मिल कर कुछ करना आवश्यक भी लगता है और सम्भव भी। इस कारखाने से उस कारखाने जाने का बढता चलन कई कारखानों के मजदूरों के लिये मिल कर कुछ करना सम्भव बनाता है। एक चीज का उत्पादन, उदाहरण के लिये कार का उत्पादन आज सैंकड़ों फैक्ट्रियों के

उत्पादन को मिला कर होता है। यह इन सैंकड़ों फैक्ट्रियों के मजदूरों के लिये मिल कर कुछ करना आवश्यक बना देता है। जिस बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है उसने औद्योगिक क्षेत्रों का निर्माण जरूरी बना दिया है।औद्योगिक क्षेत्र के आधार पर मजदूरों द्वारा मिल कर कुछ करना सम्भव और आवश्यक हो गया है। औद्योगिक क्षेत्रों का ताना-बाना विश्व-भर में फैला है.......

तकनीकि विकास समय की बचत करेगा की बात व्यवहार में यह निकली है कि तकनीकि विकास हमारे समय को ही खा गया है। वायु, जल, जमीन का प्रदूषण संग-संग.....

कार्यरत को अधिकाधिक तानना और बड़ी सँख्या को फालतू के ढेर में बदलना दमन व नियन्त्रण के लिये एक बहुत बड़ी मशीनरी को जरूरी बना देता था। सवा सौ वर्ष पहले दुनियाँ में किसी भी सरकार के पास एक लाख की सँख्या वाली फौज नहीं थी। आज भारत सरकार के पास ही 13 लाख की थल सेना...... फिर वायु सेना..... जल सेना..... हमारे समय का एक-दो घण्टा तो तोप-गोले खा रहे हैं।■

असंगत हैं कानून

दिल्ली, गुड़गाँव, आई एम टी मानेसर, और फरीदाबाद में फैक्ट्रियों से कुछ उदाहरण :

✶प्लॉट 110-111 उद्योग विहार फेज-4,गुड़गाँव स्थित ***हरसूर्या हैल्थकेयर*** फैक्ट्री में 650-700 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में आई वी कैनुला बनाते। बहुत अधिक निर्धारित उत्पादन के कारण हाथों में सूईयाँ बहुत चुभती, टेप लगा कर काम करो, मशीन बन्द नहीं होनी चाहिये। फैक्ट्री में जगह-जगह कैमरे। तनखा देरी से। गालियाँ।

राहत के लिये सितम्बर-अक्टूबर 2010 में एक यूनियन से जुड़े। स्थाई मजदूर से 2000 रुपये और कैजुअल वरकर तथा ठेकेदार के जरिये रखे मजदूर से 1000 रुपये चन्दा कर यूनियन के लिये 4½ लाख रुपये से अधिक एकत्र।

कम्पनी ने कैजुअल वरकरों को ठेकेदार के जरिये रखे मजदूर बनाया। एतराज पर फैक्ट्री में यूनियन प्रधान को 11 दिसम्बर को निलम्बित किया। विरोध में उत्पादन में ढील। कम्पनी ने एक-एक कर मजदूर नौकरी से निकाले और गेट पर दो बन्दूक वाले खड़े किये। पर गाली देना बन्द और तनखा समय पर देनी आरम्भ की।

मार्च 2011 में मैनेजमेन्ट और यूनियन के बीच तीन वर्षीय दीर्घकालीन समझौता हुआ। मजदूरों को कुछ और राहत..... मजदूर राहत की साँस ले भी नहीं पाये थे कि 8 अप्रैल को कम्पनी ने मजदूरों को उकसा दिया। एक स्टाफ वाला मजदूरों से बोला कि फैक्ट्री में यूनियन प्रधान बिक गया है। प्रधान ने स्टाफ वाले को टोका। विवाद। मैनेजमेन्ट ने प्रधान तथा एक अन्य मजदूर को निलम्बित कर दिया।

इस पर 8 अप्रैल को ही रात की शिफ्ट में मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। सुबह की शिफ्ट के मजदूरों को फैक्ट्री में प्रवेश नहीं करने दिया तो रात की शिफ्ट के मजदूर फैक्ट्री से नहीं निकले। कैन्टीन नहीं है, फैक्ट्री के अन्दर जमे 300-350 मजदूरों को साथी मजदूरों ने दीवार के ऊपर से भोजन पहुँचाया। फैक्ट्री के अन्दर और बाहर 72 घण्टे तक मजदूरों का दबदबा रहा। ''बाहर निकलो-बाहर निकालो'' के न्यायालय के आदेश। यूनियन के कहने पर 72 घण्टे से फैक्ट्री में रह रहे मजदूर बाहर निकले।

कम्पनी ने 2 के बाद 5, फिर 7 और फिर 4 को निलम्बित किया। फैक्ट्री के पास पार्क में मजदूर धरने पर। श्रम विभाग में तारीखें। मैनेजमेन्ट ने 7 को छोड़ कर बाकी सब द्वारा अन्दर आ कर काम करने की बातें की।

25 अप्रैल को उप श्रमायुक्त के कार्यालय में मैनेजमेन्ट और यूनियन के बीच समझौता वार्ता। समझौते के इन्तजार में 150 मजदूर। साँय 6 बजे पुलिस आई और तब दो कैन्टर गाड़ी फैक्ट्री के अन्दर माल भरने गई। पार्क में बैठे मजदूर दौड़ कर फैक्ट्री गेट पर पहुँचे। पुलिस ने लाठियाँ मार कर खदेड़ा। मजदूर सड़क के बीचों बीच बैठ गये। और पुलिस बुला ली गई।

यूनियन लीडर आये। सड़क खाली कर पार्क में बैठने को कहा। यूनियनों की मीटिंग कर एक्शन लेंगे।

26 अप्रैल को सुबह 10 बजे से 300 मजदूर इन्तजार में। दो बजे 40 यूनियन लीडर आये। भाषण दिये। और बोले कि जो फैसला करें उसे मान लेना।

27 अप्रैल को यूनियन और मैनेजमेन्ट के बीच समझौता हो गया। यूनियन के एक बड़े लीडर ने 2½ बजे समझौता सुनायाः 7 को बाहर छोड़ कर बाकी मजदूर अन्दर जा कर काम करें.... मौजूद 250 मजदूर गुस्से में उबल पड़े। समझौता सुनाने वाले नेता को खरी-खरी सुना कर खदेड़ दिया। दूसरे बड़े नेता ने पुचकारने की कोशिश की तो मजदूरों ने उसे भी गाली दे कर भगा दिया। फैक्ट्री लीडरों और मजदूरों ने अलग से मीटिंग की। फँस गये हैं — फँसा दिये गये हैं की बात बिलकुल साफ हो गई थी। सात को बाहर छोड़ कर 28 अप्रैल को मजदूर फैक्ट्री में गये।

इन दो वर्षों में इस क्षेत्र में ही ***रीको ऑटो, डेन्सो, सेन्डेन विकास, वीवा ग्लोबल......*** वाले कटु-कड़वे अनुभव अब हरसूर्या हैल्थकेयर मजदूरों को भी हुये हैं। आज के हालात में

राहत के लिये भी संगठित प्रयास कैसे करें? इस प्रश्न के उत्तर के लिये अनुभवों तथा विचारों पर आपस में चर्चायें बहुत जरूरी हैं।

✶ ***साहनी एक्स्पोर्ट मजदूर :*** ''बी-144 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 12-1 बजे तक रोज काम, अगली सुबह 4 बजे तक रोक लेते हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं। महिला मजदूरों को रात 12 और पुरुष मजदूरों को रात 1 बजे छोड़ते हैं। महीने में 5-6 बार अगली सुबह 4 बजे तक सब पुरुष मजदूरों को रोकते हैं। महीने में 250 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम..... फरवरी माह में रात को कार्य करते-करते एक सिलाई कारीगर की मृत्यु हो गई। रात 12-1 तक कार्य पर रोटी के लिये 15 रुपये और अगली सुबह 4 बजे तक के लिये 25 रुपये देते हैं — उसी रोज नहीं बल्कि 20 दिन बाद यह पैसे देते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। यहाँ ***बेला, गुडिनी, चियो, दहला*** का माल बनता है। धागे काटने, मोती-सितारे लगाने, आल्टर के कार्य करती 100 महिला मजदूरों को 8 घण्टे के 125 रुपये। प्रेसमैनों को 8 घण्टे के 170 रुपये। दाग हटाने वालों की तनखा 5000, मेजरमेन्ट चेकर की 5500 तथा 150 सिलाई कारीगरों की 6000 रुपये। ई. एस.आई. व पी.एफ. 400 मजदूरों में 5-6 की ही हैं। पीने का पानी खराब। शौचालय गन्दे। यहाँ कम्पनी की बी-146 वाली फैक्ट्री का भी फिनिशिंग वाला कार्य होता है।''

✶ ***आर आर ट्रेन्ड्स श्रमिक :*** ''एक्स-1 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में काम का बहुत बोझ है — महिला मजदूर प्रत्येक घण्टे में 40 पीस के धागे काटे, चेकर हर घण्टे में 70 पीस जाँचे, सिलाई कारीगर का डिजाइन अनुसार प्रत्येक घण्टे का टारगेट। एक भी पीस कम होने पर लाइन इन्चार्ज, फिनिशिंग इन्चार्ज गाली देते हैं। प्रोडक्शन मैनेजर पहले पुचकारता है और कहता है कि तुम्हारे लिये एक-दो पीस का महत्व नहीं है पर कम्पनी के लिये बहुत महत्व है..... निर्धारित उत्पादन दो या बाहर जाओ। सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन कम्पनी देती है पर एक जैसा काम करते सिलाई कारीगरों में 50 को 8 घण्टे के 285 रुपये और 200 को 259 रुपये देती है। काम सुबह 9 बजे आरम्भ होता है, सिलाई में रात 8½ तक तथा फिनिशिंग में रात 9½ तक रोज काम, रात 1 बजे तक, अगली सुबह 5 बजे तक रोक लेते हैं। तीसों दिन काम — रविवार को साँय 5½ छोड़ देते हैं। महिला मजदूरों को भी पूरी रात रोक लेते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और फिनिशिंग विभाग मजदूरों के 500-700 रुपये हर महीने गड़बड़ कर खा भी जाते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 400 मजदूरों में मात्र 5 की हैं। पीने के पानी में कीड़े।''

✶ ***लोटस इम्ब्राइड्री वरकर :*** ''बी-88 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, महीने के तीसों दिन। धागे काटने वाली 16-17 वर्ष की लड़कियों की सुबह 9 से रात 8 की ड्युटी, रोज 11 घण्टे काम पर 26 दिन के 3500-3800 रुपये और रविवार के 115 रुपये अलग से। पुरुष हैल्परों को रोज 12 घण्टे पर 26 दिन के 4000-4500 तथा कम्प्युटर इम्ब्राइड्री ऑपरेटरों को 6000-7000 रुपये, रविवार के लिये अतिरिक्त पैसे। मैनेजर बहुत गाली देता है। ई.एस.आई. व पी.एफ. 80 मजदूरों में 10 की ही हैं।''

✶ ***श्री ओम इन्टरप्राइजेज मजदूर :*** '' ए-98/3 ओखला फेज-2 स्थित प्रिन्टिंग प्रेस में 150 मजदूरों की सुबह 9 से रात 9 की शिफ्ट है, लगातार 36 घण्टे भी रोक लेते हैं। ओवर टाइम के 15-20 रुपये प्रतिघण्टा। हैल्परों की तनखा 3500-3600 तथा ऑपरेटरों की 5000-7000 रुपये। तनखा देरी से, फरवरी की 28 मार्च को दी और मार्च की तनखा आज 15 अप्रैल तक नहीं दी है। ओवर टाइम के पैसे तो 4-6 महीने बाद देते हैं। ई.एस.आई. व पी. एफ. 15-20 की ही हैं।''

✶ ***एन आई आई टी टैक्नोलोजीज मजदूर:*** ''223-224 उद्योग विहार फेज-1 स्थित आई टी कम्पनी में छह-सात हजार वरकर हैं और हाउसकीपिंग में हम 33 मजदूरों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं देते। मार्च माह में हमारी 8 घण्टे की तीन शिफ्ट थी और हमें 31 दिन के 3850 रुपये दिये। इधर 13 अप्रैल से हमारी 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट कर दी हैं और कहा है कि हमें 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 5800 रुपये देंगे। हम में किसी की भी ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं।''

✶ ***मोडलामा श्रमिक :*** '' 105-106 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 8 की शिफ्ट है और फिर रात 10½, रात 2, अगली सुबह 6 बजे तक रोक लेते हैं। चार हजार से ज्यादा मजदूर यहाँ ***गैप, ओल्ड नेवी, आई एम सी, डी के एन वाई, जेजिल*** आदि-आदि का माल बनाते हैं। फिनिशिंग विभाग में कार्यरत 600-700 महिला मजदूरों की तनखा 3600-4000 रुपये, जबरन रात 10½ बजे तक रोक लेते हैं, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से, पुरुष व महिला सुपरवाइजर गाली देते हैं। पुरुष हैल्परों की तनखा 4200-4300 रुपये। उत्पादन वाले 3000 सिलाई कारीगरों (200 महिला हैं) में 1000 पीस रेट पर और दो हजार 4400-4500 रुपये तनखा पर। ढाई सौ सैम्पलिंग टेलरों की तनखा 4893 रुपये। महीने में 100-150 घण्टे ओवर टाइम..... स्थाई सिलाई कारीगरों को प्रतिदिन के 2 घण्टे ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से — इन 50 घण्टों में से 10 घण्टे तक ही

पे-स्लिप में दिखाते हैं और पैसे तनखा के साथ देते हैं। फिर 15-20 तारीख के दौरान दो लिफाफे देते हैं — एक लिफाफे में दुगुनी दर वाले बचे पैसे और दूसरे में सिंगल रेट से पैसे रखते हैं। स्थाई हैल्पर, चेकर, प्रेसमैन की पे-स्लिप में 2 घण्टे ही ओवर टाइम के दिखाते हैं तथा उनका भुगतान ही दुगुनी दर से करते हैं और बाकी सब समय के पैसे सिंगल रेट से। कैजुअल वरकरों को पूरे ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। भविष्य निधि में भी कम्पनी गड़बड़ी करती है — पाँच वर्ष से तो पी.एफ. की पर्ची नहीं मिली है। साहब लोग गाली बहुत देते हैं। पानी ठीक नहीं। शौचालय बहुत-ही गन्दे।''

★ ***ईस्टर्न मेडिकिट वरकर :*** '' उद्योग विहार में फेज-1 में 195,196, 205, 206 तथा फेज-2 में 292 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में कैजुअल वरकरों ने 20 अप्रैल से काम बन्द करना आरम्भ किया तब मार्च की तनखा 22 अप्रैल को दी। कैजुअल वरकरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, ओवर टाइम के 18 रुपये प्रतिघण्टा...... फरवरी माह के ओवर टाइम के पैसों के लिये 10 अप्रैल को काम बन्द करना शुरू किया तब 12 अप्रैल को भुगतान किया।''

★ ***सुरक्षा कर्मी :*** '' घोड़ा फार्म के पास, सैक्टर-23 में कार्यालय वाली ***एस एल वी सेक्युरिटी*** 27-28 हजार गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। साप्ताहिक अवकाश नहीं। रोज 12 घण्टे पर 30 दिन के 6000 रुपये हाथ में देते हैं — ई.एस.आई. व पी.एफ. राशि काट कर। झपकी लेते देख लिया तो 300 रुपये काट लेते हैं।''

★ ***ग्रैण्ड प्रिन्ट्स मजदूर :***''134 उद्योग विहार फेज-4 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से एक दिन रात 8 तक तथा दूसरे रोज रात 2 बजे तक काम। यहाँ सिगरेट डिब्बी, दवा पैकिंग आदि की औद्योगिक छपाई होती है। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से..... पर हैल्परों की तनखा 2200-2800 और ऑपरेटरों की 4000-5000 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 300 मजदूरों में 50 की ही हैं।''

★ ***नीलम इन्टरनेशनल श्रमिक :***''556 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में महिला मजदूरों (12-15 वर्ष की लड़कियाँ भी) को भी पूरी रात रोक लेते हैं। सुबह 9½ से रात 9 की ड्युटी रोज है और अगली सुबह 6 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हाथ का काम करती महिला मजदूरों की तनखा 4200 और सिलाई कारीगरों की 5500 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 500 मजदूरों में किसी की नहीं हैं। पुरुष व महिला मजदूरों का साँझा शौचालय — तीन मंजिला फैक्ट्री में नीचे मात्र दो शौचालय हैं, लाइन लग जाती है। तनखा देरी से, मार्च की 22 अप्रैल को दी। नौकरी छोड़ने पर किये काम के पैसों के लिये बहुत चक्कर कटवाते हैं।''

★ ***होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर श्रमिक:*** ''प्लॉट 1 व 2 सैक्टर-3 स्थित फैक्ट्री में कम्पनी ने दिसम्बर में उत्पादन बढाने के बाद 1 अप्रैल से फिर बढा दिया है। मोटर साइकिल प्लान्ट में लाइन दो पर एक शिफ्ट में 1000 की जगह 1025 की और अब 1100 गाड़ी बनाना निर्धारित। पानी पीने, पेशाब करने, साँस लेने का समय भी कम्पनी खा गई..... बढाये उत्पादन का लगभग पूरा बोझ ठेकेदारों के जरिये रखे 8000 मजदूरों पर और बदले में एक पैसा भी नहीं। भिवाड़ी में नई फैक्ट्री में यहाँ ठेकेदारों के जरिये रखों में से कुछ को कम्पनी स्थाई करेगी का भ्रम भी टूट गया है ..... इस्तेमाल करो और फेंको की कम्पनी की नीति अब साफ-साफ दिखने लगी है। मानेसर फैक्ट्री से 2010 में 18 लाख दुपहियों के उत्पादन लक्ष्य को कम्पनी ने 2011 में 20 लाख कर दिया है। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की बात न तो यूनियन और न ही मैनेजमेन्ट सुनती। लाइनों को कभी यहाँ पर तो कभी वहाँ पर मजदूर रोक रहे हैं..... 16 अप्रैल को एक शिफ्ट में एक मोटर साइकिल लाइन कई बार रोकी गई, 1100 की बजाय 950 गाड़ियाँ ही बनी।''

★ ***एस के एच कामगार :*** '' सैक्टर-8 आई एम टी में ***मारुति सुजुकी*** के चौथे गेट के अन्दर स्थित फैक्ट्री में 300 मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। रविवार को दिन में 12 घण्टे काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। विशाल पावर प्रेसें (800 टन की) लाइन से लगी हैं। अलग-अलग डाई। आरम्भ में 1700 पीस तो आखिरी मशीन से भी 1700 पीस। मशीन बन्द नहीं होनी चाहिये। लाइन क्लीयर होनी चाहिये। पानी, पेशाब के लिये भी समय नहीं। बहुत मेहनत का काम, 15 किलो की शीट हाथों से उठानी पड़ती हैं। एक पीस रिजैक्ट पर बहुत झाड़।''

★ ***कुरुबॉक्स वरकर :*** ''प्लॉट 153 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में फरवरी की तनखा 15 अप्रैल को जा कर दी और मार्च का वेतन आज 30 अप्रैल तक नहीं दिया है। दिसम्बर में किये ओवर टाइम के भुगतान के लिये मजदूरों ने 24 व 25 अप्रैल को काम बन्द किया. ... आगे हो कर बोल रहे तीन को कम्पनी ने नौकरी से निकाला.. ... 27 अप्रैल को पैसे दिये। डेढ-दो वर्ष से काम कर रहे 250 मजदूरों को कम्पनी की प्लॉट 12 सैक्टर-5 फैक्ट्री से 25 मार्च को इस फैक्ट्री में भेजा..... इन मजदूरों का पी.एफ. नम्बर बदल दिया है।'' ★ ***ट्रैक ऑटो कम्पोनेन्ट्स मजदूर :*** ''प्लॉट 21 सैक्टर-7 स्थित फैक्ट्री में पानी की भारी समस्या है। भोजन अवकाश के

समय ठण्डा तो क्या, गर्म पानी भी मुश्किल से मिलता है। ऊपर तपती चद्दरों की छत वाले प्रेस शॉप के हिस्से में 18 पावर प्रेस हैं और ...... एक भी पँखा नहीं है। यहाँ 18 अप्रैल को एक मजदूर की चार उँगली कट गई। ***मारुति सुजुकी*** की ऑडिट 26 अप्रैल को फैक्ट्री पहुँची तब मारुति डाई वाली 160 टन की पावर प्रेसों पर काम कर रहे मजदूरों को ही ईयर प्लग व हैल्मेट दिये...... और ऑडिट के जाते ही वापस ले लिये। प्रेस शॉप में लगातार भारी शोर से बहरे होने से बचने के लिये मजदूर कई बार ईयर प्लग माँग चुके हैं पर कम्पनी देती ही नहीं।''

✶ ***रोलैक्स हॉजरी श्रमिक :*** ''प्लॉट 24 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में काम करते 300 मजदूरों का महीने में 200-250 घण्टे ओवर टाइम। जबरन रोकते हैं। ओवर टाइम के लिये मात्र 15 रुपये प्रतिघण्टा और यह भी 180 घण्टे का ही.....180 घण्टे से अधिक वाले ओवर टाइम के पैसे नहीं देते। गाली देते हैं, मारपीट भी। शौचालय गन्दा।''

✶ ***एडिगियर इन्टरनेशनल कामगार :*** ''प्लॉट 150 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में अप्रैल में बायरों के बहुत दौरे...... ***पूमा*** को हर सप्ताह 25,000 पीस चाहियें....... ***जम्बूरी***........आस्ट्रेलिया के लिये जीन्स.....***वीवा***...... ***आर एस एस*** की वर्दी..... ***एडिडास***। तनखा में देरी के विरोध में मजदूरों द्वारा मार्च में दो दिन काम बन्द करने के कारण कम्पनी ने मार्च का वेतन 7 अप्रैल को देने की तैयारी की थी लेकिन बायरों के दौरे बाधा बने क्योंकि कम्पनी बायरों को भी ओवर टाइम दिखाना नहीं चाहती। मार्च माह में 150-180 घण्टे ओवर टाइम में से 30 घण्टे ही दस्तावेजों में......साहब बोले कि तनखा ले लो, ओवर टाइम के पैसे बाद में दे देंगे पर मजदूर बोले कि इक्ट्ठे दो। ऐसे में मार्च की तनखा व ओवर टाइम 17-21 अप्रैल के दौरान दी गई। अधिक माँग के कारण काम का भारी दबाव... फिनिशिंग विभाग में 300 से ज्यादा मजदूर हर शनिवार को सुबह 9½ बजे काम आरम्भ कर रविवार दोपहर 1 बजे तक काम करते रहे हैं, लगातार 27½ घण्टे काम। लगातार 27½ घण्टे काम पर एतराज करने पर कम्पनी ने 27 अप्रैल को फिनिशिंग इन्चार्ज को नौकरी से निकाल दिया।''

✶ ***ओरियन्ट फैन मजदूर :*** ''प्लॉट 11 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में काम का बहुत दबाव है, बहुत तेजी से काम करना पड़ता है। पँखों का 2005 तक 6 महीने का सीजन था, 2005-2008 के दौरान यह 9 महीने का हो गया और अब तो पूरे वर्ष सीजन रहता है। महीने में 3 से 5 लाख पँखे बनाना — महीने में 100, 150, 250 घण्टे ओवर टाइम। महीने में 4-5 बार तो सुबह 8½ से रात 9 बजे तक काम के बाद पुनः रात 10 बजे से काम में जुट जाओ, सुबह 6 तक अथवा एक कनवेयर पर 2000 पँखे बनाने तक काम करो और सौ जाओ...... सुबह 8½ से फिर काम आरम्भ करने के लिये। अब 5 कनवेयर हैं और इधर दो महीने से एक कनवेयर पर रात 8½ से अगली सुबह 9 की शिफ्ट भी आरम्भ कर दी है। लगातार 20-21 घण्टे काम करवाते हैं तब भी रोटी के लिये पैसे नहीं देते। पँखा प्लान्ट में 50-60 स्थाई मजदूर हैं और यह ओवर टाइम की बजाय पीस रेट लेते हैं जो कि दुगुनी दर से ज्यादा पड़ता है। तीन सौ कैजुअल वरकरों और ठेकेदार के जरिये रखे 150 जॉब कार्ड वालों को ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से। ठेकेदारों के जरिये रखे 150 से ज्यादा अन्य मजदूरों को ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और इधर तीन महीनों से ही इनकी ई.एस.आई. व पी.एफ. लागू की हैं। एक ठेकेदार के जरिये रखे 15 मजदूरों की तनखा 3000-3500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। पँखे की ब्लेड बनाने वाला प्लान्ट नया है और इसमें काम करते 100 मजदूर ठेकेदार के जरिये रखे हैं। बल्ब प्लान्ट में 300 से ज्यादा मजदूर.......''

✶ ***फाइन टर्न श्रमिक :*** ''प्लॉट 240 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3500 और ऑपरेटरों की 4000-5000 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, महीने के तीसों दिन। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और घपला कर हर महीने 30-40 घण्टे खा भी जाते हैं। लोहे का बुरादा हटाने के लिये हैल्परों को दस्ताने नहीं देते। गाली देते हैं। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं। छोड़ने पर फण्ड के पैसे निकालने का फार्म नहीं भरते, चक्कर कटवाते हैं। पीने का पानी खारा है। शौचालय गन्दे। तनखा देरी से। यहाँ ***जी ई मोटर (मैराथन मोटर), एल एम एल, रेवा ऑटो*** की शाफ्ट बनती हैं।''

✶ ***फ्लैश इलेक्ट्रोनिक्स वरकर :*** '' प्लॉट 3, 8, 9 सैक्टर-27 बी स्थित फैक्ट्रियों में 28 अप्रैल को पावर प्रेस पर एक मजदूर की तीन उँगली कट गई। कम्पनी ने एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी। सैक्टर-16 में प्रायवेट अस्पताल में उपचार....उत्पादन के लिये भारी दबाव, पुरानी खस्ताहाल पावर प्रेसें, लगातार 24 घण्टे चलती रहने के कारण मेन्टेनैन्स नहीं हो पाना, जगह की तंगी के मिले-जुले कारणों से 150 पावर प्रेसें मजदूरों के हाथ काटने में लगी हैं। इधर ई.एस.आई. का स्मार्ट कार्ड कैजुअल वरकरों के लिये आफत बन गया है। स्मार्ट कार्ड के लिये आवश्यक कागज कम्पनी नहीं देती और ई.एस.आई. में डॉक्टर कच्चे कार्ड पर दवाई नहीं देते, कहते हैं स्मार्ट कार्ड बनवाओ। कैजुअल वरकरों में से कुछ के नाम फ्लैश इलेक्ट्रोनिक्स में और कुछ के रेन्सन्स इण्डिया में रखे हैं। जनवरी से देय डी.ए. के 155 रुपये कम्पनी ने मार्च माह की तनखा में भी नहीं दिये।''

आप–हम क्या–क्या करते हैं... (18)

✶अपने स्वयं की चर्चायें कम की जाती हैं। खुद की जो बातें की जाती हैं वो भी अकसर हाँकने-फाँकने वाली होती हैं, स्वयं को इक्कीस और अपने जैसों को उन्नीस दिखाने वाली होती हैं। या फिर, अपने बारे में हम उन बातों को करते हैं जो हमें जीवन में घटनायें लगती हैं — जब-तब हुई अथवा होने वाली बातें। अपने खुद के सामान्य दैनिक जीवन की चर्चायें बहुत-ही कम की जाती हैं। ऐसा क्यों है ?

✶सहज-सामान्य को ओझल करना और असामान्य को उभारना ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के आधार-स्तम्भों में लगता है। घटनायें और घटनाओं की रचना सिर-माथों पर बैठों की जीवनक्रिया है। विगत में भाण्ड-भाट-चारण-कलाकार लोग प्रभुओं के माफिक रंग-रोगन से सामान्य को असामान्य प्रस्तुत करते थे। छुटपुट घटनाओं को महाघटनाओं में बदल कर अमर कृतियों के स्वप्न देखे जाते थे। आज घटना-उद्योग के इर्द-गिर्द विभिन्न कोटियों के विशेषज्ञों की कतारें लगी हैं। सिर-माथों वाले पिरामिडों के ताने-बाने का प्रभाव है और यह एक कारण है कि हम स्वयं के बारे में भी घटना-रूपी बातें करते हैं।

✶बातों के सतही, छिछली होने का कारण ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्था में व्यक्ति की स्थिति गौण होना लगता है। वर्तमान समाज में व्यक्ति इस कदर गौण हो गई है कि व्यक्ति का होना अथवा नहीं होना बराबर जैसा लगने लगा है। खुद को तीसमारखाँ प्रस्तुत करने, दूसरे को उन्नीस दिखाने की महामारी का यह एक कारण लगता है।

✶और, अपना सामान्य दैनिक जीवन हमें आमतौर पर इतना नीरस लगता है कि इसकी चर्चा स्वयं को ही अरुचिकर लगती है। सुनने वालों के लिये अकसर ''नया कुछ'' नहीं होता इन बातों में।

✶हमें लगता है कि अपने-अपने सामान्य दैनिक जीवन को ''अनदेखा करने की आदत'' के पार जा कर हम देखना शुरू करेंगे तो बोझिल-उबाऊ-नीरस के दर्शन तो हमें होंगे ही, लेकिन यह ऊँच-नीच के स्तम्भों के रंग-रोगन को भी नोच देगा। तथा, अपने सामान्य दैनिक जीवन की चर्चा और अन्यों के सामान्य दैनिक जीवन की बातें सुनना सिर-माथों से बने स्तम्भों को डगमग कर देंगे।

✶कपड़े बदलने के क्षणों में भी हमारे मन-मस्तिष्क में अकसर कितना-कुछ होता है! लेकिन यहाँ हम बहुत-ही खुरदरे ढँग से आरम्भ कर पा रहे हैं। मित्रों के सामान्य दैनिक जीवन की झलक जारी है।

37 वर्षीय मजदूर : सुबह 5 बजे उठता हूँ। रेल लाइनों के पार शौच करने जाना पड़ता है। बहुत ध्यान रखना पड़ता है। गाड़ियों से दो को कटते देखा है — एक तो मेरा रिश्तेदार था।

हाथ-मुँह धो कर साथी के संग भोजन बनाता हूँ। सुबह सब्जी-रोटी बनाते हैं। प्रायवेट बोर से सप्लाई का पानी भरते हैं, इसके लिये 150 रुपये महीना देते हैं। भोजन 7½ तक बना लेते हैं। नहाना, खाना और सवा आठ बजे फैक्ट्री के लिये चल देना.....

कुछ बातें बार-बार दिमाग में आती हैं। इन्दिरा गाँधी मरी तब स्कूल में छुट्टी हुई। तब मैं 8-9 वर्ष का था। घर लौटते समय स्टेशन पर खड़ी गाड़ी के तीन डिब्बों में आग लगी देखी। गाड़ी से सिखों को निकाल-निकाल कर पुलिसवाले मार रहे थे। भीड़ दूर खड़ी थी। ट्रेन से निकाल कर पुलिसवाले एक सिख को लाये और बोरी में बन्द कर दिया। बगल की झुग्गी वाले से पुलिसवालों ने मिट्टी का तेल माँगा तो मैं देखने खड़ा हुआ कि क्या करते हैं। बोरी पर तेल छिड़क कर पुलिसवालों ने आग लगा दी। मैं डर कर भाग लिया। तीन दिन कर्फ्यु। अब सोचता हूँ तो बहुत अजीब लगता है — ऐसा कैसे हो जाता है ?

सुबह 8½ बजे ड्युटी आरम्भ होती है। इस समय न्यू इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद स्थित सिसौदिया इंजिनियरिंग फैक्ट्री में काम कर रहा हूँ। यहाँ होण्डा विभाग में ड्रिल कर रहा हूँ जबकि रेफ्रिजिरेशन एण्ड एयरकंडिशनिंग में आई.टी.आई. किये हूँ। इस समय अकुशल श्रमिक के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन यहाँ 4503 रुपये है पर इस फैक्ट्री में मैं 3500 रुपये तनखा में लगा हूँ....

सन् 2000 में आई.टी.आई. में पढाई पूरी की। पूर्वी उत्तर प्रदेश में गाँव से 20 किलोमीटर दूर प्रतापगढ स्थित आई.टी.आई. प्रतिदिन साइकिल से आता-जाता था। वर्ष में 700 रुपये छात्रवृति मिलती थी। खेती का काम भी करता था। पिताजी फरीदाबाद में गेडोर-झालानी टूल्स फैक्ट्री में स्थाई मजदूर थे पर कई वर्ष से उन्हें नाममात्र की तनखा भी मुश्किल से मिल रही थी।

अप्रेन्टिस के लिये दिल्ली पहुँचा। विधवा सास का त्रिलोकपुरी में मकान था पर छोटे तीन साले और दो सालियों का खर्चा था.. ..अप्रेन्टिस करने की बजाय नोएडा में ठेकेदार गजराज सेक्युरिटी

के जरिये ग्रेटर कैलाश में नान्ज सुपरमार्केट में 3800 रुपये तनखा में लगा। 3½ महीने काम किया, बन्द हो गई... मैनेजर ने 3-4 करोड़ रुपये का घोटाला किया था। दस दिन ढूँढने के बाद नोएडा सैक्टर-11 में कपिल एक्सपोर्ट में 1200 रुपये तनखा में लगा। कपड़े की छपाई और मशीन से कढाई का काम सीखा। ज्यादा समय काम कर पीस रेट पर महीने में 4-6 हजार रुपये हो जाते थे। दो वर्ष काम किया। पिताजी बीमार, गाँव गया।

फैक्ट्री में पहुँच कर बाहर पड़े माल को उठा कर मशीन पर लाता हूँ। 8 घण्टे में 1800 पीस में ड्रिल करना। एक्सीडेन्ट का विशेष डर नहीं है। दिमाग में बहुत सारी बातें चलती रहती हैं.

आठवीं फरीदाबाद में कर के गाँव गया। बाबा (दादा) बूढे हो गये थे। मैं बैलों से हल चलाना और खेती के अन्य काम करने लगा। तीन मील दूर स्कूल से दसवीं की। इन्टर कॉलेज में प्रवेश लिया और प्रतापगढ में विमुक्त जाति छात्रावास में रहने लगा। 50 रुपये महीना छात्रवृति। शनिवार को गाँव आ जाता और सोमवार को वापस जाता — खेती के काम करता, ज्यादा काम होने पर छुट्टी कर लेता। माँ को आँख ठीक करवाने फरीदाबाद ले गया तब 11वीं में फेल हुआ। मानसिक तनाव के कारण 12वीं में भी एक बार फेल हुआ — गर्भ में शिशु की मृत्यु से पत्नी की मृत्यु हो गई। इतने दिन साथ रहे थे, 9वीं में था तब शादी हुई थी.....

12वीं प्रायवेट से की। बगल के गाँव के एक स्कूल में पढा रहे दसवीं फेल पड़ोसी ने गाँव में स्कूल खोला तब मैं उससे जुड़ा। बच्चे 250 हो गये तब 500-500 रुपये में हम 4 अध्यापक हो गये थे। आई टी आई करने के संग-संग खेती के कारण पढाना छोड़ा।

12½ बजे भोजन अवकाश। फैक्ट्री में 400 मजदूर हैं पर कैन्टीन नहीं है। भोजन के लिये स्थान नहीं है। अपनी झुग्गी जा कर खाना खाता हूँ। और, 1 बजे से फिर ड्रिल पर......

1993 में दसवीं करने के बाद नौकरी के लिये हाथ-पैर मारने लगा था। कई फार्म भरे। रेलवे में गैंगमैन बनने के लिये भोपाल, भुवनेश्वर, जोधपुर गया। फिर आई टी आई आधार पर असिस्टेन्ट ड्राइवर के लिये मुम्बई, इलाहाबाद, लखनऊ, कोलकाता के चक्कर काटे। उत्तर प्रदेश नहर विभाग में 1998 में साक्षात्कार के लिये बुलाया, बहुत लोग पहुँचे थे, अधिकारी बोले आज नहीं होगा, पत्र द्वारा सूचित कर दिया जायेगा..... पत्थरबाजी..... ताला लगा कर चले गये..... सूचना पत्र फिर आया ही नहीं। आई टी आई के बाद प्रतापगढ रोजगार कार्यालय में नाम दर्ज करवाया। कहीं नहीं भेजा। 2003 में तथा फिर 2006 में नवीनीकरण करवाया। कहीं नहीं भेजा। 2006 में बोले कि आगे नवीनीकरण करवाने मत आना। मुझे बहुत गुस्सा आया था। काँग्रेस, भाजपा, सपा, बसपा की सरकारें देख ली हैं।

2½ बजे ठेकेदार चाय देता है। पैसे कम हैं पर यहाँ विशेष झिक-झिक नहीं है। जान-पहचान के कई लोग यहाँ काम करते हैं.....

2009 में प्रधान ने खुद ही मनरेगा के तहत जॉब कार्ड बनवा दिया। 2010 में बरसात में प्रधान बोला कि 25 दिन काम करने के तुम्हारे पैसे आ गये हैं, खाता खुलवा कर पैसे ले लो। मैंने तो काम ही नहीं किया है...... समझ लेंगे। ऐसे बहुत लोग मिले जिन्होंने काम तो नहीं किया था पर उनके नाम से पैसे निकल जाते थे। प्रधान ने बैंक मैनेजर को अपने घर बुला कर बैंक खाते खुलवाये। पैसे निकालने होते तब प्रधान कहता कि बैंक जाओ, पासबुक ठेकेदार वहाँ ले गया है। मैं बैंक गया, 2500 रुपये निकाले, ठेकेदार ने उन में से 1700 रुपये ले लिये....... प्रधान अनपढ़ है और राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत है।

साँय 5 बजे छुट्टी कोई नहीं करता। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से हैं फिर भी रोज 12 घण्टे काम किये बिना गुजारा नहीं। कुछ मजदूरों का महीने में 200 घण्टे ओवर टाइम......

दूसरा विवाह 1997 में। बच्चे। पिताजी को कम्पनी से हिसाब नहीं मिला। गाँव में अब पैकेट-बन्द सामान बेचते हैं। बैल बेच दिये हैं और अब 1½ बीघा जमीन ट्रैक्टर से जुतवानी पड़ती है। स्कूल से महीने के 800 रुपये। पत्नी आशा का काम करती है जिसमें तनखा नहीं, मानदेय भी नहीं, पीस रेट है : प्रसव पर 600 रुपये, टीकाकरण पर 50 रुपये, नसबन्दी पर 150 रुपये, पल्स पोलियो में 75 रुपये दिन के, महीने में बैठक करने के 200 रुपये। खर्चा चलाना बहुत मुश्किल। डॉ. अम्बेडकर स्वयं सहायता समूह बनाने का प्रयास..... जगह नहीं है, बकरी रखेंगे कहाँ? भैंस को खिलायेंगे क्या? चारा नहीं है। मुर्गी से बहुत गन्द फैलती है। सिलाई? जानते नहीं। सीखलो.... प्रयास विफल। अप्रेन्टिस के बारे में फिर सोचा ताकि सी टी आई कर आई टी आई में मास्टर लग सकूँ। फरीदाबाद पहुँचा व्हर्लपूल में रेफ्रिजिरेशन एण्ड एयरकंडिशनिंग में अप्रेन्टिस करने..... बोले दूसरे प्रान्त वाले को नहीं रखेंगे। तब व्हर्लपूल में कैजअल वरकर लगा। केबिनेट लाइन पर 3 स्थाई मजदूर, 6 कैजुअल वरकर और ठेकेदार के जरिये रखे 2 मजदूर — तनखायें 20,000 रुपये, 4200 रुपये, 3500-4000 रुपये। खेती में ज्यादा काम के कारण अगस्त 2010 में नौकरी छोड़ कर गाँव गया।

रात 8 अथवा 9 बजे छूट कर रास्ते में सब्जी लेते हुये झुग्गी पहुँचता हूँ। साथी और मुझ में जो पहले पहुँचता है वह रात का भोजन बनाता है। रात को दाल, चावल, रोटी बनाते हैं — दो घण्टे

लगते हैं। सोने में 11-12 बज जाते हैं। नींद नहीं आती..... शोरगुल बिलकुल पसन्द नहीं है, बगल से गुजरती ट्रेनें बहुत डिस्टर्ब करती हैं। नींद पूरी नहीं होती। दिमाग भारी-सा रहता है। (जारी)■

टुकड़ों में आज

लव आनंद, अज़रा तबस्सुम, शमशेर अली, नीलोफर, लख्मीचन्द कोहली, जानू नागर, नसरीन, राबिया कुरेशी, राकेश खैरालिया, बबली राय ने सुनीता आर्यन के मामा जी की डायरियों से प्रेरित हो कर लिखा 'डायरिस्ट' किस्तों में प्रस्तुत है।

सोमवार

शाम छह बजे घर से गया, सुबह साढे चार बजे आया।

चिंतन का नतीजा जितना नफ़ीस है उतना ही बड़ा ख़तरा है।

5 रुपये चाय में लगे हैं। 18 रुपये की यह डायरी लाया हूँ। 1 रुपये की पेंसिल, 1 रुपये का पेन लिया है।

बाकी सब साधारण है।

मंगलवार

सुबह ड्युटी गया।

32.50 रुपये की दवा अपने लिये, 4 रुपये बस में आने-जाने का, 8 रुपये का संतरा। 20 रुपये फोटो।

खुद को कत्ल करने की ज़हमत नहीं उठाई तो कहानी की अगली किश्त नहीं लिखी जायेगी। मुझे अपनी हज़ार कविताओं पर गर्व है।

बाकी सब साधारण है।

बुधवार

आज घर पर ही हूँ। सारे दिन पीता-खाता रहा, नशा-सा हो गया।

चप्पल ठीक कराई।

तलाशने के लिये पैदल चलना लाज़मी है। कोशिश दायरों के बाहर की है।

बाकी सब साधारण है।

गुरुवार

148 का सामान लाया।

सपना अगर देखने वाले के खिलाफ़ हो जाये तो? किरदार का भटकाव गहराई से सोचने पर मजबूर करता है।

अन्य समाचार सब सही है।

शुक्रवार

जैसे कि दिन मेरे लिये ही उदय हुआ हो। घर लौटा 4:45 पर।

180 रुपये लाइट के दिये, 10 रुपये में दूध।

सबका हो जाना क्या है? जब शाम का ठंडक से भरा आसमान गहरा नीला रंग ले लेता है, तो अनंत की छवि देते हुये एक बेचैन रुकावट पैदा करता है।

जो सबका हो, पूरी दुनिया का हो, कुछ चाहत, कुछ अहसास कराता हो, चाहे वह शारीरिक हो या ज़हनी, वो कहीं न कहीं हम सब में एक कनेक्शन बना देता है।

आज का दिन सबसे अच्छा रहा है।

शनिवार

अंजू की स्कूल फ़ीस। शॉल कान्ती को 75 रुपये का। 8 रुपये सिगरेट और माचिस।

अनीता का पत्र जेब में रखे-रखे मुड़ गया है। बाकी सब साधारण है।

इतवार

इतवार था, घर पर ही रहा हूँ।

32 रुपये साइकिल में लगाया है। साइकिल को ठीक किया है।

नश्वरता लाज़मी है पर सुनहरे माहौल की संरचनायें उसे खारिज कर चुकी हैं।

बाकी सब साधारण है।

खींचातान

क्यू एच टालब्रोस कामगार : ''प्लॉट 51 सैक्टर-3 स्थित फैक्ट्री में 100 स्थाई मजदूर, 50 कैजुअल वरकर और ठेकेदारों के जरिये रखे 300 मजदूर ***मारुति सुजुकी, टाटा, एस्कोर्ट्स, सोना स्टीयरिंग*** तथा निर्यात के लिये स्टीयरिंग रोड बनाते हैं। स्थाई मजदूरों में 50 की 8 घण्टे की शिफ्ट है और बाकी सब की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। स्थाई मजदूरों को ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से और कैजुअलों व ठेकेदारों के जरिये रखों को सिंगल रेट से। आरम्भ में 1500-1500 रुपये दे कर और फिर हर महीने 100-100 रुपये देते स्थाई मजदूर एक वर्ष से एक यूनियन से जुड़े हैं। यूनियन के लिये कई अन्य मजदूरों ने भी शुरू में 200-200 रुपये दिये थे। मई-आरम्भ में भड़काने का आरोप लगा कर मैनेजमेन्ट ने एक स्थाई मजदूर को निलम्बित कर दिया। छुट्टी से लौटने पर ठेकेदारों के जरिये रखे 4 मजदूरों को ड्युटी पर नहीं लिया — यूनियन का झण्डा लगवाने में शामिल थे का आरोप। कम्पनी 2 वर्ष के लिये 60-70 ट्रेनी रखती है और परीक्षा पश्चात स्थाई कर देती है — इधर 18 ट्रेनी की परीक्षा के पश्चात 4 को निकाल दिया। इस सब के विरोध में इन्टक यूनियन ने 5 मई को हड़ताल का नोटिस दिया। कम्पनी ने स्टे ले लिया। शुक्रवार, 20 मई से सब मजदूर फैक्ट्री के बाहर बैठे हैं। कल, 23 मई को श्रम विभाग में मैनेजमेन्ट और यूनियन के बीच वार्ता से समाधान नहीं निकला।''

जुलाई 2011

होण्डा से मारुति सुजुकी

कम्पनियों के आज तौर–तरीकों की एक झलक

✶मारुति सुजुकी की गुड़गाँव फैक्ट्री 300 एकड़ में है और यहाँ तीन प्लान्टों की क्षमता वर्ष में 7 लाख कार बनाने की है। यहीं स्थित इंजन प्लान्ट की वर्ष में 7½ लाख इंजन बनाने की क्षमता है।

✶मानेसर में 600 एकड़ में मारुति सुजुकी की दूसरी फैक्ट्री में फरवरी 2007 में उत्पादन आरम्भ हुआ। यहाँ कम्पनी के चौथे असेम्बली प्लान्ट की क्षमता वर्ष में 3 लाख कार बनाने की है। यहीं पर बन रहे पाँचवें असेम्बली प्लान्ट की वार्षिक क्षमता 2½ लाख कार बनाने की है और मार्च 2012 में उत्पादन शुरू करने की बातें हैं। मानेसर में मारुति सुजुकी फैक्ट्री की बगल में सुजुकी मोटर कारपोरेशन की 70% और मारुति सुजुकी की 30% हिस्सेदारी से बनाई सुजुकी पावरट्रेन फैक्ट्री की क्षमता वर्ष में कारों के तीन लाख डीजल इंजन बनाने की है।

✶मारुति सुजुकी ने 1 अप्रैल 2010 से 31 मार्च 2011 के 12 महीनों के दौरान 12 लाख 70 हजार गाड़ियाँ बेची। भारत सरकार के क्षेत्र में कार उत्पादन में कम्पनी का हिस्सा 44.9% है। कम्पनी ने इस वर्ष में 1, 38, 266 गाड़ियाँ 120 देशों को निर्यात की। फैक्ट्रियों की दस लाख की क्षमता से 2 लाख 70 हजार वाहन ज्यादा बनाये।

✶मारुति सुजुकी ने 1.4.2005 से 31.3.2006 के 12 महीनों के दौरान 12 हजार 3 करोड़ 40 लाख रुपये के वाहन बेचे। और, 1.4.2010 से 31.3.2011 के 12 महीनों के दौरान एक्साइज के पैसे जोड़ कर 40 हजार 419 करोड़ 4 लाख रुपये के वाहन बेचे।

✶कम्पनी के अनुसार मारुति सुजुकी में डायरेक्टर, मैनेजर, सुपरवाइजर, अकाउन्ट्स वाले, मार्केटिंग वाले और मजदूर मिला कर 31 मार्च 2011 को 8, 500 लोग थे। इन 8, 500 को 12 महीनों में वेतन-भत्ते आदि में 703 करोड़ 62 लाख रुपये दिये गये। वैसे, 2200-2300 स्थाई मजदूर गुड़गाँव फैक्ट्री में होंगे और 900-950 मानेसर फैक्ट्री में हैं। स्टाफ में 5000 से ज्यादा हैं।

✶मारुति सुजकी ने 1997 में उत्पादन कार्य के लिये ठेकेदारों के जरिये मजदूर रखने आरम्भ किये। फिर उकसा कर सन् 2000 में कम्पनी ने हड़ताल करवाई और कुचली। तब सन् 2001 में 1250 स्थाई मजदूरों की छँटनी की। पुनः सन् 2003 में 1250 स्थाई मजदूर नौकरी से निकाले। गुड़गाँव फैक्ट्री में सन् 2007 में 1800 स्थाई मजदूर और ठेकेदारों के जरिये रखे 4000 वरकर उत्पादन कार्य में थे। इधर 7½ लाख इंजन बनाने वाला प्लान्ट 2008 में आरम्भ हुआ है।

✶अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन आदि के अनुसार मारुति सुजुकी फैक्ट्रियों में पन्द्रह प्रतिशत स्थाई मजदूर हैं और ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर 85% हैं। यहाँ नोकिया फैक्ट्री में 50% स्थाई मजदूर हैं और 50% को ठेकेदारों के जरिये रखा है। भारत में फोर्ड कार फैक्ट्री में पच्चीस प्रतिशत स्थाई मजदूर हैं और ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर 75% हैं।

✶1.4.2010 से 31.3.2011 के दौरान के 12 महीनों में मारुति सुजुकी के जरिये केन्द्र सरकार ने एक्साइज ड्युटी के रूप में 4290 करोड़ 81 लाख रुपये लिये और हरियाणा सरकार ने 820 करोड़ 11 लाख रुपये टैक्स में लिये। बैंकों को ब्याज में कम्पनी ने 24 करोड़ 41 लाख रुपये दिये। कम्पनी की शेयर पूँजी 144 करोड़ 46 लाख रुपये है। पाँच रुपये की एक शेयर पर इन 12 महीनों में 79 रुपये 22 पैसे बने। सब को भुगतान के बाद कम्पनी का शुद्ध लाभ 2288 करोड़ 64 लाख रुपये। कम्पनी के बचत खाते में 13, 723 करोड़ और 2 लाख रुपये हैं। इन 12 महीनों में कच्चे माल और हिस्से-पुर्जों पर 27, 576 करोड़ 13 लाख रुपये खर्च किये। ''अन्य व्यय'' में कम्पनी 3, 877 करोड़ 88 लाख रुपये दिखाती है।

अपने शोषण का हिसाब लगाइये और कम्पनी तथा सरकार के बारे में विचार कीजिये।

कम से कम लागत पर अधिक से अधिक उत्पादन करवाना कम्पनियों का एक सामान्य सूत्र है। चौतरफा और गहराते संकट ने हानि कम से कम करने को कम्पनियों का दूसरा सामान्य सूत्र बना दिया है। और, कम्पनियों के दोनों सूत्र मजदूरों के लिये बढती असुरक्षा, बदतर कार्यस्थितियाँ, बढता काम का बोझ, उत्पादन का घटता हिस्सा मिलना, वास्तविक तनखा का लगातार गिरना लिये हैं।

✶वर्ष-भर पहले मारुति सुजुकी की मानेसर फैक्ट्री में मेन लाइन पर दो शिफ्टों में 1100 कार बनाना महाभारत लड़ने

समान था। अब मेन लाइन पर 1200 और मैनुअल लाइन पर 150 कारें प्रतिदिन दो शिफ्टों में बनती हैं। अधिकारी चुपचाप लाइन की गति बढा देते हैं.......

— अत्याधुनिक पेन्ट शॉप में एक तरफ 12 रोबोट हैं तो दूसरी तरफ इसी पेन्ट शॉप में 25 किलो की साफ जाली और 28-30 किलो की गन्दी जाली सिर पर लाद कर मजदूर दूसरी मंजिल पर चढते तथा पहली मंजिल पर उतरते हैं। पौने नो घण्टे की शिफ्ट में 70-80 जाली ऊपर ले जाना और इतनी ही नीचे लाना। करके ही जाना — ड्युटी समय में नहीं हुआ तो एक-सवा घण्टे अतिरिक्त काम करना जिसके कोई पैसे नहीं दिये जाते। कम्पनी भोजन का आधा घण्टा और चाय के 15 मिनट भी मजदूरों के मत्थे मढती है। नाम है क्वालिटी मेन्टेनैन्स और इसमें काम करते 95 मजदूर ठेकेदार के जरिये रखे हैं — एक भी मजदूर स्थाई नहीं है। थिन्नर तथा अन्य रसायनों से सफाई करना, टैंक में घुसा देते हैं — चक्कर आ जाते हैं। शिफ्ट नहीं बदलते, लगातार सी-शिफ्ट में रात 12½ से अगली सुबह 8½ तक काम में बहुत ज्यादा परेशानी होती है। सी-शिफ्ट में भोजन नहीं मिलता, बदले में 44 रुपये देते थे जिन्हें घटा कर 22 रुपये कर दिया है। पौने नौ घण्टे की ड्युटी के बाद कमरा और बिस्तर ही नजर आते हैं पर जबरन ओवर टाइम के लिये रोकते हैं...... 17½ घण्टे मारुति सुजुकी फैक्ट्री में रहना रौरव नर्क के दर्शन करना है। महीने में 32 से 192 घण्टे ओवर टाइम और ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को 28 रुपये प्रतिघण्टा के अनुसार भुगतान।

— मारुति सुजुकी की मानेसर फैक्ट्री में स्थाई मजदूरों की तनखा 5300 रुपये, इन्सेन्टिव तथा उपस्थिति भत्ता 8900 रुपये, एच आर ए 1600 रुपये, महँगाई भत्ता, बच्चों की शिक्षा के लिये भत्ता आदि मिला कर महीने में 17-18, 000 रुपये। कहने को सवेतन तथा कैजुअल छुट्टियाँ हैं पर विवाह अथवा पारिवारिक समस्या पर महीने में 4 छुट्टी ले ली तो 8900 रुपये काट लेते हैं। एक दिन की आपातकालीन छुट्टी पर 2250 रुपये काटते हैं.... वैसे, फैक्ट्री में चर्चा है कि स्थाई मजदूर के लिये जापान से 42,000 रुपये तनखा भेजते हैं।

— ई.एस.आई. तथा पी.एफ. की राशि काट कर ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों में आई.टी.आई. वालों को महीने में 7200 तथा बिना आई टी आई बारहवीं कियों को 6200 रुपये देते हैं। ए और बी शिफ्ट में कैन्टीन में भोजन निःशुल्क। लेकिन महीने में एक दिन छुट्टी करने पर एक दिन की दिहाड़ी और.... और 2000 रुपये काट लेते हें। किसी भी प्रकार के खुले एतराज पर ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को नौकरी से निकाल देते हैं।

— सुपरवाइजर और मैनेजर स्थाई मजदूरों को गाली देते, कॉलर पकड़ लेते और कभी इस लाइन पर तो कभी उस लाइन पर लगा देते। स्थाई मजदूर को एच आर में खड़ा कर देना और कभी इस मैनेजर तो कभी उस मैनेजर द्वारा मजदूर की क्लास लेना। परेशानी ही परेशानी...... चाय के लिये 7 मिनट में 40 गज चलो, एक हाथ में कप, ब्रैड पकोड़ा मुँह में, चेन खोल कर पेशाब करो और समय से दो मिनट पहले लाइन पर पहुँचो...... इतना काम दे रखा है कि खाज हो तो खुजलाने के लिये समय नहीं..... कम्पनी ने एक करोड़ गाड़ी बनने पर उपहार में मोबाइल दिया है पर बात करने के लिये टाइम ही नहीं दिया है.....17000 तनखा बता कर 12000 देते हैं तो पत्नी सोचने लगती है.....

दो-दो हजार रुपये चन्दा कर स्थाई मजदूर राहत के लिये नई यूनियन बनाने लगे......

मैनेजमेन्ट के साथ खटपट हुई और चाणचक्क 4 जून को ए-शिफ्ट की समाप्ति के समय मजदूरों ने चक्का जाम कर दिया। ए तथा बी शिफ्ट के मजदूर फैक्ट्री के अन्दर जम गये। सी-शिफ्ट वालों को फोन कर बुला लिया। स्थाई मजदूर, ट्रेनी, अप्रेन्टिस और ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर एक स्थान पर...... ढाई-तीन हजार मजदूर फैक्ट्री के अन्दर ! मजदूरों के इस आकस्मिक कदम से मारुति सुजुकी कम्पनी हक्का-बक्का। हरियाणा सरकार असमर्थ। केन्द्र सरकार असहाय। उत्पादन बन्द और मजदूर फैक्ट्री के अन्दर..... हर बीतते दिन के साथ तेज होता हानि का विलाप। मजदूरों को फैक्ट्री से जबरन निकालने के प्रयास में खतरे ही खतरे.... ***रीको ऑटो, डेन्सो, वीवा ग्लोबल, हरसूर्या हैल्थकेयर, सेन्डेन विकास*** में मजदूरों को फैक्ट्री से बाहर रखने-बाहर करने में सफल हुई मैनेजमेन्टें मजदूरों को दबाने में कामयाब हुई। ***होण्डा*** और ***हीरो होण्डा*** में ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को हफ्ते में फैक्ट्रियों से निकालने में कम्पनियों और सरकार को पसीने आ गये थे — मारुति सुजकी की मानेसर फैक्ट्री के अन्दर जमे स्थाई, ट्रेनी, अप्रेन्टिस, ठेकेदारों के जरिये रखों को दस दिन हो गये.....ऐसे में कम्पनी और सरकार की बढती परेशानी को मजदूरों की परेशानी दर्शाने वाले "सामान्य स्थिति" की बहाली में सफल हुये.....

विवाद का संक्षिप्त विवरण

मैसर्स मारुति सुजुकी इन्डिया लि. प्लाट नं.1 फेस-3ए, सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर (गुड़गाँव) में दिनाँक 4.6.2011 दोपहर लगभग 3:20 बजे संस्था के श्रमिकों ने कार्य बन्द कर दिया तथा कारखाने के अन्दर धरना करते हुए अपनी मांगों को लेकर हड़ताल पर चले गये जो कि आज तक जारी है, जिसके उपरान्त

प्रबंधकों ने दिनाँक 6.6.2011 को 11 श्रमिकों को सेवा से बर्खास्त कर दिया।

विवाद को समाप्त करने के लिये दोनों पक्षों के बीच कई बार वार्तालाप हुआ परन्तु विवाद को समाप्त करने में सफलता हासिल नहीं हुई। आज दिनाँक 16.6.2011 को दोनो पक्षों में श्री जे.पी. मान, उप श्रम आयुक्त, सर्कल-2 गुड़गाँव की मध्यस्थता से निम्नलिखित समझौता सम्पन्न हुआ।

समझौते की शर्तें

1. दोनों पक्षों में यह तय हुआ कि प्रबन्धकों द्वारा दिनाँक 6.6.2011 को जिन 11 श्रमिकों – नवीन कुमार, प्रदीप फौगाट, राजपाल, सोनू नेहरा, सोहन सिंह, नरेश कुमार, संजय डाबला, शिव कुमार, सन्दीप कुमार, सौनू कुमार एवमं दिनेश कुमार को बर्खास्त किया गया था, प्रबन्धक इन सभी श्रमिकों की बर्खास्तगी को रद्द करते हैं, परन्तु उनके विरुद्ध कानूनी प्रक्रिया के अनुसार निष्पक्ष जाँच की जायेगी तथा जाँच के आधार पर अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी। ये सभी श्रमिक कल दिनाँक 17 जून 2011 से ड्युटी पर ले लिये जायेंगे।

2. दोनों पक्षों में यह तय हुआ कि यह समझौता सभी स्थायी श्रमिकों पर लागू होगा तथा इस समझौते पर हस्ताक्षर होने के बाद सभी श्रमिक हड़ताल समाप्त कर देंगे तथा दिनाँक 17 जून 2011 से अपनी-2 शिफ्टों में कार्य पर लौट जायेंगे। श्रमिक दिनाँक 17 जून 2011 को छुट्टी करेंगे, उसकी एवज में दिनाँक 19 जून 2011 को संस्था में ड्युटी करेंगे।

3. दोनों पक्षों में यह भी तय हुआ कि हड़ताल के कारण वेतन अदायगी अधिनियम 1936 के तहत तथा कम्पनी के स्थायी आदेशों के अनुसार प्रत्येक दिन की अनुपस्थिति के एवज में जुर्माने के तौर पर तीन दिनों के वेतन की कटौती की जाएगी। यह भी तय हुआ कि फिलहाल प्रत्येक दिन की अनुपस्थिति के लिए एक दिन का वेतन जुर्माने के तौर पर काटा जाएगा। यदि सभी श्रमिक भविष्य में अच्छे आचरण, व्यवहार और कम्पनी के अनुशासन का पालन नहीं करेंगे तो बाकि दो दिनों का वेतन भी जुर्माने के तौर पर काटा जाएगा।

4. दोनों पक्षों में यह भी तय हुआ कि ''कार्य नहीं तो वेतन नहीं'' के सिद्धान्त के अनुसार हड़ताल के दिनों का कोई वेतन देय नहीं होगा।

5. दोनों पक्षों में यह भी तय हुआ कि सभी श्रमिक अनुशासन में रहते हुए सामान्य उत्पादन बनाए रखते हुए किसी भी प्रकार की सामुहिक या व्यक्तिगत रूप से अनुशासनहीनता की कार्यवाही नहीं करेंगे और कार्य में बाधा नहीं डालेंगे और प्रबन्धक भी श्रमिकों के विरुद्ध द्वेष की भावना से कार्यवाही नहीं करेंगे।

6. इस समझौते के उपरान्त दोनों पक्षों में कोई विवाद शेष नहीं रहेगा तथा सभी विवाद समाप्त समझे जायेंगे।

✶ मारुति सुजुकी की मानेसर फैक्ट्री में 2011 में होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर फैक्ट्री में 2005 जैसी स्थितियाँ हैं। दोनों फैक्ट्रियों में युवा मजदूर। होण्डा मजदूर तब बिचौलियों के फेर में आ कर फैक्ट्री के बाहर पुलिस से पिटे। मारुति सुजुकी मजदूरों ने अब बिचौलियों से सीधी चोट खाई है। लेकिन जैसे होण्डा मैनेजमेन्ट ने पुचकार कर तब नियन्त्रण स्थापित किया वैसे ही कदम मारुति सुजुकी मैनेजमेन्ट उठाने लगी है....मजदूर कुछ राहत महसूस कर रहे हैं। लेकिन.....

2005 में होण्डा के 1700 स्थाई मजदूर वास्तव में मजदूर थे। आज जिन 1800 को स्थाई मजदूर कहा जाता है उनका उल्लेखनीय हिस्सा ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों से काम करवाता है। मोटरसाइकिल इंजन विभाग में एक शिफ्ट में 4 इंजिनियर, 12 स्थाई मजदूर और ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे 110 मजदूर काम करते हैं। बाइक प्लान्ट असेम्बली लाइन 2 के तीन जोन में एक शिफ्ट में 8 स्टाफ के लोग, 3 लाइन लीडर, 4 स्थाई मजदूर, 4 कम्पनी कैजुअल और ठेकेदारों के जरिये रखे 101 मजदूर काम करते हैं। होण्डा में आज उत्पादन का अधिकतर कार्य ठेकेदारों के जरिये रखे 6500 मजदूर करते हैं। इनके अतिरिक्त भी यहाँ ठेकेदारों के जरिये रखे 1500 मजदूर काम करते हैं।

भूलभुलैया

✶ *स्थाई मजदूर और अस्थाई मजदूर। अस्थाई में कैजुअल वरकर अथवा ठेकेदार के जरिये रखे मजदूर। पंजीकृत अथवा बिना पंजीकरण वाले ठेकेदार। ई.एस.आई. व पी.एफ. वाले मजदूर अथवा इनके बिना वाले मजदूर। दिल्ली, नोएडा, गुड़गाँव, फरीदाबाद में फैक्ट्रियों में काम करते 70-75 प्रतिशत मजदूर कम्पनी तथा सरकार के दस्तावेजों में होते ही नहीं। फैक्ट्रियों में काम करते 75-80 प्रतिशत मजदूरों को सरकारों द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं दिया जाता। फैक्ट्रियों में 12-16 घण्टे ड्युटी आज सामान्य है और 95-98 प्रतिशत ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से किया जाता है।*

✶ *हिस्सों-पुर्जों को बनाने-जोड़ने-संवारने के जटिल ताने-बाने। बहुत छोटी-छोटी-मध्यम दर्जे की सैंकड़ों-हजारों फैक्ट्रियाँ तीन-चार सौ मील के घेरे में। हजारों मील दूर स्थित फैक्ट्रियों से इनके जोड़।*

इन हालत में और कम्पनियों के इन तौर-तरीकों से निपटने

के लिये संगठित प्रयासों पर विचार-विमर्श, आदान-प्रदान आवश्यक हैं।

तोड़ने वाली स्थितियाँ और तोड़ने के प्रयास वस्तुगत तौर पर दुनियाँ-भर के मजदूरों के जुड़ने के हालात को परिपक्व भी कर रहे हैं। स्थाई-अस्थाई, इस-उस कम्पनी, यह-वह क्षेत्र, इस-उस सीमा के अन्दर रहते हुये भी इनके पार जा कर अनेक प्रकार के जोड़ बनाने की कोशिशें प्रस्थान-बिन्दू लगती हैं।◆

घायल होने पर

ओमेगा कन्स्ट्रक्शन इक्विपमेन्ट मजदूर : ''प्लॉट 262 एम सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में मैं, दिनेश कुमार, 25 वर्ष से काम कर रहा स्थाई मजदूर था। हाइड्रोलिक प्रेस पर 15.9. 2009 को एक्सीडेन्ट में मेरा पूरा चेहरा कट गया — एक जबडे की हड्डी कटी, सब दाँत टूटे, नाक कटी। एक महीने एस्कोर्ट्स फोर्टिस अस्पताल में, फिर मैट्रो अस्पताल में 15 दिन, और फिर ई एस आई अस्पताल में 10 दिन बेहोश रहने के बाद आँखें खोली। मुँह की सिलाई कर रखी थी, भोजन गले के नीचे प्लास्टिक ट्यूब से। दिल्ली में सफदरजंग अस्पताल भेजा पर उन्होंने वापस ई एस आई भेज दिया। नाक की प्लास्टिक सर्जरी, मुँह खोलने के लिये ऑपरेशन। साँस मुँह से लेनी पडती है। कम्पनी ने 60 हजार रुपये दिये। ई एस आई ने एस्कोर्ट्स फोर्टिस अस्पताल भेजा था और वहाँ डॉक्टरों के कहने पर घरवाले दवाई लाते रहे लेकिन इस पर खर्च हुये 18-20 हजार रुपये ई एस आई ने नहीं दिये.... बोले कि पूरा खर्चा एस्कोर्ट्स अस्पताल को दिया है, तुमने दवाई खरीदी ही क्यों। एस्कोर्ट्स फोर्टिस डॉक्टर बाद में बोले कि उन्हें कानून का पता नहीं था। मैट्रो अस्पताल में भाई ने भर्ती करवाया था इसलिये वहाँ खर्च हुये 55-56 हजार रुपये परिवार को देने पडे। ई एस आई से 15.9.2009 से 27.7.2010 तक 148 रुपये रोज के हिसाब से पैसे मिले। खर्च काफी हुआ..... ई एस आई डॉक्टर ने 28.7.2010 को मेडिकल फिटनेस दी। फैक्ट्री गया। चक्कर कटवाये — हिसाब ले जाओ। एक यूनियन के जरिये श्रम विभाग गया। कम्पनी वहाँ ड्युटी के लिये लिखित में मानी। सितम्बर 2010 में 3 दिन और अक्टूबर में 7 दिन की ड्युटी के बाद सितम्बर के पैसे माँगे तो डायरेक्टर ने गालियाँ और धमकियाँ दी। फिर श्रम विभाग गया। कम्पनी का वकील बोला कि हिसाब ले लो। मैने इनकार किया। मामला चण्डीगढ हो कर यहाँ श्रम न्यायालय में पहुँचा है, पहली जुलाई को पहली तारीख है। काफी खर्च हुआ है..... भाई-भतीजा-बड़ी बेटी (पत्नी की मृत्यु हो चुकी है) बोलते हैं कि सोचो मत, दिमाग थोड़ा खराब हो गया है इसलिये सोचो मत। दलिया निगलना पड़ता है। नाक से पानी गिरता है। मुँह में दर्द होता रहता है। कफ ज्यादा आता है। सिर में दर्द..... ई एस आई का मेडिकल बोर्ड बैठेगा क्षतिपूर्ति के लिये।''

शुभ इन्डस्ट्रीयल कम्पोनेन्ट्स : ''30 इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में ***मारुति सुजुकी*** में हड़ताल और वार्षिक शट डाउन के कारण 20 जून से 8½ घण्टे की ड्युटी है और कहते हैं कि 10 जुलाई तक ऐसे रहेगा। वैसे, सामान्य तौर पर 60-65 मजदूर यहाँ सुबह 8 से रात 8½ की ड्युटी रोज और महीने में 5-6 बार रात 11 तक तथा 5-6 बार अगली सुबह 7 बजे तक काम करते हैं। रविवार को सुबह 6 से दोपहर 2 तक काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। महिला मजदूरों में हैल्परों की तनखा 3400 तथा ऑपरेटरों की 3800-4000 रुपये और इन्हें रात 8½ के बाद नहीं रोकते। पुरुष हैल्परों की तनखा 3500 और ऑपरेटरों की 4000-4200 रुपये। जून माह में पावर प्रेस पर एक महिला मजदूर का पूरा अँगूठा कटा और एक पुरुष मजदूर की तीन उँगली कटी। एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी। जब तक जख्म रहता है तब तक साहब खूब पुचकारते हैं, खर्च के लिये पैसे देते हैं और जख्म भरने के बाद कहते हैं जाओ, जो करना है कर लो।''

क्लच ऑटो मजदूर : ''12/4 मथुरा रोड़, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 350 स्थाई मजदूरों की तनखा से हर महीने 100 रुपये काट कर वर्ष में एल टी ए के रूप में देते हैं — साहब बताते हैं कि ऐसा यूनियन से समझौता है। जून-आरम्भ तक वर्ष 2010 का यह पैसा नहीं दिया। कम्पनी ने नोटिस लगाया था कि सवेतन छुट्टियाँ मत करो, इनके पैसे दे देंगे। ऐसी छुट्टियों के 2006 से पैसे नहीं दिये हैं और वह छुट्टियाँ करना चाहो तो देते नहीं। इधर मई में कम्पनी ने नोटिस लगाया कि एक दिन की छुट्टी करने पर दो दिन के पैसे काटेंगे। और, मैनेजमेन्ट-यूनियन दीर्घकालीन समझौते अनुसार उत्पादन नहीं दिया कह कर अप्रैल की तनखा से 1800 रुपये काटने लगे तो 12 मई को स्थाई मजदूरों ने वेतन लेने से इनकार कर दिया...... 20 मई को बिना पैसे काटे तनखा दी। रेवाड़ी में नई फैक्ट्री, यहाँ से मशीनें ले जा रहे हैं, नये लोगों को प्रशिक्षण दे रहे हैं..... यहाँ के 350 स्थाई मजदूरों को निकालना चाहते हैं। स्थाई मजदूरों ने 3 जून को फैक्ट्री के अन्दर टूल डाउन आरम्भ किया, ड्युटी पर रहते हुये काम बन्द रखना.....12 जून को श्रम मन्त्री के आवास पर मैनेजमेन्ट-यूनियन समझौता वार्ता..... मन्त्री के निर्वाचन क्षेत्र में रह रहे क्लच ऑटो के स्थाई मजदूरों तथा उनके परिवार वालों ने श्रम मन्त्री को घेरा....... मजदूरों को 10 दिन काम बन्द रखने के दौरान के पैसे मिलेंगे — पाँच दिन के पैसे कम्पनी देगी और 5 दिन की पूर्ति मजदूर 20 से 30 जून के दौरान रोज 12-12 घण्टे की ड्युटी द्वारा कर देंगे. ...बाकी आश्वासन दिये हैं। फैक्ट्री में 13 जून से उत्पादन आरम्भ।''

तालमेल

समुदाय में टूटन से, विकृति से ''मैं'' का उदय हुआ। यह मुख्यतः पुरुष थे जो ''मैं'' के वाहक बने। जन्म के पश्चात मृत्यु की निश्चितता में ''मैं'' की अथाह पीड़ा छिपी है। पुरुष का ''मैं'' नर और नारी के बीच कटु रिश्तों का आधार बना। इधर मण्डी-मुद्रा नारियों को भी ''मैं'' के वाहक बना कर कटु सम्बन्धों के लिये परिवार जैसे स्थानों को सिकोड़ रही है। व्यक्ति, अकेले-अकेले व्यक्ति मण्डी-मुद्रा की चाहत हैं। ''मैं'' का होना ही व्यक्ति और समाज के बीच शत्रुतापूर्ण रिश्ते लिये होता है। बिगड़ते हुये समुदायों के आरम्भिक दौर में ही व्यक्ति की समाज के सम्मुख स्थिति गौण थी। इस कारण एक तरफ जन्म को ही पतन मान कर जीवन से मुक्ति के प्रयास तो दूसरी तरफ विश्व विजय के लिये रक्तपात। इधर ''मैं'' का, व्यक्ति का महिमामण्डन करती मण्डी-मुद्रा के इस संस्था-कम्पनी चरण में व्यक्ति इस कदर गौण हो गई है कि व्यक्ति का होना अथवा नहीं होना बराबर-सा हो गया है। ऐसे में '' मेरे बस का नहीं है '' स्थिति का सही मूल्यांकन है। लेकिन, अपने से इस-उस बात में उन्नीस-इक्कीस वालों को यह-वह खूबी प्रदान कर समाधान-कर्ता बनाना स्वयं को धोखा देने के अलावा और कुछ नहीं है।

यहाँ हम चर्चा को फैक्ट्री मजदूरों के दायरे में सीमित रखेंगे।

✶ कमाने आये हैं......12-16-20 घण्टे रोज काम। हफ्ते में सातों दिन ड्यूटी। आठ बाई आठ कमरे में दो-तीन-चार का साथ रहना। परिवार साथ में तो कर्ज हाथ में।

कमाते हैं..... बीमारी। अकेलापन। चिड़चिड़ापन। हाथ-पैर गँवाना। असमय मृत्यु।

यह बातें सब फैक्ट्री मजदूर जानने लगते हैं। और, जानते हुये स्वयं को धोखा देने के प्रयास करते रहते हैं..... यह मेरे साथ नहीं होगा।

ऐसे में, सामान्य से परे जब भी कुछ होता है तब-तब अपने बस का नहीं है निपटना, कोई अन्य ढूँढते हैं। कोई कर दे, कोई करवा दे वालों को ढूँढने के प्रयासों में कमी नहीं रही है। बहुतों को, अनेक रंग-रूप वालों को आजमा चुके हैं। हालात बद से बदतर होती आई हैं..... याद कीजिये आठ घण्टे की इतनी दिहाड़ी कि परिवार का भरण-पोषण हो और आज की वास्तविकता कि 12 घण्टे ड्यूटी में एक का गुजारा मुश्किल।

✶ लफड़े में नहीं पड़ना है...... पड़ोसियों से चर्चा करने से बचना। अन्य फैक्ट्रियों से क्या वास्ता है ? दूसरे मजदूरों से क्या लेना-देना है? यूँ भी, थके तन-मन-मस्तिष्क के टेलीविजन माफिक है।

जबकि, हमारा होना ही अपने आप में लफड़ा है। दुकानदारों से लफड़े, मकानमालिक से लफड़ा, ड्यूटी जाते-आते रास्ते में लफड़े, सुपरवाइजर-मैनेजर से लफड़े, साथ काम करने वालों के साथ लफड़ा, साथ रहने वालों से लफड़े.....

कमाने आये हैं, लफड़े में नहीं पड़ना, कोई कर दे, कोई करवा दे पर नये सिरे से विचार करना बनता है।

✶ आज जो सामान्य है उसमें छोटे झटके, बड़े झटके, बहुत-ही बड़े झटके लगते रहते हैं और अत्यन्त विनाशकारी झटकों की सम्भावनायें बढती जा रही हैं।

अपने बस के नहीं हैं..... और कोई करने वाले नहीं हैं....... तीन-चार हजार वर्ष के दौरान वाले चमत्कारों के नतीजे हमारे सामने हैं फिर भी अवतार-मसीहा की ही आस। असहायता के, निराशा के इस बोलबाले से निकलना जरूरी है। कैसे निकलें ?

फैक्ट्रियों में विभाग-स्तर पर अपनी-अपनी शिफ्ट में मजदूर अनेक गतिविधियों द्वारा बोझिल-उबाऊ-मनहूस माहौल में ताजगी लाते रहते हैं। यह सामान्य है। मजदूरों द्वारा मिल कर ऐसा करना आम बात है। मजबूरी है रोज एक स्थान पर मिलना-खटना और ऐसे में भी कितने रचनात्मक, कितने क्रियेटिव हो जाते हैं सामान्य मजदूर यह चौंकाने वाली बातें हैं। लेकिन, फैक्ट्री-स्तर होते ही अधिकतर मजदूरों को साँप सूँघ जाता है....

कई फैक्ट्रियों, पूरे औद्योगिक क्षेत्र के अखाड़ा बनने पर नेता सक्रिय और मजदूर दर्शक.....जबकि उत्पादन-प्रक्रिया आज इस प्रकार गुँथ गई है कि फैक्ट्रियों, औद्योगिक क्षेत्रों के मजदूरों के बीच तालमेल प्राथमिक आवश्यकता बन गये हैं।

मिल कर कुछ करने के लिये एक-दूसरे को जानना आवश्यक है। जानने के लिये मिलना जरूरी है। फैक्ट्री में विभाग स्तर पर एक शिफ्ट के मजदूर रोज मिलते हैं। इसलिये कई कमाल करते हैं। इससे आगे के लिये.....

फैक्ट्रियों में विभाग से बाहर के मजदूरों से नियमित तौर पर मिलना-बात करना बहुत मुश्किल है। उत्पादन कार्य में लगे मजदूरों का ड्युटी के दौरान अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों से

मिलना सम्भव नहीं है। ऐसे में 12-16 घण्टे ड्यूटी और कमरों पर टी वी......

★ कहते हैं कि पेरिस में हजारों क्लबों में मिलते मजदूरों ने पेरिस कम्यून की रचना की थी जो कि नई समाज रचना की दिशा में आज, 140 वर्ष बाद भी महत्वपूर्ण है। इधर एक वर्ष के दौरान हम ने ओखला (तेखण्ड), गुड़गाँव (कापसहेड़ा), आई एम टी मानेसर (रामपुरा) और फरीदाबाद में मिलने के स्थान के जुगाड़ किये। बैठक के रूप में निवास स्थानों पर कमरे किराये पर लिये हैं। दस मिनट साथ बैठने, नियमित बैठ कर एक-दूसरे को जानने, आपस में तालमेल स्थापित करने, मिल कर एक-दूसरे की छोटी-छोटी परेशानियाँ दूर करने के पहले कदम पर भी हम बढ नहीं पाये हैं। हमारे बहुत-ही सीमित साधन इसका एक कारण हैं और कुछ अन्य कारणों का हम ने ऊपर जिक्र किया है। बैठकों...... मजदूर क्लबों की आवश्यकता अब हमें और भी ज्यादा लगती है। सुझावों और साझेदारी का स्वागत है।

फैक्ट्री रिपोर्ट

मारुति सुजुकी : चाणचक्क काम बन्द कर मानेसर फैक्ट्री में जमे मजदूरों के सम्मुख हर बीतते दिन के साथ मैनेजमेन्ट ज्यादा कमजोर हो रही थी। फिर भी, बिचौलियों के जरिये कम्पनी ने मजदूर-विरोधी समझौते पर हस्ताक्षर करवाये। लेकिन, कागज पर लिखा और वास्तविकता दो अलग-अलग चीजें हैं। मजदूरों को अपनी ताकत का अहसास हुआ है और मैनेजमेन्ट की जकड़ ढीली हुई है।

★ काम का बहुत ज्यादा बोझ गुड़गाँव फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे युवा मजदूरों के गुस्से में उबाल ला रहा है। उकसा कर हड़ताल करवा कर कुचलने के बाद 2500 स्थाई मजदूरों को नौकरी से निकालने ने गुड़गाँव फैक्ट्री में बचे स्थाई मजदूरों में डर बैठा दिया था जिसे मानेसर फैक्ट्री के युवा मजदूरों ने काफी कम कर दिया है। ऐसे में डरी कम्पनी ने दस वर्ष बाद मतपत्र से यूनियन चुनाव करवाया ताकि स्थाई मजदूरों में प्रभाव वाले लोग सौदेबाजी के लिये उपलब्ध हो सकें। कम्पनी से खुले तौर पर जुड़े लोगों की निश्चित हार मैनेजमेन्ट ने स्वीकारी ताकि स्थाई मजदूरों और ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के बीच विस्फोटक जोड़ बनने में बाधायें खड़ी की जा सकें।

★ मानेसर फैक्ट्री में मजदूरों ने कम्पनी को रियायतें देने को मजबूर किया हैः

— स्थाई मजदूरों को विवाह के लिये 6 दिन की छुट्टी। इस पर भत्ते वाले 8900 रुपये नहीं कटेंगे।

— ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की शिफ्टें बदला करेंगी। शिफ्ट समाप्ति के बाद बचे काम को करने के लिये एक-डेढ घण्टे मजदूर नहीं रुकेंगे। सी-शिफ्ट में कुछ को सुबह 8½ की बजाय अन्य के साथ 7 बजे ही छोड़ा जायेगा।

★ स्विफ्ट कार के नये मॉडल में काम ज्यादा है और इसके लिये मानेसर फैक्ट्री में 27 जुलाई को बम्पर विभाग में ठेकेदार के जरिये रखे एक मजदूर ने अतिरिक्त वरकर माँगा तो सुपरवाइजर ने उसे गाली दी। शिफ्ट इन्चार्ज को शिकायत का असर नहीं। यह बात स्थाई मजदूरों को बताई तो वे विभाग प्रमुख से मिले। साहब बोले कि ठेकेदार के जरिये रखे मजदूर का पक्ष तुम क्यों ले रहे हो, उसे अभी निकाल देंगे। बात बढी। सुपरवाइजर और शिफ्ट इंचार्ज ने लिखित में माफी माँगी......अगले रोज, 28 जुलाई को 3 बसों में पुलिस पहुँची। चार स्थाई मजदूरों को पुलिस कार्यस्थल से ले गई। इस पर सब विभागों के मजदूर कार्य बन्द कर फैक्ट्री में एक स्थान पर एकत्र हो गये। इधर ए-शिफ्ट के मजदूरों ने काम बन्द किया और उधर कम्पनी ने बी-शिफ्ट के मजदूरों को लाने वाली बसें बन्द कर दी। आसपास रहने वाले मजदूर पैदल और दूर रहने वाले ट्रक आदि से फैक्ट्री पहुँचे। स्थाई मजदूर, ट्रेनी, अप्रेन्टिस, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर फैक्ट्री गेट पर। अन्दर नहीं जाने दिया। फिर नोटिस चिपकाया कि बी तथा सी शिफ्ट बन्द रहेंगी। ए-शिफ्ट के मजदूर शिफ्ट समाप्ति के बाद, पौने चार बजे फैक्ट्री से बाहर नहीं निकले। ऐसे में गुड़गाँव फैक्ट्री में मजदूरों द्वारा काम बन्द करने की सम्भावना..... कम्पनी को बी-शिफ्ट के मजदूरों को फैक्ट्री में प्रवेश करने देना पड़ा। चार मजदूरों को पुलिस गिरफ्तार कर नहीं ले गई। बी-शिफ्ट में भी पौने चार की बजाय 5 बजे बाद उत्पादन आरम्भ हुआ। मजदूरों को भरोसा दिलाने के लिये कम्पनी ने आरोपित चार मजदूरों को फैक्ट्री में घुमाया..... बाद में उन्हें निलम्बित कर दिया और अगस्त-आरम्भ तक वे सस्पैण्ड हैं। कम्पनी स्थिति सामान्य करने की कह रही है और तैयारी कर रही है.... कानपुर में आई टी आई पांडू नगर से मारुति सुजुकी के पर्सनल मैनेजरों ने 128 छात्रों को नौकरी के लिये चुना है (कानपुर से प्रकाशित 'रिक्तियाँ रोजगार समाचार' के 1-15 जुलाई अंक में)।

मजदूरों के लिये जरूरी है कि स्थाई मजदूरों, ट्रेनी, अप्रेन्टिस, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों, प्रोजेक्ट ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों, वेन्डरों के मजदूरों के बीच तालमेल बढायें। यह सब मजदूर फैक्ट्री के अन्दर आसपास हैं और रोज मिल सकते हैं। निशाने पर मजदूरी-प्रथा को लेना होगा क्योंकि कम से कम मजदूरों से अधिक से अधिक काम करवाना इसके चरित्र में है।

आवश्यकता अपने आसपास वाले मजदूरों के साथ जोड़ बनाना और फैक्ट्री गेटों के पार तालमेलों की है। ऐसे में मैनेजमेन्ट और कम्पनी में भेद करना बाल की खाल निकालने के फेर में पड़ना है और यह स्थाई मजदूरों के लिये भी दलदल है।

ईस्टर्न मेडिकिट मजदूर : ''195 तथा 196 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्रियों में कैजुअल वरकरों ने जून माह की तनखा के लिये 20 जुलाई को दिन की शिफ्ट में 4 घण्टे काम करने के बाद काम बन्द कर दिया। रात को भी कैजुअलों द्वारा 12 घण्टे काम बन्द। कम्पनी ने 21 को काम चलवा दिया था पर युवा मजदूरों ने फिर बन्द कर दिया। कैजुअल वरकरों द्वारा 22 और 23 जुलाई को भी काम बन्द — 24 का रविवार, साप्ताहिक अवकाश.... कम्पनी ने जून की तनखा 25 जुलाई को दी, काम शुरू हुआ। कम्पनी की प्लॉट 292 स्थित फैक्ट्री में भी कैजुअल वरकरों ने 20 जुलाई को काम बन्द किया पर मैनेजमेन्ट ने धमका कर 2 घण्टे बाद काम शुरू करवा लिया.... इस फैक्ट्री में कैजुअल वरकर कम हैं पर फिर भी उन्होंने 21 को पुनः काम बन्द कर दिया — उन्हें जून की तनखा 22 जुलाई को दी। स्टाफ के कुछ लोगों को जून का वेतन आज 28 जुलाई तक नहीं दिया है। ईस्टर्न मेडिकिट की यहाँ चार फैक्ट्रियों में काम करते 700 स्थाई मजदूरों की 8-8 घण्टे की शिफ्ट हैं और इन्हें तनखा 7 तारीख को दे देते हैं। जबकि, कैजुअल वरकर तीन हजार के करीब हैं जिनकी 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम, और तनखा हर महीने देरी से।''

जे एन एस मजदूर : '' प्लॉट 48 सैक्टर-3 स्थित फैक्ट्री के मजदूरों में अधिकतर महिला हैं और उनकी दिन की ड्यूटी है। पाँच सौ पुरुष मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम — महिला मजदूरों को 20 रुपये प्रतिघण्टा और पुरुषों को 17-18 रुपये। ओवर टाइम में गड़बड़ी भी बहुत करते हैं — फरवरी से जून के दौरान किये ओवर टाइम के पैसे आज 23 जुलाई तक 40-50 वरकरों को नहीं दिये हैं। गाली देते हैं। कैन्टीन में भोजन खराब और पानी में कीड़े।''

ओरियन्ट क्राफ्ट कामगार : ''प्लॉट 15 सैक्टर-5 स्थित फैक्ट्री में 25-30 स्थाई मजदूरों को ही वार्षिक बोनस देते हैं, 10-12 ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 2500 मजदूरों को बोनस नहीं देते। इन दो वर्ष तो दिवाली पर मिठाई भी नहीं दी। सुबह 9½ काम आरम्भ होता है और फिनिशिंग विभाग में रोज रात 1¼ बजे तक काम। शनिवार को फुल नाइट, यानी, रविवार सुबह 4¼ तक काम..... और रविवार को ही फिर 11 से साँय 5 बजे तक काम। सिलाई विभाग में ओवर टाइम इतना ज्यादा नहीं — महीने में 100 घण्टे तक। ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से, 47-48 रुपये प्रतिघण्टा। लेकिन, पे-स्लिप में ओवर टाइम 14 घण्टे से ज्यादा दिखाते ही नहीं, हों चाहे महीने में 200 घण्टे ओवर टाइम के। बायर आते हैं उस दिन मास्क देते हैं, फस्ट एड बॉक्स में दवा रखते हैं, वर्दी-सिर पर टोप-दस्ताने-कड़छी से कैन्टीन में अच्छा भोजन देते हैं। कम्पनी को निर्धारित उत्पादन और क्वालिटी, दोनों चाहियें — नहीं दे पाओ तो जाओ।''

सिग्मा मोल्ड एण्ड स्टैम्पिंग कामगार : ''प्लॉट 149-150 सैक्टर-5 स्थित फैक्ट्री में 15 स्थाई मजदूरों और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 150 वरकरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट थी पर इधर दो महीने से 15 घण्टे की एक शिफ्ट कर दी है। सुबह 7 से रात 10 बजे रोज, रविवार को दोपहर बाद 3½ बजे छोड़ देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और हर महीने 8-10 घण्टे की गड़बड़ भी करते हैं। एक ठेकेदार कम्पनी छोड़ कर चली गई और तीन वर्ष की पी.एफ. राशि जमा नहीं की। एक मजदूर की ढाई उँगली कटी — एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी, प्रायवेट में इलाज, क्षतिपूर्ति नहीं दी, नौकरी से निकाल दिया है।''

वी जी इन्डस्ट्रीयल इन्टरप्राइज श्रमिक : ''31 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ***मारुति सुज़ुकी*** के हिस्से-पुर्जे बनते हैं। यहाँ स्थाई मजदूर एक भी नहीं है, 650 वरकर चार ठेकेदारों के जरिये रखे हैं। पावर प्रेस विभाग में काम करते 300 मजदूरों की ही ई.एस.आई., पी.एफ. तथा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन हैं। वैल्डिंग के लिये तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 350 मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। स्पॉट वैल्डिंग वाले हैल्परों की तनखा 3500-3800 और कारीगरों की 4000-4200 रुपये। मिग वैल्डिंग वाले हैल्परों की तनखा 3800-4000 और कारीगरों की 4500-6500 रुपये। श्रम विभाग, ई.एस.आई., पी.एफ. अधिकारियों के कभी आने की चर्चा मजदूरों में पाँच वर्ष में नहीं हुई है — टैक्स वालों के छापे की बातें हुई थी। सब मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से, स्टाफ को डेढ की दर से। सब मजदूरों को लगातार खड़े-खड़े काम करना पड़ता है। मारुति सुज़ुकी से ऑडिट आती रहती है —मजदूरों से बात नहीं करते, हैल्मेट-चश्मा-एपरेन-मास्क ही देखते लगते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. वाले मजदूरों को तनखा 7 तारीख को लेकिन बाकी 350 को हर महीने देरी से, जून की तनखा 18-20 जुलाई को दी।''

सितम्बर 2011

जिन्दा होने के मजे

सभी जानते होंगे कि जून में 13 दिन मारुति सुजुकी की मानेसर फैक्ट्री में युवा ऊर्जा ने ऐसी उज्जवलता पैदा की कि उसकी आभा चौतरफा नई कल्पनाओं को जन्म दे रही है। उत्सव का समय है, उत्सव मनाते हैं।

यहाँ हम मानेसर के मारुति सुजुकी के युवा साथियों का अभिनन्दन करते हुये कहना चाहते हैं कि 4 जून से 16 जून के दौरान का समय यकीनन आपके जीवन के शानदार पलों में शामिल रहेगा।

जश्न है जिन्दा रहने के सुरूर का

हर समय हम अपने चारों तरफ लाइफ फोर्स की हिलौरें महसूस करते हैं। यह जीवन शक्ति सहमति-समझौते की नावों को उलटती-पलटती रहती है। जीवन और सिस्टम में टकराव हरेक को साफ-साफ दिखता है। यह कहना बनता है कि शिशुओं को तो खासकरके यह टकराव अच्छी तरह समझ आता है।

कुछ ऐसे अवसर आते हैं जब जीवन शानदार उड़ान के लिये पँख खोलता-फैलाता है। उस समय हर कोई अपने-अपने ढँग से अपने में उड़ान का वेग जीता है। वे कौन-से पल हैं जिनमें आपने अपने अन्दर उड़ान की इस पावर को पाया है ?

मारुति सुजुकी मैनेजमेन्ट और सरकार जून की उड़ान से डर गई। विश्वसनीय सूत्रों से हमें सूचना मिली है कि कम्पनी और सरकार बुरी तरह घबराई हुई हैं और वे बेहद चिन्तित हैं — एक वर्ष में 4290+820+24+2288 करोड़ रुपये की जून के यह तेरह दिन तेरहवीं न कर दें। मुख्यमन्त्री टोकयो गया है। सूत्रों ने यह भी बताया कि तेरहवीं का डर मानसिक असन्तुलन को बढा रहा है..... एक परिणति है 29 अगस्त को जारी गुड कन्डक्ट बॉंड। दबी जुबान में सूत्रों ने यह भी बताया कि मानसिक असन्तुलन के असर में फैक्ट्री के अन्दर अनाप-शनाप व्यवहार और अन्ट-शन्ट बोल बढ रहे हैं। इसलिये सलाह अनुसार फैक्ट्री के अन्दर टेप बजाई जा रही है और मीलों लम्बी कनात में स्वयं को लपेट लिया है।

गौरतलब है कि अलियर, बास, मानेसर, खोह गाँवों में मुण्डन और विवाह के लिये टैण्ट हाउसों पर कनात ही नहीं मिल रही। हो सकता है कि यह कनात की राजनीति ही गाँव वालों को अचानक उकसा रही है।

सत्ता ने खींची अपनी तस्वीर

कहानी कहें चाहे हकीकत, पर बात सच है। सब्जी की रेहड़ीवाले को पुलिसवाले ने थप्पड़ मारा। अपमान ने बहुत भावुक कर दिया, खुद को आग लगा ली। भीड़ जमा हो गई। अस्पताल ले गये। सम्पूर्ण शरीर को पट्टियों से ढकना पड़ा। जीवन की लौ भीड़ में फैली। घबरा गया राष्ट्रपति अस्पताल पहुँचा। सहानुभूति की छवि के लिये पट्टियों से ढके सब्जीवाले के साथ फोटो खिंचवाई। टी वी पर दिखाई, अखबारों में छपवाई। हुआ क्या ? चार दिन में राष्ट्रपति भाग गया।

तलाक क्रिया और प्रतिक्रिया में

एक महान सूत्र : क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। सत्ता के लिये यह सूत्र बहुत महत्वपूर्ण है। अपनी क्रियाओं की प्रतिक्रियाओं से ही सत्ता अपने को देख पाती है, अपने को पहचान पाती है। यह क्रिया का प्रतिक्रिया से विच्छेद होता है कि नंगे से, पागल से राजा डरता है।

क्रिया की सम्भावित प्रतिक्रिया सत्ता की योजनाओं का आधार होती है। सम्भावित प्रतिक्रिया नहीं हो तो सत्ता हड़बड़ा जाती है, गड़बड़ा जाती है। क्रिया और प्रतिक्रिया के जोड़ का टूटना सत्ता की जो अपनी छवि है उसको ही अस्थिर कर देता है — वो विकृत हो जाती है, धुँधला जाती है, अस्पष्ट हो जाती है, उसमें तरेड़ें पड़ जाती हैं। सत्ता का अपना दर्पण उसके सर्वशक्तिशाली होने की आत्म-छवि को प्रतिबिम्बित करना छोड़ देता है। हाल ही में रामलीला मैदान में देखने में आया है कि क्रिया और प्रतिक्रिया के बीच तलाक हो गया है।

क्रिया और प्रतिक्रिया के बीच इस सम्बन्ध विच्छेद ने मारुति सुजुकी मैनेजमेन्ट और सरकार को गहरी चिन्ता में डाल दिया है। योजना का क्या होगा ? रंग-ढँग से तो लगता है कि युवा ऊर्जा मस्ती में आ गई है। भड़केंगे नहीं। पता नहीं क्या करेंगे.....

कहते हैं कि यह आडू हैं, अड़ियल हैं। यह व्यवहारिक नहीं हैं। यह अव्यवहारिक हैं। सुनते बहुतों की हैं पर करते अपने मन की हैं। इन से कैसे निपटें यह तो मैनेजमेन्ट की पढाई में था ही नहीं। डर दिखाओ, लालच दो की पढाई यहाँ पर फेल हो गई लगती है। कनातों से घिरी मैनेजमेन्ट असहाय.....

पता नहीं क्या करेंगे

हँस-बोल रहे हैं। गपशप कर रहे हैं। मस्ती में नारे लगाते हैं। कई तरह के पर्चे-अखबार पढ रहे हैं, भिन्न-भिन्न लोगों से मिल रहे हैं। चेहरों पर चिन्ता नाम की चीज ही नहीं है। प्रदर्शन भी ऐसे निकाल रहे हैं जैसे मेले में हों। देखा-देखी इन्डस्ट्रीयल मॉडल टाउन के लोग इस रंग में रंग गये तो ? यूँ भी, मारुति सुजुकी गेट तरह-तरह के छात्र-छात्राओं के लिये जीवन बन रहा है, जीवन का आकर्षण बन रहा है।

कौन-सा समय है यह ?

मिनट और घण्टा समय के माप नहीं रहे। सजा से समय ने पिण्ड छुड़ा लिया है। खुले में खुल कर साँस ले रही युवा ऊर्जा ड्युटी टाइम और रैस्ट टाइम में समय के विभाजन से परे चली गई है। समय के बारे में सोचने के लिये बहुत समय का होना जीवन की, समय की, सम्बन्धों की, समाज की, दुनियाँ की कई गुत्थियों को सुलझा सकता है। इसलिये यह उत्सव का, जश्न का समय है।

यह जश्न है थकना चुनने की आजादी का। थकाती थी हमें असेम्बली लाइन। अब मारुति गेट पर ठाठ से हम चुन रहे हैं कि जीवन के कौन से उल्लासों से हम ने थकना है — गा कर, पढ कर, सोच कर, बहस कर, नाच कर............■

मारुति सुजुकी मानेसर डायरी

●4 जून को ए-शिफ्ट की समाप्ति से पहले ए और बी शिफ्ट के मजदूरों ने चाणचक्क फैक्ट्री पर ''कब्जा'' कर लिया। असेम्बली लाइन थमी हुई, मशीनें बन्द। सदमे में कम्पनी और सरकार। सी-शिफ्ट मजदूर भी फैक्ट्री में प्रवेश कर गये।

●16 जून तक दो-ढाई हजार मजदूर फैक्ट्री के अन्दर रहे और उत्पादन बन्द रहा। छह जून को बर्खास्त किये 11 की बहाली...18 जून से फैक्ट्री में काम शुरू।

●''ओय इधर आ, जा ये काम कर'' वाला सुपरवाइजरों-मैनेजरों का व्यवहार ''बेटा इधर आना, आप यह काम कर लो'' वाला व्यवहार बना। आँखें मिलाने की बजाय साहब नीचे देखने लगे।

●अधिक काम है कह कर ठेकेदार के जरिये रखे मजदूर ने 27 जुलाई को अतिरिक्त वरकर माँगा तो सुपरवाइजर ने गाली दी। स्थाई मजदूर संग खड़े हुये और सुपरवाइजर तथा शिफ्ट इन्चार्ज को माफी माँगनी पड़ी।

●28 जुलाई को पुलिस फैक्ट्री में आई और कार्यस्थल से 4 मजदूरों को ले गई। पूरी फैक्ट्री के मजदूर काम बन्द कर एकत्र हो गये। गिरफ्तार नहीं किया है..... कम्पनी ने उन 4 मजदूरों को सब मजदूरों को दिखाया। उत्पादन आरम्भ..... कम्पनी ने बी-शिफ्ट के मजदूरों को लाने वाली बसें रद्द कर दी। आसपास रहने वाले पैदल और दूर वाले साधनों का जुगाड़ कर पहुँचे लेकिन कम्पनी ने बी-शिफ्ट मजदूरों को फैक्ट्री में प्रवेश नहीं करने दिया। ऐसे में शिफ्ट समाप्ति के बाद ए-शिफ्ट मजदूर फैक्ट्री से नहीं निकले...... एक घण्टे बाद मैनेजमेन्ट ने बी-शिफ्ट मजदूरों को फैक्ट्री में प्रवेश करने दिया।

●कम्पनी ने 4 स्थाई मजदूरों को चुपके से निलम्बित कर दिया...... बी-शिफ्ट में दो के बनाये निलम्बन पत्र कम्पनी ने अपने पास ही रखे।

●निलम्बन का पता लगने पर उसे समाप्त करने के लिये मजदूरों ने दबाव डाला। मैनेजमेन्ट ने ''स्थिति सामान्य करने'' पर निलम्बन वापस लेने की बात की। मजदूरों ने 8 अगस्त को स्थिति सामान्य की..... कम्पनी ने निलम्बन समाप्त नहीं किये और 17 अगस्त को ऐसा करने से इनकार कर दिया। पुनः विचार के लिये मैनेजमेन्ट को 48 घण्टे का टाइम दिया गया। परन्तु जून से ही योजना बना कर कानपुर, रीवा आदि-आदि से नई भर्ती कर रही कम्पनी की तैयारी पूरी हो चुकी थी— साहबों ने फिर ''ओय, ये कर'' बोलना शुरू कर दिया। काली फीती।

●उत्पादन कम। दो स्थाई मजदूर 23 अगस्त को निलम्बित. .... 24 अगस्त को 2 और निलम्बित। उलझाने के लिये सहमति-समझौते की बातें : 25 अगस्त को उत्पादन बढाया, 26 और 27 अगस्त को उत्पादन में वृद्धि जारी रखी।

●मजदूरों के प्रवेश-द्वार के पास फैक्ट्री के अन्दर खुला स्थान तथा पार्क जहाँ जून और फिर जुलाई में मजदूर एकत्र हुये थे उन जगहों को कम्पनी ने लोहे की चद्दरों से घेर दिया। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों में से 4, 3, 16 और 10 को 23 से 26 अगस्त के दौरान निकाला।

●रविवार, 28 अगस्त को फैक्ट्री में साप्ताहिक अवकाश। छुट-पुट कार्य के लिये 150-200 मजदूर ओवर टाइम पर जिसे ओवर टाइम के तौर पर कम्पनी दिखाती नहीं। दोपहर बाद स्टाफ के लोग फैक्ट्री में आने लगे। रात 8 बजे चार-पाँच सौ पुलिसवाले टैन्ट आदि के साथ फैक्ट्री के अन्दर पहुँचे। जो काम बचा है उसे छोड़ो कह कर सुपरवाइजरों ने 150-200 को रात 8½ फैक्ट्री से बाहर किया।

●29 अगस्त को ए-शिफ्ट में ड्युटी के लिये पहुँचे मजदूरों ने गेट को किले में बदला पाया। ग्रुप 4 के गार्डों के अलावा 50-60 पुलिसवाले भी गेट के बाहर तैनात थे। फैक्ट्री में टेप बज

रहा था : स्थाई मजदूर और ट्रेनी गुड कन्डक्ट बाण्ड पर हस्ताक्षर कर अन्दर जायें, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर अपने-अपने ठेकेदार से मिलें, अप्रेन्टिसों की तीन दिन छुट्टी..... और चिपके थे नोटिस — बर्खास्त 5 स्थाई मजदूरों के नाम, प्रशिक्षण समाप्त यानी बर्खास्त 6 ट्रेनी के नाम, निलम्बित 10 स्थाई मजदूरों के नाम। सब मजदूर फैक्ट्री के बाहर रहे। बी और सी शिफ्टों में भी यही स्थिति।

●29 अगस्त को साँय आसपास के गाँवों में रहते ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को धमकाया गया, धक्का-मुक्की की गई और कहा गया कि आगे से मारुति सुजुकी फैक्ट्री गेट पर मत जाना। तीस अगस्त को ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर और ज्यादा सँख्या में फैक्ट्री गेट पर गये। स्थाई मजदूरों ने गाँवों में जा कर लोगों से बातें की।

●30 अगस्त को टेप बजता रहा। नई लिस्ट 12 निकाले ट्रेनी की। सूची 16 और निलम्बित स्थाई मजदूरों की।

●31 अगस्त को गेट के आसपास फैले, समूहों में बैठे मजदूर। चर्चायें। भाषण देने आते नेता। नारे। दिन और रात के लिये 12-12 घण्टे में अदला-बदली करते मजदूर। गीत-रागनी। कनातों की श्रँखला से कम्पनी ने पर्दा किया।

●1 सितम्बर को सभा। कई संगठनों के नेताओं के भाषण। मारुति सुजुकी गुड़गाँव फैक्ट्री, सुजुकी पावरट्रेन, नपीनो ऑटो, होण्डा, रीको, ओमैक्स, लुमैक्स, हीरो होण्डा, सोना स्टीयरिंग आदि के मजदूरों के संग जे एन यू, जामिया मिलिया, दिल्ली विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालयों के छात्र। पाँच हजार के करीब लोग।

●पर्चे-पत्रिकायें और मिलने आते भाँति-भाँति के लोग। टेप पर नया सुर : अप्रेन्टिस 5 सितम्बर को आयें। ताश मण्डलियाँ। शुक्रवार को गेट के पास शामियाना लगाया। पुलिस ने शनिवार को वहाँ से हटवाया। थोड़ी दूरी पर पुनः लगाया।

●5 सितम्बर को फैक्ट्री से राष्ट्रीय राजमार्ग 8 तक जानदार प्रदर्शन। सुजुकी पावर ट्रेन मजदूर क्यों नहीं शामिल हुये ? मारुति सुजुकी मानेसर में 29 अगस्त से उत्पादन बन्द है। कम्पनी उत्पादन के आँकड़ों का प्रचार कर रही है।■

संविधान क्लब

कन्सटीट्युशन क्लब मजदूर : '' संसद भवन के निकट चमकते-दमकते कई सभागारों वाले विशाल भवन के अन्दर सफाई का काम हम करते हैं। हमारी दो शिफ्ट हैं — सुबह 8 से साँय 5 की तथा दोपहर 2 से रात 10 बजे की। हमें हाउसकीपिंग वरकर कहते हैं और हमें ***एम एस जी परसनल विजन*** कम्पनी के जरिये रखा गया है। हमें दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं देते। हम में नयों की तनखा 4500 रुपये और पुरानों की 5200 है। ओवर टाइम करे बिना गुजारा नहीं, ओवर टाइम का भुगतान मात्र 20 रुपये प्रतिघण्टा अनुसार। हमारी ई.एस.आई. और पी.एफ. नहीं हैं। संविधान का, विधान का खुला उल्लंघन करने वाले कन्सटीट्युशन क्लब में बहुत सुरक्षा प्रबन्ध हैं।''

ई. एस. आई. कारपोरेशन

ई. एस. आई. अस्पताल ओखला मजदूर : ''दिल्ली में ओखला फेज-1 स्थित ई.एस.आई. अस्पताल में मेन्टेनैन्स, हाउसकीपिंग, सुरक्षा कर्मी ठेकेदार के जरिये रखे गये हैं। ऐसे हम कुल 80 लोग हैं और हम में किसी की भी ई.एस.आई. नहीं है। दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी हम में किसी मजदूर को नहीं दिया जा रहा। हाउसकीपिंग में काम करती 30 महिला मजदूरों को 8 घण्टे रोज पर 30 दिन के 3000-3500 रुपये देते हैं। मेन्टेनैन्स वरकरों को प्रतिदिन 8 घण्टे पर 30 दिन के 4000-4500 रुपये। गार्डों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। रोज 12 घण्टे पर 30 दिन के पूर्व-फौजी गार्डों को 8500 रुपये और बाकी गार्डों को 4500 रुपये। सरकारी डी जी आर कॉन्ट्रैक्ट में गार्ड को 8 घण्टे रोज ड्युटी और साप्ताहिक छुट्टी के संग महीने के 13500-14500 रुपये..... कागजों में, दस्तावेजों में सब कुछ कानून अनुसार होता है।''

प्रिन्टिंग प्रेस

रत्ना ऑफसेट मजदूर : ''सी-101 डी डी ए शेड ओखला फेज-1 स्थित प्रेस में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में छपाई होती है। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से। दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं देते — हैल्परों की तनखा 4000 रुपये और ऑपरेटरों की 6000-8000। ई.एस.आई. व पी.एफ. 50 मजदूरों में 10 के मुश्किल से। पीने का पानी खराब। शौचालय गन्दा। साहब गाली देता है।''

अक्टूबर 2011

सिर के बल अनुशासन

✶29 अगस्त से मानेसर फैक्ट्री गेट के बाहर बैठा मजदूरः ''शिफ्टों और नौकरी के रुटीन से परे जीवन के बारे में पहली बार सोचा है, फुर्सत में ढँग से सोचा है।''

✶मारुति सुजुकी गुड़गाँव फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखा गया युवा मजदूर : ''बम्पर शॉप में सुपरवाइजर सीधे गाली देते हैं। स्थाई मजदूर भी हमारी इज्जत नहीं करते। अधिकतर काम हम से करवाया जाता है। बम्पर असेम्बली में तो बहुत-ही ज्यादा काम है और यहाँ स्थाई मजदूर एक भी नहीं है, 5 स्टेशन हैं, एक शिफ्ट में ठेकेदार के जरिये रखे 15-16 मजदूर काम करते हैं। मैं चाहता हूँ कि दुनियाँ में सब जीयें, सब खुशी से जीयें।''

✶मारुति सुजुकी से सन् 2000 में नौकरी से निकाला गया मुखर मजदूर : ''यह हारने वाले लड़के नहीं हैं। मानेसर फैक्ट्री के इन लड़कों में संघर्ष का जज्बा और ऊर्जा, दोनों हैं।''

मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री में स्थाई और अस्थाई मजदूरों के बीच तालमेल जून के बाद तेजी से बढे हैं। जून में चाणचक्क फैक्ट्री पर कब्जा शानदार शुरुआत थी। 27-28 जुलाई को स्थाई और अस्थाई मजदूरों के तालमेल ने कम्पनी तथा सरकार को पीछे हटने को मजबूर किया — 27 को अस्थाई मजदूर के संग खड़े हुये स्थाई मजदूरों को गिरफ्तार करने पहुँची पुलिस को 28 जुलाई को खाली हाथ लौटना पड़ा था। जकड़ को ढीला करती और हँसी-खुशी की वाहक बनती युवा ऊर्जा..........

✶कम्पनी-पक्ष में सजी-धजी चलती-फिरती लाशों का समवेत स्वर : ''अनुशासनहीनता बर्दाश्त नहीं करेंगे !''

✶धुँध को छाँटते, जीवन के, उल्लास के वाहक युवा मजदूरों में उभरता नादः ''तानाशाही सहन नहीं करेंगे !''

मारुति सुजुकी मानेसर के युवा मजदूरों के सुर और ताल मेल खा रहे हैं विश्व-भर में हिलौरें ले रही युवा ऊर्जा से। ट्युनिशिया, मिश्र, यमन के युवाओं ने दशकों से जमे राष्ट्रपतियों को दफा किया। यूनान, स्पेन, फ्रान्स, इंग्लैण्ड में अनुशासनहीन युवा मजदूरी-प्रथा को घेरे में ले रहे हैं। अफगानिस्तान-पाकिस्तान-छत्तीसगढ-झारखण्ड-उड़ीसा में किसान-दस्तकार-ग्रामीण गरीब मरने-मारने पर उतरे हैं। रुपये-पैसे के एक प्रमुख केन्द्र, अमरीका में न्यू यार्क शहर में वॉल स्ट्रीट का गला घोंटने को हजारों की सँख्या में लोग रोज एकत्र हो रहे हैं।

इसलिये मारुति सुजुकी मानेसर में 29 अगस्त को सरकार और कम्पनी द्वारा मजदूरों पर सीधा हमला। बन्द कमरों में गुप्त योजनायें, लुका-छिपा कर तैयारियाँ...... सेना अधिकारी हों चाहे कम्पनी अधिकारी और इनके विशेषज्ञ सलाहकार, यह सब दो और दो चार के चक्रव्यूह में फँसे हैं। कागज पर हर समय दो और दो चार होना साहबों की हेकड़ी बढाता है पर समाज में, व्यवहार में दो और दो कभी पच्चीस हो जाते हैं तो कभी शून्य, और फिर कभी माइनस ग्यारह हो जाते हैं। हर सरकार की सेना के अभ्यास, सरकारों की सेनाओं के संयुक्त अभ्यास कागज पर दो और दो चार में बिल्कुल फिट और.....और व्यवहार में नाटो गठबन्धन सेनाओं के विश्व-भर में जगह-जगह हमले समाधान की बजाय संकट बढा रहे हैं। साहबों में किसी को कुछ समझ में नहीं आ रहा। मारुति सुजुकी और सरकार के योजना बना कर, तैयारी करके मजदूरों पर किये हमले का हश्र....

कनात की जगह दीवार

600 एकड़ में फैली फैक्ट्री को बहुत नीची दीवार और जाली से प्रदर्शित कर अपनी शक्ति दिखाती मारुति सुजुकी कम्पनी ने जाली के पीछे कनातें लगा कर अपने को छिपाया। कमजोरी उजागर होने से भयभीत कम्पनी अक्टूबर-आरम्भ से फैक्ट्री को ऊँची दीवार से घेरने में जुटी है....

दो सौ वर्ष पहले बनी भाप-कोयला आधारित शुरुआती फैक्ट्रियों को किलों का रूप देना पड़ा था क्योंकि रात के समय सैंकड़ों की सँख्या में दस्तकार (लुहार, बढई, बुनकर) इन दैत्यों पर हमले करते थे। इधर कुछ समय से फिर फैक्ट्रियों को किलों में बदलने की प्रक्रिया जारी है..... साहबों का यह दिवालियापन ही है क्योंकि मजदूर तो बाहर ही नहीं बल्कि फैक्ट्रियों के अन्दर भी रहते हैं। किलों के अन्दर और बाहर शत्रु ही शत्रु! और, सुरक्षा के लिये ठेकेदारों के जरिये रखे जाते गार्ड जो रोज 12 घण्टे, महीने के तीसों दिन ड्युटी करते हैं।

जापान में बच्चों द्वारा आत्महत्या करना। जर्मनी में लोगों द्वारा सरकार को परमाणु बिजलीघर बन्द करने को मजबूर करना। चीन में ज्ञान-विज्ञान से लैस पार्टी और सरकार मजदूरों से, किसानों से, उमड़-घुमड़ रही युवा ऊर्जा से भयभीत हैं।

बांगलादेश में मजदूर जब उमड़ते हैं तब दर्जनों फैक्ट्रियों को आग लगा देते हैं।

कागज के टुकड़े

सरकार, मारुति सुजुकी कम्पनी और बिचौलियों ने बहुत पापड़ बेले थे जून में समझौते के लिये। लेकिन मजदूरों ने उसे कागज के टुकड़े के तौर पर लिया.....अपने ही नियम-कानूनों को बड़े पैमाने पर तोड़ते साहब लोग विलाप करते रहे नियम-कानून की हत्या पर। इधर 30 सितम्बर को भारी माथा-पच्ची के बाद साहबों ने फिर समझौता किया और..... और 7 अक्टूबर को फैक्ट्री पर कब्जा कर मजदूरों ने फिर कागज के टुकड़े को कागज का टुकड़ा कह दिया। शब्द और वचन की पवित्रता भंग करना जिनकी दिनचर्या है, वे नेता-अफसर ''समझौते की पवित्रता'' की दुहाई दे रहे हैं।

आडू युवा ऊर्जा

यह संकट-दर-संकट को मैनेज करने का दौर है। विशेषज्ञों के समाधानों का सार है : आम लोगों को और अधिक निचोड़ो। फिर, एक्सपर्ट समझ नहीं पा रहे कि क्यों उनके संकट समाधान नये संकटों, बढते संकटों को जन्म दे रहे हैं।

ऐसे में मारुति सुजुकी मानेसर के स्थाई मजदूरों और ट्रेनी ने अस्थाई मजदूरों को कम्पनी द्वारा बाहर रखने के खिलाफ 7 अक्टूबर को फैक्ट्री पर कब्जा किया। इस बार युवा ऊर्जा मारुति सुजुकी तक सीमित नहीं रही, आई.एम.टी. में 7 अक्टूबर को 11 फैक्ट्रियों पर मजदूरों ने कब्जे किये!

यह स्थाई मजदूर, अस्थाई मजदूर, बेरोजगारों और ग्रामीण तथा शहरी गरीबों में तालमेल का समय है। मेरी-तेरी की जगह हमारी का समय है यह। फैक्ट्रियों पर कब्जा करने और फैक्ट्रियों को दफनाने का समय है यह। रुपये-पैसे और होड़ वाले आज, मण्डी-मुद्रा और प्रतियोगिता वाले वर्तमान के स्थान पर तालमेलों वाले, मिल कर रहने, साँझा करने और मानव योनि प्रकृति का एक अंश है की वास्तविकता को स्वीकार कर नई समाज रचना का समय है यह।■

मारुति सुजुकी मानेसर डायरी (2)

●29 अगस्त से गेट के बाहर बैठे मजदूरों से चर्चाओं के लिये 31 अगस्त को तैयार पॉइन्ट :

1. घड़ी की सुई को, काल के पहिये को हम पीछे नहीं घुमा सकते। इसलिये आज और आने वाले कल पर ध्यान केन्द्रित करना बनता है।

2. तैयारी कर 29 अगस्त को सुबह सवेरे मारुति सुजुकी कम्पनी और सरकार ने हमला किया। मुकाबला तो करना ही है इसलिये ऐसे कदम हमारी धुरी बनते हैं जिनसे हमारी शक्ति बढती जाये।

3. यह संयोग है कि मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री के स्थाई मजदूरों ने शर्तों पर हस्ताक्षर नहीं करने का निर्णय लिया है। ऐसे में मामला मारुति सुजुकी तक केन्द्रित रहा तो एक और दुखद परिणाम हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। जब-तब वाली समर्थन सभायें व जुलुस तथा इस-उस दिन कुछ फैक्ट्रियों में काम बन्द करना विगत में परिणाम में परिवर्तन नहीं लाया है।

4. कम्पनी और सरकार के आक्रमण के खिलाफ जुड़ने-जोड़ने-तालमेल बढाने के लिये आई.एम.टी. क्षेत्र प्रारम्भिक स्थल बनता है।

5. मारुति सुजुकी फैक्ट्री मजदूरों तक ही बात सीमित रही तो हमदर्दी से अधिक की आशा करना नादानी ही होगी। इसलिये आई.एम.टी. क्षेत्र में मजदूरों के सम्मुख समस्याओं-परेशानियों को महत्वपूर्ण बनाना बनता है।

6. काम का बहुत अधिक बोझ, कदम-कदम पर अपमान, तनखायें बहुत कम, पता नहीं कब निकाल दें का डर, मजबूरी में अथवा जबरन 12-16 घण्टे की ड्युटी वाली वास्तविकता के कारण मजदूर गुस्से तथा असहायता से भरे पड़े हैं। इसलिये पहले कदम के तौर पर जुड़ने-जोड़ने-तालमेल बढाने के लिये ठेकेदारी-प्रथा पर रोक और एक घण्टे काम के कम से कम 100 रुपये मुद्दे बन सकते हैं।

7. इस समय दस-बीस-पचास की टोलियों में मारुति सुजुकी मजदूर आई.एम.टी. स्थित फैक्ट्रियों में काम करते मजदूरों के पास आसानी से जा सकते हैं, चर्चायें कर सकते हैं। इस प्रकार मारुति सुजुकी के ढाई हजार मजदूरों का दस-बीस-पचास हजार-एक लाख मजदूर बनना कम्पनी और सरकार के हमले की काट करने में कारगर लगता है।

8. आई.एम.टी. में बात बढने के संग-संग पूरे गुड़गाँव के मजदूरों के साथ तालमेल वाले कदम भी आसानी से उठाये जा सकते हैं। इस सन्दर्भ में दिल्ली क्षेत्र (गुड़गाँव, दिल्ली, फरीदाबाद, नोएडा, गाजियाबाद, बहादुरगढ, सोनीपत) के आधार पर मजदूरों के कदम व्यवहारिक बनने में अधिक समय नहीं लगना चाहिये।

9. मजदूर संघर्ष समिति बनाने के प्रयास बहुत शीघ्र कार्यसूची पर आ सकते हैं।

10. छात्रों के साथ तालमेल की सम्भावनायें आज बहुत सहजता से हो सकती लगती हैं।

11. मजदूरी-प्रथा पर सवाल उठाने के हालात बनने में देर नहीं लगेगी..... विश्व-व्यापी मन्थन और तालमेलों में उल्लेखनीय योगदान की सम्भावना है।

●मारुति सुजुकी मजदूरों की हलचल का असर आई.एम.टी. में मुंजाल शोवा मजदूरों में 12 सितम्बर को दिखाई दिया। स्थाई काम के लिये अस्थाई मजदूर रखने के खिलाफ साँय 3 बजे सैक्टर-3 स्थित फैक्ट्री में मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। बगल की सत्यम ऑटो के मजदूर तुरन्त मुंजाल शोवा में आने-जाने लगे। मुंजाल शोवा कम्पनी की गुड़गाँव और हरिद्वार फैक्ट्रियों में मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। मंगलवार, 13 सितम्बर को रात 8 बजे कम्पनी ने 155 को तत्काल स्थाई कर और आश्वासन दे कर उखड़ी साँस सम्भाली।

●14 सितम्बर को साँय 4 बजे सुजुकी पावरट्रेन कास्टिंग फैक्ट्री, सुजुकी पावरट्रेन ट्रान्समिशन एण्ड इन्जन फैक्ट्री और सुजुकी मोटरसाइकिल फैक्ट्री की दो शिफ्टों के मजदूर काम बन्द कर फैक्ट्रियों के अन्दर प्रदर्शन करने लगे, नारे लगाने लगे। उत्पादन ठप्प और फैक्ट्रियों के अन्दर जमे मजदूर कह रहे थे : मारुति सुजुकी मानेसर के सब मजदूरों को ड्युटी पर लो और गुड कन्डक्ट बाण्ड हटाओ।

●सुजुकी कास्टिंग, इन्जन, मोटरसाइकिल फैक्ट्रियों में 15 सितम्बर को भी उत्पादन बन्द और उत्साह से भरे मजदूर फैक्ट्रियों के अन्दर। मारुति सुजुकी गेट पर हँसी-मजाक करते युवा मजदूर। समर्थन में नारे लगाते आते, भाषण देते, गीत गाते, पर्चा बाँटते संगठन। खूब बातें, रोचक चर्चायें। सेल एण्ड डिस्पैच के ड्राइवरों ने सी-शिफ्ट में काम बन्द किया — ठेकेदार के जरिये रखे 350 ड्राइवर 15 सितम्बर को ए और बी शिफ्ट में फैक्ट्री के एस एण्ड डी गेट के बाहर जमे, बरसात में भी खुले में पेड़ों-झाड़ियों तले।

●हू-हू-हू का बढता शोर मानी टी वी वाले, अखबार वाले आये हैं। मीडिया के आने की सूचना मारुति सुजुकी गेट के बाहर बैठे मजदूर हू-हू-हू के जरिये एक-दूसरे के पास पहुँचाते हैं। बचपन का भ्रम दूर हुआ है। जब 11वीं में था तब टाइम्स ऑफ इण्डिया में भरोसा हुआ था.... मारुति सुजुकी चेयरमैन के इस अखबार में छपे पूरे बयान ने अब आँखें खोली हैं।

●16 सितम्बर को सुबह 10 बजे सुजुकी कास्टिंग, इन्जन और मोटरसाइकिल फैक्ट्रियों में काम शुरू करवा दिया गया : कम्पनी चर्चा के लिये तैयार है पर शर्त रखी है कि पहले तीन फैक्ट्रियों में काम आरम्भ करवाओ। लचर दलील। यूनियनों की रैली कैन्सल..... दरअसल, माहौल को देख कर सरकार, कम्पनी और बिचौलिये रस्मी कदमों से भी कई बार डर जाते हैं।

●18 सितम्बर को रात को श्रम विभाग-कम्पनी-मजदूरों के बीच समझौता-वार्ता। गुँजाइश ही नहीं थी। असफल..... पुलिस ने वार्ता-स्थल से ही तीन मजदूर गिरफ्तार कर लिये। साहबों को आशा थी कि प्रतिक्रिया में मजदूर भड़केंगे और तब... तब सरकार व कम्पनी की योजना तेजी से सफलता की तरफ बढेगी।

●इस उकसावे पर भी मारुति सुजुकी मजदूर भड़के नहीं। शान्त रहे। गिरफ्तार साथियों की जमानत के लिये कदम उठाये। 19 की बजाय 20 सितम्बर को छूट कर आये।

●एक करोड़वीं कार बनने पर मजदूरों को दिये फोन को कम्पनी ने अपना औजार बनाने की कसरत की। जेल में 3 मजदूरों के बन्द रहने के समय ट्रेनी को मैनेजरों के फोन पर फोन। अन्दर क्यों नहीं आये? नोटिस लगाया था कि 19 सितम्बर तक काम शुरू करो अन्यथा अपने को बर्खास्त समझो। तुम्हें बर्खास्त कर दिया है पर फिर भी अभी भी आ सकते हो......

●कम्पनी ने हर मजदूर के घर 4-6 पत्र भेजे हैं। फोन पर सन्देश : 20 सितम्बर को ''डियर इम्पलाई'', 21 को ''मारुति परिवार के प्रिय साथी'', फिर ''प्रिय सहकर्मी'', हैल्पलाइन नम्बर, सच्चाई जानने के लिये लिन्क पर वीडियो देखें, विवेकानन्द, नेपोलियन के शब्द। कम्पनी ने मैनेजरों की मजदूरों के गाँव-घर जाने की ड्युटी लगाई। फैक्ट्री गेट पर बैठे मजदूर को परिवार से सूचना मिली तब कहा : ''पूछना मत, ठण्डा ला कर साहब को पिलाओ और आदर से विदा करो।''

●कम्पनी : आज 670 गाड़ी बनी हैं। मैनेजर तब बोले : जिस दिन 1000 गाड़ियाँ बन जायेंगी उस दिन तुम सब को निकाल देंगे।

●अलियर, ढाणा, बास, माँगरोला के कुछ पंचों-सरपंचों को कम्पनी ने मजदूरों के खिलाफ एकत्र किया : फैक्ट्री के अन्दर जाओ या फिर यहाँ से भागो। रात को दारू पिला कर गाड़ी में घुमाया। कमरों के किराये बढाये.... रात की धमकी अगले दिन फुस्स और थोड़ी दूर स्थित गाँवों में मारुति सुजुकी मजदूरों का स्वागत।

●योजना अटक गई, मजदूरों ने अटका दी। कम्पनी ने पैंतरा बदला। बिचौलियों को नये सिरे से सक्रिय किया। इधर मजदूरों को भी लगने लगा था कि गेट के बाहर बैठे रहने और सहायता व समर्थन मात्र से बात आगे नहीं बढेगी। ऐसे में 23 सितम्बर को गुड़गाँव फैक्ट्री यूनियन लीडर तीन बसों में मजदूरों को ले कर मानेसर फैक्ट्री पहुँचे। सुजुकी समूह की तीन अन्य फैक्ट्रियों के यूनियन लीडर भी पहुँचे। भाषण और चर्चायें। मानेसर फैक्ट्री के 250 स्थाई मजदूरों ने गुड़गाँव फैक्ट्री यूनियन लीडरों के समझौता-

वार्ता में बैठने के लिये हस्ताक्षर किये।

●मजदूरों को पुनः जकड़ में लेने में सीधा हमला असफल हो जाने पर सरकार, कम्पनी और बिचौलिये नये सिरे से सक्रिय हुये। समझाने-बुझाने के लम्बे दौर चले। झूठे आश्वासन तो दिये ही जाते हैं, आई.एम.टी. स्थित कुछ फैक्ट्रियों के युवा मजदूरों ने सच्चे आश्वासन भी दिये। 30 सितम्बर को देर रात समझौता हुआ –

समझौते की शर्तें

1. दोनों पक्षों में यह तय हुआ कि दिनांक 29.8.2011 से दिनांक 15.9.2011 के बीच जिन 15 श्रमिकों की सेवायें समाप्त कर दी गई थी, उन सभी 15 श्रमिकों के सेवा समाप्ति के आदेश प्रबंधन द्वारा 1.10.2011 को वापस लिये जायेंगे तथा इन सभी श्रमिकों के सेवा समाप्ति के आदेशों में तब्दीली करके उनके निलम्बन के आदेश जारी किये जायेंगे। परन्तु उनके विरुद्ध कानूनी प्रक्रिया के अनुसार निष्पक्ष जाँच की जायेगी तथा जाँच के आधार पर आगामी कार्यवाही की जायेगी। जाँच के आधार पर जो भी निर्णय होगा, वह उन्हें मान्य होगा।

2. दोनों पक्षों में यह तय हुआ कि दिनांक 29.8.2011 से दिनांक 30.8.2011 के बीच जिन 18 तकनिशयन प्रशिक्षणार्थियों का प्रशिक्षण समाप्त किया गया था, उन सभी 18 प्रशिक्षणार्थियों की प्रशिक्षण समाप्ति के आदेश दिनांक 1.10.2011 को वापस लेते हुये ये सभी प्रशिक्षणार्थी उसी ट्रेनी के पद पर कार्य करते रहेंगे।

3. दिनांक 1.7.2011 से दिनांक 17.9.2011 के बीच जिन 29 श्रमिकों को निलम्बित कर दिया गया था, वे सभी 29 श्रमिक निलम्बित रहेंगे, इन सभी 29 श्रमिकों को चार्जशीट किया जायेगा तथा उनके विरुद्ध कानूनी प्रक्रिया के अनुसार निष्पक्ष जाँच की जायेगी। जाँच के आधार पर जो भी निर्णय होगा, वह उन्हें मान्य होगा।

4. दोनों पक्षों में यह भी तय हुआ कि दिनांक 29.8.2011 से किसी भी श्रमिक के कार्य वापसी तक "कार्य नहीं तो वेतन नहीं" के सिद्धान्त के अनुसार इन दिनों का कोई वेतन देय नहीं होगा इसके अतिरिक्त जुर्माने के तौर पर मात्र एक दिन के वेतन की कटौती की जायेगी।

5. दोनों पक्षों में यह भी तय हुआ कि सभी श्रमिक कल दिनांक 1.10.2011 को अवकाश लेंगे और दिनांक 3.10.2011 से अपनी-अपनी शिफ्ट अनुसार प्रबंधकों द्वारा वांछित उत्तम आचरण बंध पत्र पर हस्ताक्षर करके कार्य पर जायेंगे। दिनांक 1.10.2011 के अवकाश को निकट भविष्य में किसी अवकाश के दिन कार्य करके समायोजित करेंगे।

6. दोनों पक्षों में यह भी तय पाया कि सभी श्रमिक अनुशासन में रहते हुये सामान्य उत्पादन करते हुये किसी भी प्रकार की सामुहिक या व्यक्तिगत रूप से अनुशासनहीनता की कार्यवाही नहीं करेंगे और कार्य में बाधा नहीं डालेंगे और प्रबन्धक भी श्रमिकों के विरुद्ध द्वेष की भावना से कार्यवाही नहीं करेंगे।

7. दोनों पक्षों में यह भी तय हुआ कि भविष्य में कोई विवाद उत्पन्न होता है तो उसका निपटारा आपसी बातचीत से हल करेंगे।

8. दोनों पक्ष एक दूसरे के मौलिक अधिकारों का हनन नहीं करेंगे तथा इस सहमति के उपरान्त एक दूसरे के प्रति द्वेष भावना न रखते हुये पूरी निष्ठा से कार्य करेंगे।

9. इस समझौते के उपरान्त दोनों पक्षों के बीच कोई विवाद शेष नहीं रहेगा तथा सभी विवाद समाप्त समझे जायेंगे।

●3 अक्टूबर को स्थाई मजदूर और ट्रेनी फैक्ट्री के अन्दर गये। ठेकेदारों के जरिये रखे 1200 मजदूरों को ड्युटी पर नहीं लिया। रोष। आश्वासन। 4 और 5 अक्टूबर को भी इन मजदूरों को ड्युटी पर नहीं लिया। गुस्सा बढा। कम्पनी-पक्ष के लोगों ने इन मजदूरों को चिढाया, उकसाया। कम्पनी का ठेकेदारों को स्पष्ट आदेश कि 1200 में से एक भी मजदूर को काम पर नहीं रखना है। स्थाई और अस्थाई मजदूरों के बीच बढते तालमेल को कम्पनी ने अपनी धार पर धरा। आक्रोश और असहायता में 100 के करीब मजदूर हिसाब ले गये परन्तु बाकी मजदूरों ने स्थाई मजदूरों पर दबाव डाला। जो 44 निलम्बित स्थाई मजदूर हैं उन पर तो ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर दबाव बढाते गये और आश्वासन से आगे बढने को कहा।

●दशहरे के बाद, 7 अक्टूबर को सुबह 10 बजे फैक्ट्री गेट पर ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर। धमकाने पहुँचे पहलवान उर्फ बाउन्सर। एक निलम्बित स्थाई मजदूर जो कि कमेटी सदस्य है उसने बाउन्सर को टोका तो वह उस पर ही पिल पड़ा था कि ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों ने हस्तक्षेप किया और बाउन्सर दुम दबा कर खिसका। आई.एम.टी. स्थित फैक्ट्रियों के आश्वासन देने वाले मजदूरों से सम्पर्क। मारुति सुजुकी गेट के बाहर एकत्र हुये और 1 बजे फैसला कर लिया कि 4 बजे, जब ए तथा बी शिफ्ट के मजदूर फैक्ट्रियों में इक्ट्ठे होते हैं तब काम बन्द कर जम जाना है, फैक्ट्रियों पर कब्जा कर लेना है।

●7 अक्टूबर को साँय 4 बजे मारुति सुजुकी मानेसर के ए तथा बी शिफ्ट के स्थाई मजदूरों तथा ट्रेनी यह कह कर फैक्ट्री में जम गये कि ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को ड्युटी पर लो। सुजुकी इन्जन, सुजुकी कास्टिंग, सुजुकी मोटरसाइकिल, सत्यम ऑटो, बजाज मोटर, इन्ड्युरेन्स, हाईलैक्स, लुमैक्स,

लुमैक्स डी के, डिघानिया आदि के मजदूरों ने साँय 4 बजे फैक्ट्रियों में उत्पादन बन्द कर दिया, फैक्ट्रियों के अन्दर प्रदर्शन करने लगे, फैक्ट्रियों पर कब्जा कर लिया और माँग की कि मारुति सुजुकी मानेसर में ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को ड्युटी पर लिया जाये। सरकार ने 200 से ज्यादा पुलिसवाले मारुति सुजुकी फैक्ट्री के अन्दर भेजे। पुलिस फिर फैक्ट्री के अन्दर टिकी है।

●8 अक्टूबर को मारुति सुजुकी, सुजुकी इन्जन, सुजुकी कास्टिंग, सुजुकी मोटरसाइकिल फैक्ट्रियों के मजदूर फैक्ट्रियों पर कब्जा जारी रखे हैं। कम्पनियों ने कैन्टीनें बन्द कर दी हैं इसलिये मजदूरों ने भोजन बनाने का प्रबन्ध किया है। दबाव के कारण सत्यम ऑटो, इन्ड्युरेन्स, हाईलैक्स, लुमैक्स, लुमैक्स डी के, डिघानिया, बजाज मोटर फैक्ट्रियों के मजदूरों से काम शुरू करवा दिया है। गुड़गाँव फैक्ट्री को छोड़ कर सुजुकी समूह की चार फैक्ट्रियों पर मजदूरों के कब्जे को पर्याप्त माना जा रहा है — ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों और 44 निलम्बित स्थाई मजदूरों को काम पर रखवाने के लिये। इस सन्दर्भ में याद आया है 30 सितम्बर का पोस्टर जिसे 1 अक्टूबर को दोपहर चिपकाने पहुँचे तो फैक्ट्री गेट के बाहर सुनसान था। पोस्टर जो नहीं चिपका —

मारुति सुजुकी मानेसर मजदूरों द्वारा ताकत बढाने के बारे में

★ कम्पनी और सरकार ने योजना बना कर, तैयारी करके 29 अगस्त से मजदूरों पर हमला बोला है।

★ मजदूरों के तालमेल एक महीने से इस आक्रमण का सफलता से मुकाबला कर रहे हैं। अनेक प्रकार की सहानुभूति और सहायता ने मजदूरों को मजबूती प्रदान की है।

★ स्थाई, ट्रेनी, अप्रेन्टिस, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के बीच तालमेल मारुति सुजुकी मैनेजमेन्ट और सरकार को रोके हुये हैं। हमलावरों को पीछे धकेलना है।

★ मजदूर अपनी ताकत कैसे बढायें ? यह प्रश्न अरजेन्ट बना हुआ है।

★ मारुति सुजुकी मानेसर के मजदूरों के साथ आई.एम.टी. मजदूरों का जुड़ना पहला और सहज व सरल कदम लगता है।

★ सहानुभूति और सहायता से आगे बढने, अधिक निकट आने के लिये साँझे सवालों को उभारना जरूरी लगता है।

★ तनखायें बहुत कम और स्थाई काम के लिये टैम्परेरी मजदूर रखना जैसी बातें साँझी जमीन प्रदान करती लगती हैं। महँगाई को देखते हुये आई.एम.टी. में आठ घण्टे काम के कम से कम आठ सौ रुपये और ठेकेदारी प्रथा पर रोक के लिये प्रयास मारुति सुजुकी मजदूरों को आई.एम.टी. की हजारों फैक्ट्रियों के मजदूरों के साथ जोड़ सकते हैं।

★ समय है। युवा ऊर्जा है। सैक्टर— 8, 7, 6, 5, 4, 3 की फैक्ट्रियों में 8 घण्टे के 800 और ठेकेदारी पर रोक जैसी बातें मारुति सुजुकी मजदूर पाँच-दस की टोलियाँ बना कर बहुत तेजी से अन्य मजदूरों के बीच ले जा सकते हैं।

★ मारुति सुजुकी मानेसर का मामला आई. एम. टी. का मामला बनना—बनाना हमलावरों को पीछे धकेल देने वाला लगता है। ■

फैक्ट्री में जीवन

एडिगियर इन्टरनेशनल मजदूर : "प्लॉट 253 सैक्टर-6, आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 9½ बजे काम आरम्भ होता है और 100 महिला मजदूर रात 8 बजे छूटती हैं तथा 800 पुरुष मजदूर रात 1 बजे, अगली सुबह 4, 6 बजे तक काम करते हैं। रविवार को साँय 6 बजे, रात 1 तक काम। महिला मजदूरों का महीने में 100 घण्टे और पुरुष मजदूरों का 180-240 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। तनखा देरी से, अगस्त की 20 सितम्बर को देनी शुरू की और थोड़ी-थोड़ी कर दे रहे थे। 22 को सुबह 11 बजे तनखा बँटते समय टोका-टोकी हो रही थी कि डायरेक्टर के छह फुटे परसनल सेक्युरिटी अफसर ने एक मजदूर के थप्पड़ मारा। क्यों मारा? छह फुटा निकल गया.... भोजन अवकाश में मजदूर फैक्ट्री से निकले और थप्पड़ मारने वाले से पूछने लगे तो वह दूसरे परसनल सेक्युरिटी अफसर की सहायता से छुड़ा कर भाग गया। तभी जनरल मैनेजर फैक्ट्री के बाहर मिल गया और उसे परसनल सेक्युरिटी अफसर बना दिया गया। साहब ई.एस.आई. अस्पताल में भर्ती। फोन पर शिकायत। कम्पनी की जिला पुलिस से सैटिंग है, तत्काल कार्रवाई हुई। पुलिस आई और जिन 42 मजदूरों के नाम दिये थे उन्हें गिरफ्तार कर मानेसर थाने ले गये। काम बन्द कर मजदूर फैक्ट्री से बाहर आ गये। थाने से 21 को छोड़ दिया और 21 को बन्द रखा। फैक्ट्री में 23-24-25 को उत्पादन बन्द। मजदूर कह रहे हैं कि रिहा करो, केस वापस लो, खाली दिनों का मुआवजा दो..... अगर शिपमेन्ट भेजनी है तो यह करो। ***एडिडास, रिबोक, प्यूमा, आई पी एल किट*** का चमड़े का सामान..... अरजेन्ट आर्डर हैं, कम्पनी को सोम-मंगल (26-27 सितम्बर) तक समझौता करना पड़ेगा। मैनेजर के पिटते समय ए पी सेक्युरिटी गार्डों ने अपनी ड्युटी की, एक तरफ खिसके।"

नवम्बर 2011

जीवन द्वारा समय की नई रचना

''मजदूर समाचार'' ने पिछले तीस वर्षों के दौरान जीवन की अनगिनत दस्तकों को सुना है। उनके बारे में सोचा है। जीवन की दस्तकों ने अन्य के साथ-साथ स्वयं से भी जूझने को मजबूर किया है। इन पाँच महीनों के दौरान जीवन की लौ की ऊर्जा, पैमाना, दमक, उत्साह अद्‌भुत हैं। जीवन के यह क्षण अपनाने के हैं, इनके संग एकमय होने का समय है यह। हम एकमय और एकमेव के युग में प्रवेश कर गये हैं।

मारुति सुजुकी मानेसर में युवा साथियों ने नये जोड़ों की रचना द्वारा जीवन की सम्भावनाओं की झलक दिखाई है। हवा में कुछ नया तैरने लगा है।

कल ही की बात है। मैट्रो में एक यात्री गाने लगा। वह न तो दुखी था और न ही पीये हुये, वह किसी के वियोग में नहीं गा रहा था और न ही वह पागल था। वह गा रहा था। लोग संग-संग गाने लगे। यात्री मगन हो गये, अपने-अपने स्टेशनों के पार जाते गये और यह बात बताने वाला मित्र तो गुड़गाँव हुडा सिटी सेन्टर ही पहुँच गया।

मजदूर चाहते क्या हैं ?

जून के उन 13 दिन के दौरान कम्पनी चकित थी। कम्पनी की शिकायत ने सरकार को चकित किया। फैक्ट्री पर कब्जा किये वरकरों के खिलाफ पुलिस क्या कार्रवाई करे?

जुलाई में नये जोड़ों, नये तालमेलों की सृजना और उनका प्रचुर होते जाना। स्थाई और अस्थाई मजदूरों के जोड़ ने 27-28 जुलाई को प्रकट हो कर कम्पनी तथा सरकार को पीछे हटने को मजबूर किया।

अगस्त होते हुये सितम्बर आते-आते तो ''मजदूर चाहते क्या हैं?'' का प्रश्न बेचैनी-बेकरारी लिये व्यापक हो गया। दक्षिणी दिल्ली में दक्षिणपुरी के एक युवा लेखक ने चर्चा के दौरान कहा : ''भैया, सिस्टम का एक्सपाइरी डेट होता है। जब वह आ जाता है तब जीवन को उसे पहचान लेना होता है।''

वॉल स्ट्रीट में
भोले की बारात

अमरीका में न्यू यॉर्क शहर में बर्तनों की साइज पर जीवन्त बहस। वॉल स्ट्रीट पर कब्जा करने उमड़े हजारों लोग। बूढ़े, जवान, स्त्री, पुरुष, काले, गोरे, पीले, साँवले, स्थाई व अस्थाई नौकरी वाले दिन-रात नाचते-गाते-चर्चा करते हजारों नये जोड़, नये तालमेल बनाते लोग। बदल जाते हैं जीवन में बर्तनों के आकार, पैमाने और उनके प्रयोग। लोग चाहते क्या हैं ?

अनन्त गूँज। अनेक पोस्टर। कईयों में ''वॉट इज आवर डिमाण्ड?'' (''हमारी माँग क्या है?'')। एक सुन्दर पोस्टर में सट्टा बाजार (शेयर मार्केट) के साण्ड पर नृत्य की उल्लास मुद्रा में युवती और पीछे धूल उड़ाती आती सशस्त्र पुलिस।

माँग नहीं हैं
यह भिड़न्त है

उत्पादन के लिये स्थापित मूल्यों को सीधी चुनौती है मानेसर में युवा साथियों का कहना : ''तानाशाही सहन नहीं करेंगे।'' नये जोड़ों ने इस चुनौती को एक नया आयाम दिया है। क्रिया के वाहक मजदूर बन गये हैं।

प्रतिक्रिया जिनकी नियति बन गई है वे अवाक हैं, हक्के-बक्के हैं, दिग्भ्रमित हैं, भुरभुरे-बिखरने की कगार पर खड़े हैं। उनके अपने लिये अच्छा होगा अपने बोर्डरूमों से निकल कर ड्राइंगरूमों में बच्चों के संग बैठ कर एक्सपाइरी डेट चिपके सिस्टम को एक तरफ रख कर जीवन के बारे में चिन्तन-मनन करें।

कालबद्ध सिस्टम
अनन्त जीवन

मानेसर में एक युवा साथी : ''रुटीन से परे जीवन के बारे में पहली बार सोचा है, फुर्सत में ढँग से सोचा है।'' हजारों साथियों ने कई फैक्ट्रियों में, कई बस्तियों में, कई घरों में, कई ठियों-अड्डों पर इन पाँच महीनों के दौरान एक नई गति और नई ऊर्जा से जीवन के बारे में सोचा है।

जून में फैक्ट्री के अन्दर, अक्टूबर में फैक्ट्रियों के अन्दर मजदूरों ने मशीनों की गति और शोर को थामा। फुर्सत से एक-दूसरे को देखा, नये ढँग से एक-दूसरे को सुना। मशीनों को थाम कर इन्सानों ने नये समय का उत्पादन आरम्भ किया। यह नया समय व्यवस्था की विषय-वस्तुओं से बाहर है।

फैक्ट्रियों पर कब्जा किये मनुष्यों का मिल कर बैठना-पसरना, राग-रागिनी गाना, खूब हँसना, इत्मिनान से खूब बातें करना, जीवन के बारे में सामुहिक विमर्श, उकसाने पर नाचने लगना, हजारों के बीच बातें करते-करते सो जाना, बिना अलार्म के सपने देखना, नये क्षितिज को देखना — इस सब से हुआ नये समय का उत्पादन।

शॉप फ्लोर-असेम्बली लाइन जीवन के इस हस्तक्षेप से, नये समय के इस उत्पादन से हर वक्त छिद्रित रहेंगे।

सृजना :
नये जोड़, नये समय

मानेसर के एक साथी ने कोलकाता के एक पत्रकार को चार्ली चैपलिन की मॉडर्न टाइम्स फिल्म का एक टुकड़ा दिखाया जिसमें असेम्बली लाइन पर काम करता एक मजदूर अपने जीवन की गति छोड़ कर मशीन की रफ्तार की जकड़ में आ जाता है। देख कर खूब हँसी आती है। मानेसर के साथी ने पत्रकार से कहा कि हम अपनी जीवन शक्ति को मशीन की गिरफ्त में नहीं जाने देंगे। हम मनुष्य रहेंगे, हम मशीन नहीं बनेंगे।

जीवन में महत्वपूर्ण क्या है ? जून से मानेसर ने इसे जहाँ देखो वहाँ प्रमुख प्रश्न बना दिया है। मानेसर के एक और साथी का कहना है कि आज पूरी दुनिया देख रही है पूरी दुनिया को बदलते हुये। विश्व-व्यापी जीवन की इस अँगड़ाई में मानेसर का नाद, उत्पादित नया समय और रचित नये जोड़ नई ऊर्जा प्रदान कर रहे हैं।■

मारुति सुजुकी मानेसर डायरी (3)

✶साँय 4 बजे 7 अक्टूबर को आई.एम.टी. में 11 फैक्ट्रियों पर मजदूरों का कब्जा। मामला स्वाभाविक तौर पर मारुति सुजुकी से बाहर फैला था। तेजी से फैलने, हजारों फैक्ट्रियों में तीव्र हलचल की सम्भावना-वास्तविकता सामने खड़ी थी।

✶सरकार, कम्पनियों, बिचौलियों के दबाव ने 8 अक्टूबर को सुजुकी समूह की चार फैक्ट्रियों तक मजदूरों का कब्जा सीमित किया। मारुति सुजुकी गुड़गाँव फैक्ट्री पर कब्जा नहीं होने दिया लेकिन सुजुकी पावरट्रेन इन्जन व ट्रान्समिशन, कास्टिंग तथा सुजुकी मोटरसाइकिल फैक्ट्रियों में उत्पादन आरम्भ करवाने में बिचौलिये असफल रहे। इन फैक्ट्रियों के मजदूरों को 14-16 सितम्बर के दौरान काम बन्द करने तथा काम शुरू करने का अनुभव था।

✶मारुति सुजुकी मानेसर के निलम्बित 44 स्थाई मजदूरों और ड्युटी पर नहीं लिये गये ठेकेदारों के जरिये रखे 1200-1400 प्रोडक्शन वरकरों का मामला एकमय हो गया था। सुजुकी पावरट्रेन और मोटरसाइकिल फैक्ट्रियों के मजदूरों ने इस स्थाई-अस्थाई मजदूरों के जोड़ को चार फैक्ट्रियों का साँझा मामला बना दिया।

✶हिसार लोक सभा उपचुनाव में उलझी राज्य सरकार कुछ खास करने की स्थिति में नहीं थी। चार फैक्ट्रियों पर मजदूरों का कब्जा 7 से 13 अक्टूबर के दौरान सहज-सामान्य रहा। कम्पनी को कुछ सूझ नहीं रहा था। साहबों को समझ में नहीं आ रहा था कि मजदूर चाहते क्या हैं।

✶एक फैक्ट्री में मजदूरों के बीच चर्चा : ''पहले हड़ताल में बाहर हो जाते थे। अब फैक्ट्री के अन्दर ही रहते हैं। ऐसा इसलिये कि बाहर रहने में फैक्ट्री हाथ से निकल जाती है और कम्पनी को मनमानी करने का मौका मिलता है। फैक्ट्री के अन्दर रहने से फैक्ट्री मजदूरों के नियन्त्रण में रहती है।'' लेकिन..... लेकिन फैक्ट्री से बाहर कर दिया जाना अथवा बाहर होना तत्काल अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों से तालमेल का प्रश्न प्रस्तुत करता है और विभिन्न फैक्ट्रियों के मजदूरों के तेजी से एकमय होने की सम्भावना बढाता है। हाँ, मात्र गेट के बाहर बैठना और फूँ-फाँ तो हैं ही फँसना-फँसाना।

✶मारुति सुजुकी मजदूरों का यह रुख कि समस्या हमारी है और अन्य के सहयोग-समर्थन-सहानुभूति से हल हो जायेगी एक बड़ी बाधा बनी रही अक्टूबर में भी आई.एम.टी. मजदूरों के साझा होने में, एकमय होने में। सुजुकी समूह की 4 फैक्ट्रियों के मजदूरों की शक्ति को पर्याप्त मानना सिकुड़ना लिये था, सिकोड़ने वालों के हाथों में फँसना लिये था।

✶रेडियो-टी वी-अखबारों के जरिये प्रचार कि कम्पनी का कुछ नहीं बिगड़ेगा, यहाँ से गुजरात चली जायेगी, यहाँ दो लाख नौकरियाँ खत्म हो जायेंगी, केन्द्र और हरियाणा सरकारों को टैक्सों में भारी नुकसान, फैक्ट्रियाँ तो जुगाड़ कर लेंगी पर वर्कशॉपों का दिवाला निकल जायेगा, मारुति सुजुकी में तनखायें अच्छी हैं और वे मजदूर अपनी ही सोच रहे हैं....... ऐसी बातें दिन काटने और जीवन जीने के उभरे अति महत्वपूर्ण प्रश्न को ढँकने में लगी थी।

✶सुनना सब की पर करना अपने मन की के कारण मारुति सुजुकी मजदूर किसी भी बिचौलिये की मुट्ठी में नहीं आये। ऐसे में यूनियनों ने समर्थन के लिये 7 सदस्यों की समिति बनाई जिसकी 13 अक्टूबर को फैक्ट्री गेट पर आमसभा में सुजुकी समूह की फैक्ट्रियों के मजदूरों के अलावा भाषण देने पहुँचे नेता ही थे।

हिसार चुनाव 13 को हो गया था और 13 को ही पंजाब व हरियाणा हाई कोर्ट का फैक्ट्री खाली करने का आदेश...... नेता बोले कि सरकार ताकत का इस्तेमाल करेगी तो वे आई.एम.टी. स्तर पर, गुड़गाँव स्तर पर, हरियाणा स्तर पर, भारत स्तर पर तुरन्त एक्शन लेंगे।

✶ पुलिस 13 की रात पावरट्रेन गेट से हलवाई को ले गई। भोजन बनाने का प्रबन्ध अलियर गाँव में किया। मानेसर थाने में भारी सँख्या में पुलिस। तहसीलदार कार्यालय पर हरियाणा रोड़वेज की खाली बसों की कतार। डी.सी. गुड़गाँव 14 अक्टूबर को मारुति सुजुकी फैक्ट्री के अन्दर गया और वहाँ मजदूरों को उच्च न्यायालय के आदेश बता कर फैक्ट्री से बाहर बैठने का कहा, वार्ता शुरू करवाने की बातें की।

✶ यूनियनों की समिति को, यूनियन लीडरों को फोन पर फोन किये गये और फैक्ट्रियाँ बन्द कर, मजदूरों को साथ ले कर आने को कहा। नेता बोले कि 12 बजे मीटिंग कर बतायेंगे। कोई फैक्ट्री बन्द नहीं की गई और छोटा-बड़ा कोई नेता मारुति सुजुकी गेट पर नहीं पहुँचा। भोजन अन्दर नहीं जाने दिया गया। फैक्ट्री कमेटी रात 7½ तक बाहर के लिये तैयार हुई। रात 8 बजे एक लीडर आया और कमेटी से कहा कि बाहर निकाल लो। लीडर ने हैण्ड माइक से यही बात फैक्ट्री के अन्दर बैठे मजदूरों से कही। बहुत विरोध हुआ। मजदूर बाहर निकले.....

✶ 15 अक्टूबर को सुजुकी पावरट्रेन ट्रान्समिशन एण्ड इन्जन फैक्ट्री के अन्दर और बाहर भारी पुलिस बल (पंजाब केसरी संवाददाता अनुसार 4000 पुलिसवाले)। बाहर निकलने से इनकार करते 2000 मजदूर। मारुति सुजुकी से 2000 का जुलुस पावरट्रेन गेट पर पहुँचा और मजदूर वहाँ बैठ गये। तनाव बढा। कोई बीच में आया। पावरट्रेन मजदूर बाहर निकले। मारुति गेट तक संयुक्त प्रदर्शन।

✶ 17 को गुड़गाँव में यूनियनों द्वारा सभा, प्रदर्शन, ज्ञापन। दो घण्टे भाषण, कोई एक्शन प्लान की घोषणा नहीं। हुडा गैस्ट हाउस में त्रिपक्षीय समझौता वार्ता आरम्भ। कम्पनी द्वारा फिर कार उत्पादन के आँकड़ों का सिलसिला — थोड़े से मजदूर फैक्ट्री के अन्दर गये। पावरट्रेन में टूट सकते हैं के किस्से।

✶ त्रिपक्षीय वार्ता में शामिल सुजुकी पावरट्रेन के 3 मजदूरों को 19 अक्टूबर को अलग से एक कमरे में बैठा दिया और उनके फोन ले लिये। मारुति सुजुकी समझौते पर 19 अक्टूबर को हस्ताक्षर। पावरट्रेन समझौता 21 को हुआ और तब तक वार्ताओं में शामिल किसी मजदूर को बाहर नहीं जाने दिया। किसी से सम्पर्क नहीं करने दिया — बीड़ी पीने जाते तब, शौचालय तक पुलिसवाले साथ जाते। कहते हैं कि सरकार का कड़ा आदेश था कि समझौता होने से पहले मजदूरों को निकलने नहीं देना है। मारुति सुजुकी समझौते की धारा 6 के अनुसार 20 अक्टूबर को बी-शिफ्ट में काम आरम्भ करना ...... सुनाया ही 21 अक्टूबर को साँय 4 बजे जा कर—

समझौते की शर्तें

1. दोनों पक्षों में यह तय हुआ कि दिनांक 30—9—2011 के समझौते के अनुसार जो 44 श्रमिक निलम्बित अवस्था में थे, उनमें से 22 श्रमिकों के विरुद्ध घरेलू जाँच जारी रहेगी/की जायेगी। घरेलू जांच समयबद्ध तरीके से 10 दिनों के अन्दर-अन्दर पूरी की जायेगी। जांच उपरान्त जो भी निर्णय लिया जायेगा वह श्रमिकों को मान्य होगा। यदि निर्णय किसी श्रमिक के विरुद्ध भी हुआ तो इस सन्दर्भ में श्रमिक किसी प्रकार का आन्दोलन जैसे टूल डाउन हड़ताल, Sit-In-Strike एवं धरना इत्यादि नहीं करेंगे। शेष 22 श्रमिकों को प्रारम्भिक जांच पूर्ण होने के बाद लिए गए निर्णय के अनुसार दिनांक 20—10—2011 से वापिस नौकरी पर लिया जायेगा।

2. दिनांक 07—10—2011 से दिनांक 18—10—2011 की अवधि में 32 श्रमिकों की सेवाएं समाप्त कर दी गइ थी, 10 श्रमिकों को निलम्बित कर दिया गया था तथा 8 तकनिशियन प्रशिक्षणार्थियों को टर्मिनेट कर दिया गया था, इनमें से सभी 8 तकनिशियन प्रशिक्षणार्थियों को बतौर ट्रेनी पुनः लिया जायेगा। जिन 32 श्रमिकों को सेवाएं समाप्त की गई थी उनमें से 7 श्रमिकों के सेवा समाप्ति के आदेश प्रबंधन द्वारा निलम्बन में तबदील किये जायेंगे, परन्तु उनके विरुद्ध घरेलू जांच की जायेगी और जांच के आधार पर जो निर्णय होगा वह मान्य होगा। यदि निर्णय किसी श्रमिक के विरुद्ध भी हुआ तो इस सन्दर्भ में श्रमिक किसी प्रकार का आन्दोलन जैसे टूल डाउन हड़ताल, Sit-In-Strike एवं धरना इत्यादि नहीं करेंगे। शेष 25 श्रमिकों को प्रारम्भिक जांच पूर्ण होने के बाद लिए गए निर्णय के अनुसार दिनांक 20—10—2011 से वापिस नौकरी पर लिया जायेगा। जिन 10 श्रमिकों को निलम्बित किया गया था, उनमें से श्री अशोक कुमार अनुबन्ध ''क'' के क.सं. नं. 807222 का निलम्बन जारी रहेगा और उसके विरुद्ध घरेलू जांच की जायेगी। यदि निर्णय इस श्रमिक के विरुद्ध भी हुआ तो इस सन्दर्भ में कोई भी श्रमिक किसी प्रकार का आन्दोलन जैसे टूल डाउन हड़ताल, Sit-In-Strike एवं धरना इत्यादि नहीं करेगा। बाकी 9 श्रमिकों को भी प्रारम्भिक जांच पूर्ण होने के बाद लिए गए निर्णय के अनुसार दिनांक 20—10—2011 से वापिस नौकरी पर लिया जायेगा।

3. दोनों पक्षों में यह भी तय हुआ कि दिनांक 07—10—2011 से किसी भी श्रमिक के कार्य वापसी तक ''कार्य नहीं तो वेतन नहीं'' के सिद्धान्त के अनुसार इन दिनों का कोई वेतन देय नहीं होगा इसके अतिरिक्त जुर्माने के तौर पर मात्र एक दिन के वेतन की कटौती की जायेगी ।.......

6. दोनों पक्षों में यह भी तय हुआ कि सभी श्रमिक कल दिनांक 20—10—2011 से तत्काल ''बी.'' शिफ्ट से ड्युटी पर रिपोर्ट करेंगे ।.......

10. श्रमिकों के लिए दिनांक 30 सितम्बर 2011 से पूर्व की भांति बस सेवा जारी रहेगी ।

11. दोनों पक्षों में यह भी तय हुआ कि संस्था में ठेकेदारों के श्रमिकों के बारे में संस्था के प्रबन्धक ठेकेदारों से अनुरोध करेंगे कि ठेकेदारों के श्रमिकों के विषय में 29 अगस्त 2011 की स्थिति बहाल की जायेगी ।............

✶21 अक्टूबर की साँय मारुति सुजुकी मजदूर खुश थे । नारे लगा रहे थे । विश्वास था कि जो 30 निलम्बित हैं वो 10 दिन में आ ही जायेंगे । लेकिन प्रधान नर्वस था, कह कुछ रहा था और मुँह से निकल कुछ रहा था । समझौता पढ कर नहीं सुनाया, वैसे ही मुँहजबानी बताया । महासचिव तो मंच पर ही नहीं आया था, मजदूरों ने दबाव दे कर बुलवाया । लीडरों की आवाज में दम नहीं था । भाषण देने वालों ने नारे भी नहीं लगवाये ।

✶22 अक्टूबर को ए-शिफ्ट में मजदूर फैक्ट्री गये । न तो सुबह और न ही साँय कोई भी कमेटी वाला हाथ मिलाने आया । क्यों नहीं आये ? मीडिया वाले आये थे ।

✶22 को ही फैक्ट्री मैनेजर ने मीटिंग ली । विभागों से 2-2, 3-3 थोड़े कम बोलने वालों को साहबों ने भेजा था । फैक्ट्री मैनेजर का चेहरा भारी-भारी सा हो रखा था । बोले ''मायूस क्यों बैठे हो? खुश रहो यार ।''

मजदूर : ''हम कब नाराज हैं, हम तो खुश हैं ।''

फैक्ट्री मैनेजर ने कहा कि लाभ में कुछ हिस्सा मजदूरों को देने के लिये चर्चा कर रहे हैं । ट्रेनी के और ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के पैसे बढा दिये हैं, स्थाई मजदूरों की अप्रैल में एग्रीमेन्ट लागू होगी इसलिये अभी नहीं बढाये । वर्ष में 16 छुट्टी करने पर कोई पैसे नहीं कटेंगे । बसों की सँख्या और रूट बढायेंगे । वर्क्स कमेटी बना लो ।

मजदूर : ''यह कमेटी कब तक चलेगी ?''

✶रविवार, 23 अक्टूबर को लगभग सब मजदूरों के कानों में यह बात पहुँची कि कुछ गलत हुआ है । प्रधान और महासचिव ने गुपचुप नौकरी से इस्तीफे दे दिये थे । बताया क्यों नहीं ? कमेटी के किसी भी सदस्य ने बताया क्यों नहीं ? प्रधान समझौता सुनाने के बाद से गायब । बुला कर अलग से महासचिव को मजदूरों ने खूब खरी-खरी सुनाई । पूरी कमेटी को नकार दिया है । निलम्बित बचे 28 के बारे में 5 ने, 15 ने नौकरी से इस्तीफे दे दिये हैं वाली बातें हैं ।

✶फैक्ट्री में मजदूर एग्रीमेन्ट की चर्चा ही नहीं कर रहे — जिन्होंने समझौता किया है उन से अब हमारा कोई रिश्ता नहीं है । चिन्ता है पर डर नहीं है । डर तो निकल गया है । चर्चायें हो रही हैं कि ऐसे में क्या-क्या करें ? फैक्ट्री में न तो मैनेजमेन्ट हावी है और न ही मजदूर हावी हैं । सोमवार, 24 अक्टूबर को पे-स्लिप में पुरानी यूनियन के लिये चन्दे के 10 रुपये काटने की मजदूरों में चर्चा । घबरा कर कम्पनी ने पे-स्लिप ही नहीं दी । नई बनवाई, उसमें 10 रुपये नहीं काटे, यह पे-स्लिप 30 अक्टूबर को दी ।

✶जैसे हालात बने थे उनमें मारुति सुजुकी को मजबूर हो कर ठेकेदारों के जरिये रखे 1200 मजदूरों को ड्युटी पर लेना पड़ा । और, मामले का सुजुकी समूह में सिमट जाना मजदूरों के लिये सहयोग-समर्थन-सहानुभूति पर अधिकाधिक आश्रित होना लिये था ।

✶सामाजिक प्रक्रिया को समझने की क्षमता साहबों में नहीं होती । इसलिये वे इस-उस व्यक्ति अथवा छोटे समूह को जिम्मेदार ठहराते हैं और उन से निपटने में पूरी ताकत लगा देते हैं । इसलिये मारुति सुजुकी में 30 मजदूरों तथा सुजुकी पावरट्रेन में 3 मजदूरों से पार पाने में सरकार और कम्पनी चैन देख रही हैं । जबकि, इन पाँच महीनों ने इन चन्द मजदूरों को ऐसी स्थिति में ला दिया था कि यह लोग मजदूरों पर नियन्त्रण स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते थे । लेकिन, यह इस समय का फेर है कि सरकार और कम्पनी ने बौखलाहट में अपने सम्भावित औजारों को फेंक दिया है, ऐसे मजदूरों को नौकरी छोड़ने के लिये तैयार किया ।

आज नये सिरे से, नये धरातल पर जीवन दस्तक देने लगा है ।■

लगातार खींचातान

शिवालिक प्रिन्ट्स लिमिटेड मजदूर : ''प्लॉट 21-22 सैक्टर-6, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 24 अक्टूबर को 200 कैजुअल वरकर फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये। गेट पर रहे — बोनस दो। छह घण्टे कामबन्द। चेयरमैन ढाई बजे आया, आश्वासन दिया। कैजुअल वरकरों को 25 अक्टूबर को बोनस दिया।

''सैक्टर-6 में ही प्लॉट 47-48 स्थित कम्पनी की फैक्ट्री में मजदूरों ने 25 अक्टूबर को सुबह 9 बजे तक ओवर टाइम के पैसों के लिये इन्तजार किया और फिर काम बन्द कर दिया। एक घण्टे रुक कर रोटरी, डाइंग, टेबल, सैम्पलिंग, फिनिशिंग विभागों से निकल कर 250 मजदूर फैक्ट्री गेट पर एकत्र हो गये। टाइम ऑफिस वाले निकल-निकल कर देखने लगे। परसनल मैनेजर देख कर गया। कैशियर ने पौने बारह बजे पैसे बाँटने शुरू कर दिये।''

ओसवाल डाई कास्टिंग श्रमिक : ''48-49 इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर रविवार, 16 अक्टूबर को काम करने फैक्ट्री नहीं पहुँचे। सोमवार को फैक्ट्री में उपस्थित रह कर मजदूरों ने दिन और रात में काम नहीं किया। कुल मजदूरों का 95-98 प्रतिशत हैं ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर। मैनेजरों ने मीटिंग ली। मजदूरों ने चाय नहीं पी। आज, 18 अक्टूबर को भी काम बन्द... बोनस माँग रहे हैं जिसे बीस वर्ष से नहीं दे रहे। इन्सेन्टिव जिसे बन्द कर दिया वह दो। वर्दी दो। ओवर टाइम में रोटी के लिये देते 12 रुपये बढाओ।''

लखानी वरदान ग्रुप कामगार : ''प्लॉट 131, 144, 265 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में मजदूरों ने 21 अक्टूबर को दिन के 12 बजे काम बन्द कर दिया। बोनस 20 की जगह 8.33 प्रतिशत करने के विरोध में काम बन्द। 22 अक्टूबर को सुबह-सुबह कई थानों की पुलिस, दंगा वाहन, अग्निशमन गाड़ी, पुलिस एम्बुलैन्स सैक्टर-24 में। चेयरमैन ने 20 प्रतिशत बोनस की घोषणा की।''

धीर इन्टरनेशनल कामगार : ''299 उद्योग विहार फेज-2, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में दस ठेकेदारों के जरिये रखे 900 मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, बोनस नहीं। हैल्परों की तनखा 4000 रुपये और कारीगर पीस रेट पर। सुबह 9 से रात 8½ तक रोज काम और उसके बाद रात 2 बजे तक रोक लेते हैं। महीने में 100-150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। तनखा हर महीने देरी से, सितम्बर की 22-23 अक्टूबर को जा कर दी। हर महीने एक-दो ठेकेदार भाग जाते हैं और कम्पनी जिम्मेदारी नहीं लेती, मजदूरों के 15-20 दिन किये काम के पैसे मारे जाते हैं। गाली, मारपीट भी — प्रोडक्शन मैनेजर सुपरवाइजरों को गाली देता है। पानी ठीक नहीं। शौचालय गन्दे।''

निधि मैटल ऑटो कम्पोनेन्ट्स वरकर : ''मिल्क प्लान्ट रोड़, आर्यनगर, बल्लभगढ स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ***हीरो मोटरसाइकिल*** के हिस्से-पुर्जे बनते हैं। महिला मजदूरों की दिन की 11 घण्टे की शिफ्ट। रविवार को भी काम। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 3000-4000 और ऑपरेटरों की 4000-4500 रुपये। दो सौ मजदूरों में 20-25 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ.। जाँच के लिये श्रम अधिकारी 2 सितम्बर को फैक्ट्री पहुँचे तो पौने दो सौ मजदूरों को पीछे के गेटों से बाहर निकाल दिया। पावर प्रेस कई हैं, एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं। हाथ कटने पर पीछे की तारीख से ई.एस.आई. बनवा देते हैं। छोटे एक्सीडेन्ट पर प्रायवेट में उपचार। गाली देते हैं, मारपीट भी।''

किरण उद्योग मजदूर : ''प्लॉट 2 सैक्टर-4 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 150 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ***होण्डा, सुजुकी, यामाहा, हीरो*** की स्कूटी के रिम, हब, टायर-ट्यूब फिट करते हैं। काम का बोझ ज्यादा है, मजदूर छोड़ जाते हैं। छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं मिलते। हर महीने गड़बड़ कर कुछ मजदूरों के 300-500 रुपये खा जाते हैं। स्थाई स्टाफ वाले ही हैं, मजदूरों को तीन ठेकेदारों के जरिये रखा है। फैक्ट्री में पीने के पानी का प्रबन्ध ही नहीं है। जब कभी सप्लाई का पानी आता है तब पीते हैं या फिर फैक्ट्री के बाहर ठेले वाले के यहाँ पानी पीते हैं। प्यासे मजदूर 7 अक्टूबर को हो-हो करने लगे। लाइन बन्द। इन्चार्ज ने पानी की 5 बड़ी बोतलें मँगवाई।''

ट्रैक्टल टिरफोर कामगार : ''पृथला-दुधौला रोड़, पलवल स्थित फैक्ट्री में 28 स्थाई मजदूर और 7-8 ठेकेदारों के जरिये रखे 275 वरकर काम करते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की सुबह 8½ से रात 7½ की शिफ्ट है और फिर पूरी रात भी रोक लेते हैं। महीने में 80-120 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. राशि काटते हैं पर कार्ड नहीं देते और छोड़ने पर फण्ड के पैसे मजदूर को नहीं मिलते। हर महीने गड़बड़ कर 200-300 रुपये खा जाते हैं। पानी खराब। शौचालय गन्दे।''

दिसम्बर 2011

क्रियाशील है जीवन शक्ति

''7 से 14 अक्टूबर के दौरान मारुति सुजुकी फैक्ट्री के अन्दर बहुत-ही बढिया समय रहा। न काम की टेन्शन। न आने-जाने का तनाव। न बस पकड़ने की चिन्ता। न खाना बनाने की टेन्शन। न खाना खाने की चिन्ता कि 7 बजे ही खाना है या 9 बजे ही खाना है। न इस बात की टेन्शन कि आज कौन-सा दिन है और कौन-सी तारीख चल रही है। निजी बातें बहुत होती थी। एक-दूसरे के इतने करीब कभी नहीं आये जितने इन 7 दिनों में आये।''

''पहले हम प्रधान, महासचिव, विभाग संयोजक पर डाल देते थे — वे बतायेंगे। लेकिन, अब हर मजदूर स्वयं उत्तर देता है। हर बात पर हर कोई अपनी राय देता है। माहौल बदल गया है। मारुति सुजुकी मानेसर मजदूर आपस में हँसी-मजाक करते हैं और मस्ती में लाइन पर भी 'इन्कलाब जिन्दाबाद!' बोल देते हैं।''

''विश्व-व्यापी जीवन की इस अँगड़ाई में मानेसर का नाद, उत्पादित नया समय और रचित नये जोड़ नई ऊर्जा प्रदान कर रहे हैं।'' 'मजदूर समाचार' के पिछले अंक में इन बातों पर विचार करते हुये एक साथी ने अभिभूत हो कर अपने तीस वर्ष की रचनात्मक क्रियाओं के अनुभवों को नई ऊर्जा के साथ व्यक्त किया। इन तीस वर्षों में उन्होंने जिन अनेक जोड़ों की रचना-निर्माण-विस्तार किया उनकी चर्चा में लीन हो गये। हजारों सहकर्मियों के संग दीर्घकालीन और गहरे जोड़ तो बनाये ही, कई स्थानों पर हजारों अनजान लोगों के साथ भी सजीव जोड़ बनाये। और, यह सिलसिला नये स्तरों पर गतिमान है जिनमें एक स्तर पर वह साथी हर रोज तीन घण्टे जाने-अनजाने बच्चों, वृद्धों, महिलाओं, पुरुषों का निशुल्क रिफ्लैक्सोलॉजी उपचार करते हैं।

यह हम सब की वास्तविकता है। हम हर समय किसी-न-किसी रूप में दुनिया के सम्मुख रचनाकार के रूप में, जीवनदायिनी शक्ति के तौर पर खड़े होते हैं। लेकिन, हम सब की इस क्रियाशील जीवन शक्ति को प्रतिक्रिया वाली शक्तियाँ घाव, पीड़ा, पराजय के शब्द-आडम्बर में लपेट कर मूक बनाने में लगी रहती हैं, चुप्पी में धकेलने में लगी रहती हैं।

समय है रचना का, सृजना के नृत्य का

'' पूरी दुनिया देख रही है पूरी दुनिया को बदलते हुये'' का उल्लास व्यक्त हुआ था मानेसर के एक युवा साथी के शब्दों में। क्या देख रहे हैं ? क्या बदल रहा है ?

बिलकुल स्पष्ट है विश्व के हर क्षेत्र में सरकारें लड़खड़ा रही हैं, अधिकाधिक डगमग हैं, कोई भी संस्था किसी भी संस्था पर विश्वास नहीं कर रही, कोई भी प्रतिनिधि किसी भी प्रतिनिधि पर भरोसा नहीं कर रही-रहा। विश्व के प्रमुख आर्थिक समाचार पत्रों में धुँआधार बहस चल रही है कि कब क्या हो जाये पता नहीं। एक सरकार दूसरी सरकार पर आरोप लगा रही है, एक बैंक दूसरे बैंक पर आरोप लगा रहा है, सरकारें बैंकों पर और वित्त संस्थायें सरकारों पर आरोप लगा रही हैं, कम्पनियाँ सरकारों पर और सरकारें कम्पनियों पर आरोप लगा रही हैं। फाइनैन्शियल टाइम्स के यूरोप संस्करण के 7 नवम्बर अंक में एक स्थापित ज्ञानी के लेख में वाशिंगटन में साहबों के बीच का एक चुटकुला देखें : ''एक ड्राइवर वाशिंगटन में जाम में फँसा था। एक व्यक्ति ने खिड़की खटखटाई और बोला, 'आतंकवादियों ने संसद का अपहरण कर लिया है और वे 500 करोड़ रुपये माँग रहे हैं अन्यथा वे सांसदों पर पैट्रोल छिड़क कर जला डालेंगे। हम एक से दूसरी कार जा कर दान एकत्र कर रहे हैं।' ड्राइवर ने पूछा, 'लोग कितना दे रहे हैं?' झट से वह व्यक्ति बोला, 'चार लीटर पैट्रोल।''' लेखक के अनुसार संसद की ऐसी अवमानना देखी-सुनी नहीं पर जायज लगती है।

जिनकी स्थिति ऊपर बयान की गई है वे इन एक सौ वर्षों के दौरान स्वयं को क्रिया के वाहक के तौर पर प्रस्तुत करते रहे हैं और व्यापक स्तर पर उन्हें ऐसा देखा भी गया। सरकारों, कम्पनियों, साहबों, प्रतिनिधियों को क्रिया के वाहक पेश किया गया और देखा गया। इनका दिवालियापन अब शंका से परे है। आज तो और भी साफ-साफ दीखने लगा है कि यह सब जीवन के उल्लास, बेरोक अभिव्यक्तियों, और पृथ्वी पर स्वयं जीवन के भविष्य के विरुद्ध खड़े हैं। इन से कोई क्या डिमाण्ड करेगी-केरगा?!

यह जो माँग-विहीन स्थिति उत्पन्न हुई है यह अपने आप पैदा नहीं हुई है। कोई डिमाण्ड ही नहीं की हालात उपज है करोड़ों लोगों के अरबों प्रयासों की। जीवन के आनन्द को अभिव्यक्त करने तथा व्यापक बनाने पर आधारित हैं यह कोशिशें। प्रतिक्रिया वाली शक्तियों की लाखों बाधाओं और हमलों से टकराते हुये, उनकी सीमाओं को लाँघते हुये जीवन के आनन्द की अभिव्यक्तियाँ निरन्तर जारी हैं। जीवन आनन्द है, जीवन के अनेकानेक रसों को आत्मसात करने का समय है यह। जीवन का उन्माद, जीवन का बावलापन..... इन को घना और तीव्र करने का समय है यह।

इसलिये हम स्वयं से कह रहे हैं, मित्रों से कह रहे हैं, तथाकथित शत्रुओं से हँस कर कहते हैं कि स्यापा छोड़ो, विलाप को त्याग दो, छाती पीटना बन्द करो और उल्लासपूर्ण जीवन के लिये बेधड़क हो कर रचना-सृजना-कल्पना में जुट जाओ।■

गुजरात में

दस वर्ष से सूरत में कपड़ों की रंगाई व छपाई फैक्ट्रियों में काम करता मजदूर : सूरत शहर और गुजरात इन्डस्ट्रीयल डेवलेपमेन्ट कॉरपोरेशन के पण्डेसरा औद्योगिक क्षेत्र में बिलटैक्स, महेश डाइंग एण्ड प्रिन्टिंग, बालकृष्णा डाइंग एण्ड प्रिटिंग, पंछी डाइंग, ओरियन्टल डाइंग एण्ड प्रिन्टिंग, मनहर डाइंग एण्ड प्रिन्टिंग फैक्ट्रियों में काम कर चुका हूँ। आरम्भ में हैल्पर (बेगारी) लगा तब 12 घण्टे के 65 रुपये देते थे। अब डाइंग में हैल्पर को 12 घण्टे के 165-170, फ्लैटरमैन को 180-185, और ऑपरेटर को 200 रुपये देते हैं। प्रिन्टिंग में अब बेगारी को 12 घण्टे के 200, चेकरमैन को 250 और ऑपरेटर को 300-400 रुपये देते हैं। रंगाई-छपाई फैक्ट्रियों में 400 से 1200 मजदूर हैं और हर फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। पण्डेसरा औद्योगिक क्षेत्र की फैक्ट्रियों में ही चार लाख के करीब मजदूर हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. किसी मजदूर की नहीं हैं। बॉम्बे डाइंग में 8 घण्टे की ड्युटी और ई.एस.आई. व पी.एफ. थी, वह 6-7 वर्ष पहले बन्द हो गई। अब पण्डेसरा औद्योगिक क्षेत्र में किसी भी फैक्ट्री में 8 घण्टे ड्युटी और ई. एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं। कपड़ा बुनने वाले मजदूरों को मीटर के हिसाब से पैसे मिलते हैं और 6 मशीनें (लूम) चलाने वाले को 12 घण्टे के 250-300 रुपये पड़ते हैं। सचिन इन्डस्ट्रीयल एरिया जो कि 6-7 किलोमीटर दूर है वहाँ 10-15 रुपये अधिक मिलते हैं पर बाकी सब ऐसा ही है। महीने में दो बार, 15 दिन में भुगतान होता है। किराये के कमरे के लिये 2 से 5 हजार रुपये पहले जमा करने पड़ते हैं। गैस के भाव बढाने के खिलाफ रंगाई व छपाई फैक्ट्रियों ने तालाबन्दी की। पाँच दिन बाद फैक्ट्रियाँ खोली तब 500 से ऊपर फैक्ट्रियों में काम करते 4 लाख मजदूरों ने बैठाये दिनों के पैसे माँगे। मैनेजमेन्टों की आनाकानी पर मजदूर फैक्ट्रियों के अन्दर ही नहीं गये। बैठे दिनों के पैसे दिये तब फैक्ट्रियों में काम आरम्भ हुआ। सूरत में ही कुछ हजार फैक्ट्रियों में कपड़ा बुनते दस लाख मजदूरों ने छह दिन काम बन्द रखा था। इतनी ज्यादा फैक्ट्रियों के मजदूरों के बीच तालमेलों का सिलसिला बढ रहा है। ऐसे तालमेल अनुकरणीय हैं।

हलचल

सीजन एग्जिम मजदूर : ''ए-278 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में फिनिशिंग विभाग में सुबह 10 से साँय 7¼ की ड्युटी है। रोज 9¼ घण्टे काम पर 26 दिन के मजदूरों को 5000-5500 रुपये देते हैं। सिलाई विभाग में सुबह 9 से रात 9 की शिफ्ट है। सिलाई कारीगर पीस रेट पर हैं और हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 6000 रुपये देते हैं। फैक्ट्री में 80 मजदूर हैं जिनमें 10 की पी.एफ. है और 30 की ई.एस.आई. है। फैक्ट्री पहले ओखला फेज-2 में थी और उत्पादन तथा फिनिशिंग का अधिकतर काम फैक्ट्री के बाहर ठेकेदारों के जरिये करवाया जाता है। इधर पीस रेट बढवाने के लिये 24 नवम्बर को सिलाई कारीगरों ने काम बन्द किया तो मैनेजर ने 5 से 10 रुपये बढा दिये पर .... पर 30 नवम्बर को पैसे पुराने रेट पर ही दिये। मैनेजर के मुकरने से रोज फैक्ट्री में हो-हल्ला हो रहा है। सुबह 9 से रात 9 तक कभी कोई तो कभी कोई मजदूर चिल्लाता है, खूब मजा आ रहा है। मैनेजमेन्ट कह रही है कि पुराने रेट को भी घटायेंगे। दिवाली पर मैनेजमेन्ट ने बोनस देने से इनकार किया था। दिवाली के दिन, 26 अक्टूबर को भी फैक्ट्री में काम चल रहा था। बोनस के लिये 11 बजे डायरेक्टर से धक्का-मुक्की हुई। मैनेजमेन्ट ने फैक्ट्री में पुलिस बुला ली थी। और, 1 बजे से बोनस में एक महीने की तनखा देनी शुरू की। सिलाई कारीगरों ने शोर-शराबा किया तब पीस रेट वालों को 500-500 रुपये दिये थे।''

मारुति सुजुकी मानेसर डायरी (4)

✶ जून से पहले हर रोज ए-शिफ्ट सुबह 7 की बजाय 6 बजे आरम्भ होती थी और बी-शिफ्ट रात 12½ की बजाय 1 बज कर 40 मिनट पर छूटती थी। प्रतिदिन के इन दो घण्टे ओवर टाइम को मारुति सुजुकी मैनेजमेन्ट दिखाती नहीं थी और भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से कम्पनी करती थी। दस लाख की क्षमता और पिछले वर्ष कम्पनी द्वारा 12 लाख 70 हजार कार बेचना। जून में मजदूरों द्वारा 13 दिन फैक्ट्री पर कब्जे के बाद से यह ओवर टाइम बन्द है।

✶ एक सुपरवाइजर बोला, "मजदूरों ने दुबारा फैक्ट्री पर कब्जा करके बसें फिर से लागू करवा दी वरना भागते-भागते धोती गीली हो जाती।"

✶ दूसरी बार वाले समझौते के बाद 3 अक्टूबर को गुड कन्डक्ट बाँड पर हस्ताक्षर कर अन्दर गये। जितने हम डरे हुये थे उससे दुगुने सुपरवाइजर और मैनेजर डरे हुये थे। हर विभाग में प्रमुखों द्वारा प्रवचन के बाद 9 बजे लाइनों पर पहुँचे। तीस प्रतिशत मजदूरों के कार्यस्थल बदल दिये थे। तभी ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के आने लगे कि स्थाई मजदूर और ट्रेनी तो अन्दर गये पर हमें नहीं लेंगे, हिसाब लेने की कह रहे हैं। बाहर रखी गई कमेटी पर विश्वास था, उसी का आदेश मान रहे थे, समिति बोली कि ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को ड्युटी पर लेने के लिये मैनेजमेन्ट को 2-3 दिन का समय दिया है।

✶ 7 अक्टूबर को बी-शिफ्ट वाले अन्दर आ रहे थे तब "कुछ होने" की बातें। अचानक 3½ बजे एक स्थान पर एकत्र हुये। जल्दी से जल्दी विभाग खाली करने और वहाँ किसी को नहीं रहने देने का निर्णय। पुरानी लाइन के सब एक जगह एकत्र हो गये। मानेसर फैक्ट्री के 170 स्थाई मजदूर और गुड़गाँव फैक्ट्री से लाये करीब 700 तथा कानपुर, रीवा, हिमाचल, बिहार, दिल्ली की आई.टी.आईयों से लाये गये 600 से ज्यादा लड़के कम्पनी द्वारा सितम्बर-आरम्भ से फैक्ट्री के अन्दर रखे जा रहे थे। उनमें से काफी को नई लाइन पर लगा दिया था। अधिकतर ऐसे मजदूर स्वयं बाहर निकल गये। चारों तरफ मजदूरों ने चेन बना रखी थी। चेन तो हम फटाफट बना लेते हैं।

✶ पुलिस के 400 लोग पहले से ही फैक्ट्री में थे। रात 8 बजे थानेदार आया और बोला कि जिन्हें जबरन रोका है उन्हें जाने दो। मैनेजमेन्ट के लोग दूर खड़े होते थे और नाम ले-ले कर उन्हें पेश करने को कहा। कुछ ने डर से बाहर जाने से मना भी किया। अगली सुबह ठेकेदारों को साथ ले कर थानेदार ने 30-40 चक्कर लगाये।

✶ 7 अक्टूबर की रात को फैक्ट्री में सोने का कार्यक्रम बना तब गद्दे-तकिये एकत्र कर बाँटने शुरू किये। सितम्बर में 24 घण्टे अन्दर रहने वालों के लिये कम्पनी ने इनका प्रबन्ध किया था। कई पन्नों में नामों की सूची मिली – हर नाम के आगे तौलिया, बनियान, कच्छा, नहाने का साबुन, टूथ ब्रुश व पेस्ट, चप्पल, खैनी-बीड़ी-सिगरेट के कालम बने थे। चौबीस घण्टे अन्दर वालों के अलावा गुड़गाँव फैक्ट्री से बसों में बाउन्सरों के साथ मजदूर लाये जाते थे – वहाँ के ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को ट्रेनी बना दिया था। सुपरवाइजर और मैनेजर भी बाउन्सरों के साथ बसों से आते-जाते थे।

✶ सुपरवाइजरों और मैनेजरों को परेशानी ही परेशानी हुई। सुरक्षा का डर : अन्दर कूद कर बन्दे कब मार दें ? बाहर पकड़ कर कब मार दें? स्थिति सामान्य होने पर कब मार दें? काम का भारी बोझ : 12 घण्टे उत्पादन, नये-अनजान बन्दे, सुपरवाइजरों-मैनेजरों को काम में लगना पड़ता। एक स्थान पर लगा एक लाइन इन्चार्ज बोला, "यहाँ पर बन्दा इतना काम कैसे करता था ?!" चिन्ता : कम्पनी बन्द हो गई तो नौकरी जायेगी। बाहर ढूँढेंगे तब – तुम वहाँ मैनेज नहीं कर पाये, यहाँ नौकरी कैसे दे सकते हैं।

✶ फैक्ट्री पर कब्जे के दौरान भड़काने के लिये मैनेजमेन्ट बड़े-बड़े ट्रेलरों के संग 100 पुलिस वाले ले कर प्रेस शॉप से डाई उठाने पहुँची। अन्दर की बात : रोकोगे तो पीटेंगे, ऐसा करना – गाड़ी के आगे लेट जाना। पचास मजदूर ट्रेलरों के सामने लेट गये। थानेदार ने हाथ खड़े कर दिये और मैनेजमेन्ट से कहा कि तुम चाहो तो इनके ऊपर से ले जाओ। गाड़ियाँ वहीं खड़ी रह गई। ड्राइवर चले गये।

✶ फैक्ट्री में मौजूद 400 पुलिसवालों के अलावा 13 अक्टूबर को साँय 200 पुलिस वाले और आ गये। रात 10 बजे बाद मजदूरों की चेन ने कैमरामैन और हेल्मेट-वेल्मेट लगाये 30-40 पुलिस वालों के संग आये प्रशासनिक अधिकारी को रोका। हाई कोर्ट के आदेश की प्रति चिपकाने आये थे। चर्चा के बाद अन्दर की समिति ने अनुमति दी। पूरी हड़बड़ाहट में थे – कागज चिपकाये तब फोटो ली, बातचीत करते समय फोटो ली। आदेश पढने के बाद पहलेपहल थोड़ी घबराहट और फिर बाहर नहीं

निकलना का निर्णय। शान्त रहने का निर्णय। पुलिस ने साँय से ही कोई सामान अन्दर नहीं आने दिया था — 13 अक्टूबर की रात भूखे रहे, बातचीत में रात कटी। बचा हुआ चना सुबह अप्रेन्टिसों में बाँटा। कम्पनी ने सुबह शौचालयों का पानी बन्द कर दिया। पीने का पानी भी छिपा कर एकत्र किया।

★तलाशी के लिए थानेदार के आने की सूचना। अन्दर 1600 के करीब स्थाई मजदूर, ट्रेनी और अप्रेन्टिस थे। थानेदार ने एक-एक की तलाशी ली। फिर बन्दूकधारियों से घिरा डी.सी. अचानक 20-25 अधिकारियों के संग आया। थोड़ा घूमा और फिर एक जगह खड़ा हो कर बोलने लगा — माइक नहीं था, मजदूरों ने माइक दिया। शुरू में शुद्ध नेता की तरह भाषण : अच्छे मजदूर हो, पढे-लिखे हो, 5 वर्ष से बहुत अच्छा काम कर रहे हो, इतना उत्पादन किया, इतना सरकार को टैक्स, औरों से ज्यादा तनखा है, मैनेजमेन्ट अच्छी है, कुछ लोगों के बहकावे में आ गये हो, फैक्ट्री पर अवैध कब्जा किये हो, उच्च न्यायालय के आदेश का पालन करो, फैक्ट्री खाली करने का आदेश मानना ही पड़ेगा, इसके अलावा कोई चारा नहीं है, कानून से खिलवाड़ हम नही करने देंगे, रीको ऑटो मजदूरों के भटकने से आर्डर खत्म हो गये, मारुति सुजुकी बन्द हो जायेगी तो तुम्हारी नौकरी तो जायेगी पर सरकार घाटा क्यों झेले।

★मजदूर इस आधे घण्टे डी.सी. की बातें ध्यान से सुन रहे थे। फिर डी.सी. ने कहानी सुनानी शुरू की — कहानी जो मारुति सुजकी मैनेजमेन्ट सुनाती रहती है : कछुये और खरगोश वाली बढा कर। दूसरी बार खरगोश सोया नहीं, पहले पहुँचा। तीसरी बार कछुये ने रास्ते में पानी भी लिया, कछुआ जीता। चौथी बार समतल व ऊबड़-खाबड़ रास्ता और पानी भी, तब कभी कछुआ खरगोश की पीठ पर और कभी खरगोश कछुये की पीठ पर। टीम वर्क — मजदूर और मैनेजमेन्ट मिल कर चलें। डी.सी. के कहानी शुरू करते ही मजदूर पसर गये थे, सो गये थे, आपस में बातें करने लगे थे। अन्त में डी.सी. बोला कि अतिशीघ्र मैनेजमेन्ट से समझौता वार्तायें करवायेंगे, अभी तुम आदेश मानो। एक और अधिकारी ने फिर कानून की बात की : अवैध कब्जा किया है, फैक्ट्री खाली करनी पड़ेगी। और, डी.सी. चल पड़ा तो माइक पर एक मजदूर बोला, '' हम ने आपकी सारी बातें सुनी। आप अब हमारी भी सुनो।'' डी.सी. रुका और एक के बाद दूसरा सवाल पूछा जाने लगा तो डी.सी. चलने लगा। तब मजदूरों ने नारे लगाने शुरू किये और तेज आवाज, बहुत तेज आवाज हुई तब डी. सी. तथा अन्य अधिकारी लगभग भागते-से फैक्ट्री से बाहर गये।

★फैक्ट्री मैनेजर द्वारा 22 अक्टूबर को कुछ मजदूरों से चर्चा के बाद कम्पनी के उच्च अधिकारियों, मैनेजिंग एग्जेक्युटिव अफसरों ने मानेसर फैक्ट्री में सीधा हस्तक्षेप किया। राष्ट्रीय राजमार्ग 8 पर महँगे नमकीन-मिठाई स्थल पर दो दिन 60-70 के दो बैचों की मीटिंग ली। छुट्टी लेने पर कटने वाली राशि में से कुछ को फिक्स कर देंगे और कुछ को परिवर्तनशील रखेंगे। वर्ष में 16 छुट्टी दे ही दी हैं। माता-पिता का उपचार भी होगा और इसे अधिक सरल बनायेंगे। यातायात प्रबन्ध के बारे में अच्छा ही सुनोगे। यूनियन बनाओ, कोई एतराज नहीं। कमेटी बनेगी — एतराज है — छोड़ो, मत बनाओ। तनखा में बहुत अच्छी बढोतरी करेंगे, तीन महीने इन्तजार करो — पावरट्रेन से ज्यादा तनखा तो तुम्हें देंगे ही (सुजुकी पावरट्रेन में त्रिवर्षीय दीर्घकालीन समझौते में स्थाई मजदूरों की तनखा में 11,500 रुपये की वृद्धि —6500+2500+2500)। और, और साहब खुद बोले कि काम का बोझ ज्यादा है इसलिये बी-प्लान्ट चालू होने के बाद 45 सैकेन्ड की बजाय एक मिनट में कार बनेगी।

★डिमाण्ड कोई हैं ही नहीं इसलिये बड़े साहब सारी बातें घुमा कर पॉलिसियों के बारे में ही कर रहे थे। बोले : जून के 13 दिन के बाद तुम्हारे बन्दों के साथ जो बात हुई थी उसमें सब तय हो गया था। समझ में नहीं आया है कि फिर क्या हुआ — बहकावे में आ गये या और कोई बात हुई ? एक पार्टी में मारुति सुजुकी के इन साहबों के समकक्ष ह्युन्दई, होण्डा, फॉक्सवैगन, मर्सीडीज, फोर्ड, जनरल मोटर आदि कार कम्पनियों के शीर्ष अधिकारी थे। उन में से कई मारुति सुजुकी से ही निकल कर वहाँ गये हैं। क्या पता उन्होंने ही अपनी वर्तमान कम्पनी के फायदे के लिये यह सब करवाया हो?

★3 नवम्बर को ए और बी शिफ्टों में एक-एक घण्टे काम बन्द कर हर विभाग में अलग-अलग मीटिंग हुई। बड़े साहबों की बातें दोहराई गई। मैनेजमेन्ट ने 4 नवम्बर को नोटिस लगाया कि किसी कारणवश वर्क्स कमेटी बनाने का कार्यक्रम रद्द कर दिया गया है।

★मानेसर में ए-प्लान्ट में दो शिफ्टों में 1150 वाहन बन रहे हैं। ओवर टाइम सख्ती से मना है। मैनुअल लाइन बन्द ही है। वहाँ पर 70-80 पुलिस वाले रहते हैं। सुबह-सुबह नवम्बर-अन्त में भी तौलिये लपेटे दाँत साफ करते दिखते हैं।

हवा में नया कुछ है

पुराना ढर्रा। पेशे से सम्बन्धित सामान्य माँगें। सरकार द्वारा आश्वासन पर आश्वासन। हरियाणा में सरकारी डॉक्टरों के संगठन के पदाधिकारियों द्वारा सरकार पर दबाव डालने के लिये 8 और 9 नवम्बर को सामुहिक आकस्मिक अवकाश लेने की घोषणा।

पदाधिकारियों की अक्षमता और ढीलेढालेपन के कारण हरियाणा में संगठन के ई.एस.आई. से जुड़े 200 सदस्यों द्वारा सामुहिक अवकाश लेने से इनकार। यूँ भी, जिलों में संगठन के प्रधान आमतौर पर जिलों के प्रशासनिक प्रमुख, सिविल सर्जन हैं।

सामुहिक अवकाश से निपटने के लिये 6 नवम्बर को फरीदाबाद में जिला प्रशासन ने आदेश दिया कि 8 और 9 नवम्बर को ई.एस.आई. चिकित्सक सरकारी जिला अस्पताल में भी ड्युटी दें। ई.एस.आई. प्रशासन ने डॉक्टरों की सूची बना दी। यह पता चलते ही फरीदाबाद में ई.एस.आई. के दोनों अस्पतालों और आठों डिस्पैन्सरियों के डॉक्टरों में आक्रोश। इस-उस कारण से सामुहिक अवकाश लेना अथवा नहीं लेना अपना निर्णय था लेकिन सरकारी अस्पताल के डॉक्टरों के विरुद्ध जा कर वहाँ ड्युटी करना स्वीकार नहीं। ''क्या करें?'' का प्रश्न। अगले दिन जनरल बॉडी मीटिंग करने की आम सहमति बनी।

7 नवम्बर को सरकारी अवकाश। दिल्ली में निवास वाले डॉक्टर भी जनरल बॉडी मीटिंग में पहुँचे। तीन घण्टे खुल कर विचार-विमर्श। किसी भी स्थिति में हड़ताल तोड़क की भूमिका नहीं निभायेंगे। सब को स्पष्ट था कि चाणचक्क वाली हड़ताल कानूनी हो ही नहीं सकती। और, सर्वसम्मति से 8 तथा 9 नवम्बर को सामुहिक अवकाश लेने का निर्णय।

8 नवम्बर को सुबह ई.एस.आई. डॉक्टर सरकारी जिला अस्पताल के प्रांगण में एकत्र हुये। ई.एस.आई. चिकित्सकों में से कुछ ने सरकारी जिला अस्पताल पहली बार देखा — ई.एस.आई. में अधिकतर डॉक्टर महिला हैं। सरकारी अस्पताल के डॉक्टरों में नई जान आई। लॉन में एकत्र चिकित्सकों के बीच दिन-भर चर्चायें हुई। हर एक ने अपने मन की बातें की। कोई रोक नहीं। कभी छोटे समूह में, कभी बड़े समूह में बातें की। कई डॉक्टर : ''ऐसे लग रहा है जैसे सिर से बहुत भारी बोझ उतर गया है।'' यही सब 9 नवम्बर को।

10 नवम्बर को सरकारी अवकाश था। ई.एस.आई. डॉक्टरों ने फिर जनरल बॉडी मीटिंग की। सहज वातावरण में चर्चायें। दो दिन की तनखा के नुकसान का कोई गम नहीं है क्योंकि इन दो दिन में जो पाया है उसकी वैल्यू इन चन्द हजार रुपयों से बहुत ज्यादा है। पहले दिन, 8 नवम्बर को ही राहत महसूस की थी — नतीजा निकले चाहे ना निकले, जो राहत मिली है वह अमूल्य है। अकेले होने के डर और खतरे से मुक्ति-सी मिली। यह जो जीवन चल रहा है उसमें हम अकेले-अकेले नहीं हैं। भविष्य के लिये आशा : हम साथ हो सकते हैं। कुछ नहीं कर सकते की लाचारी के पार जाना : हम कुछ तो कर ही सकते हैं। पुराना ढर्रा बहुत हो गया, नया कुछ करें। नया क्या ? यह पता नहीं है पर फिर भी...... तारतम्य बनाये रखने के लिये एक समिति बनाने की बात आई और नकार दी गई। तारतम्य के लिये, तालमेल के लिये वालन्टीयर बने। निर्णय जनरल बॉडी मीटिंग में ही होंगे का फैसला।■

सौरभ लेजर टाइपसैटर्स,
बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।
फोन नम्बर : 9306159411

आदान–प्रदान बनाम शास्त्रार्थ

प्रत्येक व्यक्ति व्यवहार में होती है।

जो है उसके किसी न किसी पहलू से हर व्यक्ति का हर समय वास्ता रहता है।

जो हैं वे भौतिक रूपों में हो सकती हैं; कौशल स्वरूपों में हो सकती हैं; विचारों के, धारणाओं के रूपों में हो सकती हैं; अथवा इनके अनेक मिश्रणों में हो सकती हैं।

जो हैं उनकी गतियाँ भिन्न हैं। उनमें होते परिवर्तनों की अवधि और गति भिन्न हैं। जो हैं वो (और जो थी तथा जिनके होने की सम्भावनायें हैं वो भी) एक-दूसरे को हर समय प्रभावित करती हैं।

स्पष्ट लगता है कि हम सब का वास्ता अत्यन्त जटिल और प्रत्येक क्षण परिवर्तन की स्थिति में जो हैं उन से रहता है। इसलिये यह भी लगता है कि हर एक के लिये हर समय आंकलन में चूकने की सम्भावना बहुत अधिक रहती है। मेरा-तेरा गलती करना, गलत होना स्वाभाविक लगता है।

ऐसे में हर व्यक्ति महत्वपूर्ण है। अधिक से अधिक लोगों के बीच बातचीतें, चर्चायें सर्वोपरि महत्व की लगती हैं। आज पृथ्वी पर फैले सात अरब मनुष्यों के बीच होते आदान-प्रदानों को बढाना प्रत्येक व्यक्ति के संगत रहने के लिये, अर्थपूर्ण जीवन के लिये एक प्राथमिक आवश्यकता लगती है।

जबकि शास्त्रार्थ में

हर व्यक्ति सामान्य तौर पर स्वयं को सही बताता है।

प्रत्येक अपने शास्त्र को सर्वोपरि कहती है।

शास्त्र की रचना ईश्वर-गॉड-अल्लाह ने की है कहने वाले हैं। अवतार, गॉड के पुत्र, नबी ने ईश्वरीय वाणी को शास्त्र-रूप में मानव प्रजाति को उसकी भलाई के लिये उपहार दिया है कहने वाले हैं।

शास्त्र की रचना महान मार्क्स ने, महान लेनिन ने, महान माओ ने, महान अम्बेडकर ने, महान..... ने की है कहने वाले हैं।

शास्त्रार्थ का सार : मैं-हम सही और तुम-वे गलत।

शास्त्रार्थ का परिणाम सामान्य तौर पर अनुयायी अथवा शत्रु होते हैं। मैं-हम-मेरे-हमारे-अपने-मित्र और वो-अन्य-दूसरे-पराये-शत्रु की रचना-पुष्टि शास्त्रार्थ का चाहा-अनचाहा परिणाम होता है। वर्तमान में आंकलनों पर होता शास्त्रार्थ ही बहुत अधिक कटुता लिये रहता है। विगत के शास्त्रों के आधार पर शास्त्रार्थ.....

शास्त्री बनना है, बने रहना है और शास्त्रार्थ करना है अथवा आदान-प्रदान बढाना है ? इनमें प्रत्येक चुन सकती है, हर एक चुन सकता है।